(१४८) अल्लाह उच्च स्वर के साथ अपवाद से प्रेम नहीं करता, परन्तु नृशंसित को इसकी अनुमति है[1] तथा अल्लाह सुनता जानता है।

لَا يُحِبُّ اللَّهُ الْجَهْرَ بِالسُّوٓءِ مِنَ الْقَوْلِ إِلَّا مَن ظُلِمَ ۚ وَكَانَ اللَّهُ سَمِيعًا عَلِيمًا ﴿١٤٨﴾

(१४९) यदि तुम कोई पुण्य कार्य स्पष्ट करके करो अथवा छिपाकर अथवा किसी बुराई को क्षमा करते हो,[2] निःसंदेह अल्लाह (तआला) क्षमाशील सर्वशक्तिमान है।

إِن تُبْدُوا خَيْرًا أَوْ تُخْفُوهُ أَوْ تَعْفُوا عَن سُوٓءٍ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ عَفُوًّا قَدِيرًا ﴿١٤٩﴾

---

[1]इस्लाम धर्म ने इस पर बल दिया है कि यदि किसी में बुराई देखो, तो उसकी चर्चा न करो बल्कि एकान्त में उसको समझा दो, यदि कोई धार्मिक हित हो। इसी प्रकार स्पष्ट रूप से सभी को दिखाकर बुराई करना अति अप्रिय है। एक तो बुराई का करना वैसे ही मना है चाहे वह पर्दे के भीतर क्यों न हो। दूसरे यह कि खुले रूप से की जाये यह एक और अधिक अपराध है। और इसके कारण इस बुराई का अपराध दुगुना, बल्कि दस गुना भी हो सकता है। कुरआन के उपरोक्त शब्द दोनों प्रकार की बुराई के प्रदर्शन से मना को सम्मिलित हैं। और उसी में यह भी सम्मिलित है कि किसी की की हुई अथवा न की हुई बुराई पर बुरा-भला कहा जाये। परन्तु इससे अलग यह है कि किसी अत्याचारी के अत्याचार को लोगों के समक्ष तुम प्रदर्शित कर सकते हो। उससे एक यह लाभ है कि संभवतः वह अत्याचार से रुक जाये अथवा उसकी क्षतिपूर्ति का प्रयास करे। दूसरा लाभ यह है कि लोग उससे बच कर रहें। हदीस में आता है कि एक व्यक्ति नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुआ और कहा कि मेरा पड़ोसी मुझे कष्ट देता है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "तुम अपना सामान निकाल कर मार्ग में रख दो।" उसने ऐसा ही किया। फिर जो भी गुजरता पूछता और वह अपने पड़ोसी के अत्याचार की चर्चा करता, यह सुनकर हर राही उसके पड़ोसी को धिक्कारता और बुरा-भला कहता। पड़ोसी ने यह देख कर क्षमा माँग लिया और भविष्य में ऐसा न करने का निश्चय कर लिया और उससे अपना सामान अन्दर रख लेने की प्रार्थना की। (सुनन अबू दाऊद किताबुल अदब)

[2]कोई व्यक्ति किसी के साथ अत्याचार अथवा त्रिस्कार करे तो उसको उसी सीमा तक प्रतिकार की आज्ञा इस्लाम धर्म ने दी है जिस सीमा तक उस पर अत्याचार हुआ है।

«الْمُسْتَبَّانِ مَا قَالَا، فَعَلَى الْبَادِىءِ، مَا لَمْ يَعْتَدِ الْمَظْلُومُ»

"गाली-गलोज आपस में करने वाले दो व्यक्ति जो कुछ कहें उसका पाप पहले करने वाले पर है (यदि) जिस पर अत्याचार किया गया (अर्थात जिसे पहले गाली

(१५०) जो लोग अल्लाह तथा उसके रसूलों (दूतों) के प्रति अविश्वास रखते हैं और चाहते हैं कि अल्लाह तथा उसके रसूलों (दूतों) के मध्य अलगाव करें तथा कहते हैं कि हम कुछ को मानते हैं और कुछ को नहीं मानते तथा इसके बीच रास्ता बनाना चाहते हैं।	اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْفُرُوْنَ بِاللّٰهِ وَ رُسُلِهٖ وَ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّفَرِّقُوْا بَيْنَ اللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَ يَقُوْلُوْنَ نُؤْمِنُ بِبَعْضٍ وَّ نَكْفُرُ بِبَعْضٍ ۙ وَّ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّتَّخِذُوْا بَيْنَ ذٰلِكَ سَبِيْلًا ۙ﴿۱۵۰﴾
(१५१) विश्वास करो, कि यह सभी लोग असली काफ़िर हैं।[1] और काफ़िरों के लिये हम ने अत्यधिक कठोर यातनायें तैयार कर रखी हैं।	اُولٰٓئِكَ هُمُ الْكٰفِرُوْنَ حَقًّا ۚ وَ اَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا ﴿۱۵۱﴾
(१५२) तथा जो अल्लाह और उसके रसूलों के प्रति विश्वास किये तथा उनमें से किसी के मध्य विभेद नहीं किये उन्हीं को अल्लाह उनका पूरा	وَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَ رُسُلِهٖ وَ لَمْ يُفَرِّقُوْا بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ اُولٰٓئِكَ سَوْفَ يُؤْتِيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ ؕ وَ كَانَ

दी गयी और उसने उत्तर में गाली दी) अधिकता न करे।" (सहीह मुस्लिम किताबुल विर्र वस्सिला वल अदब, हदीस संख्या ४५८७)

परन्तु बदला लेने की आज्ञा के साथ-साथ क्षमा करने को श्रेष्ठ कहा गया है क्योंकि अल्लाह तआला पूर्ण बदला लेने में सक्षम होने के उपरान्त क्षमा और माफ़ी से काम लेता है। इसलिए फ़रमाया :

﴿ وَجَزٰٓؤُا سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا ۚ فَمَنْ عَفَا وَاَصْلَحَ فَاَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ ﴾

"त्रिस्कार का बदला (प्रतिकार) उसके समतुल्य त्रिस्कार है परन्तु जो क्षमा कर दे और सुधार कर ले, तो उसका प्रत्युपकार अल्लाह के ऊपर है।" (*सूरः अल-शूरः-४०*)

और हदीस में भी है, क्षमा कर देने से अल्लाह तआला सम्मान ही बढ़ाता है। (सहीह मुस्लिम कितावुल विर्र वससिला वल अदब,)

[1]अहले किताब के विषय में पूर्व वर्णित हो चुका है कि वह कुछ नबियों को मानते और कुछ को नहीं मानते। जैसे यहूदी आदरणीय ईसा तथा परम आदरणीय मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नहीं मानते तथा ईसाई परम आदरणीय मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अस्वीकार करते जैसे अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि नबियों के मध्य अन्तर करने वाले पक्के अधर्मी हैं

اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿١٥٢﴾

प्रतिफल देगा[1] और अल्लाह क्षमाशील कृपानिधि है।

يَسْـَٔلُكَ اَهْلُ الْكِتٰبِ اَنْ تُنَزِّلَ عَلَيْهِمْ كِتٰبًا مِّنَ السَّمَآءِ فَقَدْ سَاَلُوْا مُوْسٰٓى اَكْبَرَ مِنْ ذٰلِكَ فَقَالُوْٓا اَرِنَا اللّٰهَ جَهْرَةً فَاَخَذَتْهُمُ الصّٰعِقَةُ بِظُلْمِهِمْ ۚ ثُمَّ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ فَعَفَوْنَا عَنْ ذٰلِكَ ۚ وَاٰتَيْنَا مُوْسٰى سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ﴿١٥٣﴾

(१५३) आप से अहले किताब यह प्रश्न करते हैं कि आप उन पर आसमान से कोई किताब उतारें[2] तो उन्होंने मूसा से इस से बड़ी माँग की थी और कहा कि हमें प्रत्यक्ष रूप से अल्लाह को दिखाओ फिर उन्हें बिजली ने घेर लिया उनके अत्याचार के कारण फिर उन्होंने स्पष्ट तर्कों के आ जाने के पश्चात बछड़े को (पूज्य) बना लिया और हमने उन्हें क्षमा कर दिया तथा मूसा (नबी) को खुला तर्क दिया।

وَرَفَعْنَا فَوْقَهُمُ الطُّوْرَ بِمِيْثَاقِهِمْ وَقُلْنَا لَهُمُ ادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَّقُلْنَا لَهُمْ لَا تَعْدُوْا فِى السَّبْتِ

(१५४) और उनसे वचन लेने के लिए तूर (पर्वत) हम उनके ऊपर ले आये और उन्हें आदेश दिया कि सजदः करते हुए द्वार में प्रवेश करो और यह भी आदेश किया कि शनिवार

---

[1]यह ईमानवालों के गुण बताये कि वह सभी नबियों पर ईमान रखते हैं। जिस प्रकार से मुसलमान। इस आयत से भी "सर्वधर्म संभाव" का खण्डन होता है, उस विचार वालों के निकट मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत पर ईमान लाना आवश्यक नहीं और वे उन ग़ैर मुसलमानों को भी मोक्ष प्राप्त करने वाला समझते हैं, जो अपनी कल्पना के अनुसार अल्लाह पर ईमान रखते हैं। परन्तु क़ुरआन की इस आयत ने स्पष्ट कर दिया कि अल्लाह पर ईमान के साथ-साथ मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत पर ईमान लाना भी आवश्यक है। यदि इस अन्तिम रिसालत पर ईमान न होगा, तो इस इंकार के साथ अल्लाह पर ईमान अमान्य तथा अस्वीकार्य है (देखिए *सूरः अल-बक़रः*- आयत ६२ की टिप्पणी)

[2]अर्थात जिस प्रकार आदरणीय मूसा अलैहिस्सलाम तूर पर्वत पर गये और तख़्तियों पर लिखी हुई तौरात लेकर आये, उसी प्रकार आप आकाश पर जाकर लिखा हुआ क़ुरआन मजीद लेकर आइये। यह माँग मात्र उपद्रव, इंकार करने तथा ईर्ष्या के आधार पर थी।

وَّاَخَذْنَا مِنْهُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ﴿١٥٤﴾

के दिन उल्लंघन न करना और हमने उनसे कठोर से कठोरतम वचन तथा स्वीकृत ली।

فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِّيْثَاقَهُمْ وَكُفْرِهِمْ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَقَتْلِهِمُ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ وَّقَوْلِهِمْ قُلُوْبُنَا غُلْفٌ ؕ بَلْ طَبَعَ اللّٰهُ عَلَيْهَا بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿١٥٥﴾

(१५५) ऐसा उनके वचन भंग करने तथा अल्लाह की आयतों के इंकार एवं अकारण रसूलों (ईशदूतों) की हत्या करने[1] तथा उनके इस कथन के कारण हुआ कि हमारे दिल ढँके हुये हैं (नहीं) अल्लाह ने उनके कुफ्र के कारण उनके दिलों पर मुहर लगा दी है, इसलिये यह थोड़े ही ईमान रखते हैं।

وَّبِكُفْرِهِمْ وَقَوْلِهِمْ عَلٰى مَرْيَمَ بُهْتَانًا عَظِيْمًا ﴿١٥٦﴾

(१५६) और उनके कुफ्र के कारण तथा मरियम पर घोर आरोप लगाने के कारण।[2]

وَّقَوْلِهِمْ اِنَّا قَتَلْنَا الْمَسِيْحَ عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ رَسُوْلَ اللّٰهِ ۚ وَمَا قَتَلُوْهُ وَمَا صَلَبُوْهُ وَلٰكِنْ شُبِّهَ لَهُمْ ؕ وَاِنَّ الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا

(१५७) और उनके यह कहने के कारण कि हमने मसीह, मरियम के पुत्र ईसा, अल्लाह के रसूल (दूत) की हत्या कर दी, हालाँकि न तो उन्हें वध किया न उन्हें फांसी दी[3] परन्तु उनके लिये सरूप बना दिया गया।[4] विश्वास

---

[1]लिप्त सूत्र इस प्रकार होगा ﴿فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِّيْثَاقَهُمْ لَعَنّٰهُمْ﴾ अर्थात हमने उनकी प्रतिज्ञा भंजन तथा अल्लाह तआला की आयतों के प्रति अविश्वास और नबियों की हत्या आदि के कारण से उन पर धिक्कार अथवा दंडित किया।

[2]इससे तात्पर्य युसूफ़ बढ़ई के साथ आदरणीय मरियम के कुकर्म का आरोप है। आज कल भी कुछ शोधकर्ता इस घोर पाप आरोप को एक "प्रमाणित तथ्य" सिद्ध करने पर तुले हुए हैं और कहते हैं कि यूसुफ़ बढ़ई (अल्लाह की शरण) आदरणीय ईसा के पिता थे। और इस प्रकार (आदरणीय) ईसा के बिना पिता के चमत्कारी जन्म का इंकार करते हैं।

[3]इससे स्पष्ट हुआ कि यहूदी आदरणीय ईसा की हत्या अथवा फाँसी देने में सफल नहीं हुए। जैसेकि *सूरः आले इमरान* की आयत संख्या ५५ की टिप्पणी में संक्षिप्त वर्णन आ चुका है।

[4]इसका अर्थ यह है कि जब आदरणीय ईसा को यहूदियों की योजना का पता चला तो उन्होंने अपने अनुयायियों को, जिनकी संख्या १२ अथवा १७ थी एकत्रित किया। और फ़रमाया कि तुममें से कौन मेरे स्थान पर बलि देने को तैयार है ? ताकि अल्लाह तआला

فِيْهِ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ ؕ مَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ اِلَّا اتِّبَاعَ الظَّنِّ ۚ وَمَا قَتَلُوْهُ يَقِيْنًا ۙ﴿١٥٧﴾

करो कि ईसा के विषय में मतभेद करने वाले उनके विषय में शंका में हैं। उन्हें इसका कोई विश्वास नहीं सिवाय अनुमानित बातों पर कार्य करने के।[1] इतना निश्चित है कि उन्होंने उनकी हत्या नहीं की।

بَلْ رَّفَعَهُ اللّٰهُ اِلَيْهِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿١٥٨﴾

(१५८) बल्कि अल्लाह (तआला) ने उन्हें अपनी ओर उठा लिया।[2] और अल्लाह बलपूर्वक

उसकी रूप-रेखा मेरी जैसी बना दे। एक नवयुवक इसके लिए तैयार हो गया। अतः आदरणीय ईसा अलैहिस्सलाम को वहाँ से आकाश पर उठा लिया गया, उसके पश्चात यहूदी आये और उन्होंने उस नवयुवक को फाँसी पर चढ़ा दिया, जिसे ईसा के समरूप वना दिया गया था। यहूदी यही समझते रहे कि हमने आदरणीय ईसा को फाँसी पर चढ़ा दिया। वास्तविकता यह है कि आदरणीय ईसा वहाँ उपस्थित ही नहीं थे, वह जीवित अपने शरीर के साथ आकाश पर उठाये जा चुके थे। (इब्ने कसीर तथा फ़तहुल क़दीर)

[1]आदरणीय ईसा के समरूप को फाँसी देने के पश्चात एक गुट यह कहता रहा कि आदरणीय ईसा की हत्या कर दी गयी, दूसरा गुट वह जिसे यह अनुमान हो गया था कि फाँसी पर चढ़ाया गया व्यक्ति आदरणीय ईसा नहीं हैं, कोई अन्य है, वह आदरणीय ईसा को फाँसी पर चढ़ाने और हत्या करने से इंकार करता रहा। कुछ कहते हैं कि उन्होंने आदरणीय ईसा को आकाश पर जाते भी देखा था। कुछ कहते हैं कि इस मतभेद का तात्पर्य वह मतभेद है जो स्वयं ईसाइयों के मध्य उत्पन्न हुआ। ईसाइयों के नस्तूरी गुट ने कहा कि ईसा अलैहिस्सलाम की शारीरिक रूप से फाँसी दे दी गयी परन्तु आत्मिक रूप से नहीं। मलकानिया गुट ने कहा कि यह हत्या अथवा फाँसी शारीरिक तथा आत्मिक दोनों के रूप से पूर्ण हो गयी। (फ़तहुल क़दीर) अतः वह मतभेद, असमंजस्य तथा शंका के शिकार रहे।

[2]यह तथ्य है कि अल्लाह तआला ने अपनी अनन्त सामर्थ्य से अदरणीय ईसा को जीवित आकाश पर उठा लिया और निरन्तर सहीह हदीस से भी इस बात की तर्क संगत पुष्टि होती है। यह हदीसें, हदीस की सभी पुस्तकों के अतिरिक्त सहीह बुख़ारी तथा सहीह मुस्लिम में लिखी हुईं हैं। इन हदीसों से आकाश पर उठा लिए जाने के अतिरिक्त क़ियामत से पूर्व उनके धरती पर उतरने तथा अन्य बातों का वर्णन है। इमाम इब्ने कसीर इन बातों का वर्णन करके अन्त में लिखते हैं यद्यपि यह हदीसें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से निरन्तर हैं। इनके कथाकार आदरणीय अबू हुरैरा, आदरणीय अब्दुल्लाह बिन मसऊद, उस्मान बिन अबुल ऑस, अबू ओमामः, नवास बिन

पूर्ण ज्ञानी है ।[1]

(१५९) अहले किताब में से कोई ऐसा न शेष बचेगा जो (आदरणीय) ईसा (अलैहिस्सलाम) की मृत्यु से पूर्व उन पर ईमान न लाये ।[2] और प्रलय

وَإِنْ مِّنْ أَهْلِ الْكِتٰبِ إِلَّا لَيُؤْمِنَنَّ بِهِۦ قَبْلَ مَوْتِهِۦ ۖ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكُونُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا ﴿١٥٩﴾

समआन, अब्दुल्लाह बिन अमर बिन अल-ऑस, मुज्जमआ बिन जरिया:, अवी सरिया: तथा हुज़ैफ़ा बिन उसीद (रज़ी अल्लाह अनहुम) हैं इन हदीसों में आपके उतरने के गुण तथा स्थान का वर्णन है। आप सीरिया देश की वर्तमान राजधानी दमिश्क़ में पूर्व मिनार: के पास उस समय उतरेंगे, जब फ़ज्र की नमाज़ की इक़ामत हो रही होगी। आप सूअर की हत्या करेंगे, क्रॉस तोड़ेंगे, दज्जाल का वध भी अपने हाथों करेंगे तथा याजूज व माजूज प्रकट होकर उपद्रव भी आप के युग में करेंगे तथा अन्ततः उनका विनाश भी आप ही के शाप से होगा।

[1]वह शक्तिशाली तथा प्रभुत्व वाला है और उसके विचार तथा इच्छा को कोई टाल नहीं सकता, और जो उसकी शरण में आ जाये, उसे कोई हानि नहीं पहुँचा सकता। और वह ज्ञानी भी है, वह जो भी निर्णय करता है, वह निति व सिद्धान्त पर आधारित होते हैं।

[2] قبـــل موتـــه में هـــ सर्वनाम कुछ व्याख्याकारों के निकट अहले किताब (ईसाईयों) की तरफ फिरता है। और अर्थ यह कि प्रत्येक ईसाई मृत्यु के समय आदरणीय ईसा पर ईमान तो लाता है। यद्यपि मृत्यु के पहले ईमान का समय लाभकारी नहीं। परन्तु पूर्वजों (सहाबा) या अधिकतर व्याख्याकारों के निकट आदरणीय ईसा की तरफ फिरता है और अर्थ यह है कि जब उनका पुनः संसार में आना होगा और वह दज्जाल का वध करके इस्लाम धर्म का प्रभाव क्षेत्र बढ़ायेंगे, तो उस समय जितने भी यहूदी और ईसाई होंगे उनका भी वध करेंगे। और इस धरती पर मुसलमानों के अतिरिक्त कोई शेष न बचेगा। इस प्रकार दुनिया में जितने भी अहले किताब आदरणीय ईसा अलैहिस्सलाम पर ईमान लाने वाले हैं, वह आदरणीय ईसा की मृत्यु के पूर्व ही उन पर ईमान लाकर गुजर चुकेंगे। चाहे उनका ईमान किसी भी ढंग का हो। हदीस सहीह से भी यही सिद्ध है। अतः नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "सौगन्ध है उस शक्ति की जिसके हाथ में मेरा प्राण है, अवश्य एक समय आयेगा कि तुममें इब्ने मरियम अधिपत्य तथा न्यायिक बन कर उतरेंगे वह क्रॉस को तोड़ेंगे, सूअर का वध करेंगे, रक्षा कर समाप्त कर देंगे, और माल की इतनी अधिकता हो जायेगी कि कोई उसका लेने वाला न होगा (अर्थात दान लेने वाला कोई न होगा) यहाँ तक कि एक सजदः दुनिया तथा उसके ऐश्वर्य से श्रेष्ठ होगा। फिर आदरणीय अबुहुरैरा (رضي الله عنه) फ़रमाते हैं यदि तुम चाहो तो क़ुरआन करीम की यह आयत पढ़ लो। ﴿وَإِن مِّنْ أَهْلِ الْكِتَٰبِ إِلَّا لَيُؤْمِنَنَّ بِهِۦ قَبْلَ مَوْتِهِۦ﴾ (सहीह बुखारी

के दिन वह उन पर साक्षी होंगे ।[1]

(१६०) यहूदियों के अत्याचार के कारण हम ने उन पर वैध पदार्थ निषेध कर दिये तथा उनके अल्लाह के मार्ग से अधिक (लोगों) को रोकने के कारण ।[2]

فَبِظُلْمٍ مِّنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ طَيِّبٰتٍ اُحِلَّتْ لَهُمْ وَبِصَدِّهِمْ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ كَثِيْرًا ۝١٦٠

(१६१) और उनके ब्याज लेने के कारण जिससे उन्हें रोक दिया गया था। तथा लोगों का धन अहित से लेने हेतु, और हमने उनमें से काफ़िरों के लिये दु:खद यातना तैयार की है।

وَّاَخْذِهِمُ الرِّبٰوا وَقَدْ نُهُوْا عَنْهُ وَاَكْلِهِمْ اَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ ۭ وَاَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ مِنْهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۝١٦١

(१६२) परन्तु उनमें जो दक्ष तथा प्रयज्ञ हैं[3] और ईमानवाले हैं, जो उस पर ईमान लाते हैं, जो आपकी ओर उतारा गया, और जो आप से

لٰكِنِ الرّٰسِخُوْنَ فِي الْعِلْمِ مِنْهُمْ وَالْمُؤْمِنُوْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ

किताबुल अम्बिया)। यह हदीस इतनी अधिकता से आयी है कि इसे निरन्तर की श्रेणी प्राप्त है और इन्हीं निरन्तर हदीसों के आधार पर अहले सुन्नत के सभी सम्प्रदाय का सर्वमान्य विश्वास है कि आदरणीय ईसा आकाश पर जीवित हैं और प्रलय के निकट वह दुनिया में आयेंगे और दज्जाल तथा अन्य सभी धर्मों को समाप्त करेंगे और इस्लाम धर्म को प्रभावशाली बनायेंगे। याजूज व माजूज का निकलना भी आदरणीय ईसा की उपस्थिति में ही होगा और आदरणीय ईसा की प्रार्थना के प्रभाव से ही इस अशान्ति की भी समाप्ति होगी। जैसाकि हदीस से स्पष्ट है।

[1]यह गवाही अपनी पहले के जीवन तक की अवस्था के विषय में होगी, जैसाकि सूर: *अल-मायद:* के अन्त में स्पष्टतम रूप से है।

﴿ وَكُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِيْدًا مَّا دُمْتُ فِيْهِمْ ﴾

"मैं जब तक उनमें उपस्थिति रहा, उनके विषय में जानता रहा।"

[2]अर्थात उनके अपराधों तथा कुकर्मों के कारण दंड स्वरूप बहुत-सी अवर्जित वस्तु उन पर वर्जित कर दी थीं। (जिनकी प्रधानता *सूर:अल-अनआम*-१४६ में है)

[3]इनसे तात्पर्य आदरणीय अब्दुल्लाह बिन सलाम आदि हैं, जो यहूदियों में से मुसलमान हुए थे।

وَالْمُقِيمِينَ الصَّلٰوةَ وَالْمُؤْتُونَ الزَّكٰوةَ وَالْمُؤْمِنُونَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِؕ اُولٰٓئِكَ سَنُؤْتِيْهِمْ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿۱۶۲﴾

पूर्व उतारा गया और नमाज़ को स्थापित करने वाले हैं ।[1] और ज़कात को अदा करने वाले हैं ।[2] और अल्लाह पर तथा क़ियामत के दिन पर ईमान रखने वाले हैं ।[3] यह वह हैं जिन्हें हम बहुत बड़ा प्रतिकार प्रदान करेंगे ।

اِنَّآ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ كَمَآ اَوْحَيْنَآ اِلٰى نُوْحٍ وَّالنَّبِيّٖنَ مِنْۢ بَعْدِهٖۚ وَاَوْحَيْنَآ اِلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطِ وَعِيْسٰى وَاَيُّوْبَ وَيُوْنُسَ وَهٰرُوْنَ وَسُلَيْمٰنَۚ وَاٰتَيْنَا دَاوٗدَ زَبُوْرًا ﴿۱۶۳﴾

(१६३) नि:सन्देह हमने आपकी ओर उसी प्रकार प्रकाशनायें (वह्यी) की हैं, जैसे कि नूह (अलैहिस्सलाम) और उनके पश्चात के नबियों की ओर हमने प्रकाशना (वह्यी) की, तथा इब्राहीम और इस्माईल और इसहाक़ तथा याक़ूब एवं उनकी सन्तानों पर तथा ईसा और अय्यूब तथा यूनुस एवं हारून तथा सुलैमान की ओर ।[4] और हमने दाऊद (अलैहिस्सलाम) को ज़बूर प्रदान की ।

---

[1]इनसे तात्पर्य भी वही ईमानवाले हैं जो अहले किताब से मुसलमान हुए अथवा फिर मुहाजिरीन (मक्का शहर छोड़कर आये हुए मुसलमान) तथा अंसार (मदीने के निवासी मुसलमान) से तात्पर्य हैं । अर्थात इस्लामी नियम के दृढ़ ज्ञान रखने वाले और उत्तम ईमान से अलंकृत होने वाले लोग उन कुकर्मों के करने से बचते हैं, जिन्हें अल्लाह तआला अप्रिय समझता है ।

[2]इसका प्रयोजन धन का दान अथवा प्राण का दान अर्थात अपने आचरण एवं स्वभाव को पवित्र तथा स्वच्छ करना है अथवा दोनों अभिप्रेत हैं ।

[3]अर्थात इस पर विश्वास रखते हैं कि अल्लाह के सिवाय कोई पूज्य नहीं तथा मौत के पश्चात पुनर्जीवित होने एवं कर्मानुसार प्रतिफल मिलने पर विश्वास रखते हैं ।

[4]आदरणीय इब्ने अब्बास (رضي الله عنهما) से उदधृत है कि कुछ लोगों ने कहा कि आदरणीय मूसा के पश्चात अल्लाह तआला ने किसी पर कुछ नहीं उतारा और इस प्रकार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत को अस्वीकार किया, जिस पर यह आयत उतरी । (इब्ने कसीर) जिसमें उपरोक्त कथन का खंडन करते हुए मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की रिसालत को प्रमाणित किया गया है ।

وَرُسُلًا قَدْ قَصَصْنٰهُمْ عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ وَرُسُلًا لَّمْ نَقْصُصْهُمْ عَلَيْكَ ۭ وَكَلَّمَ اللّٰهُ مُوْسٰى تَكْلِيْمًا ﴿١٦٤﴾

(१६४) और आप से पूर्व के बहुत से रसूलों की घटनायें हमने आप से वर्णन की हैं ।[1] और बहुत से रसूलों की नहीं भी कीं हैं[2] और मूसा से अल्लाह ने सीधे बात की ।[3]

رُسُلًا مُّبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ لِئَلَّا يَكُوْنَ لِلنَّاسِ عَلَى اللّٰهِ حُجَّةٌ

(१६५) (हमने इन्हें) शुभसूचक एवं सचेतकर्ता रसूल बनाया ।[4] ताकि लोगों को कोई बहाना तथा अभियोग रसूलों को भेजने के पश्चात

---

[1]जिन रसूलों के नाम तथा उनकी घटनायें क़ुरआन में वर्णन की गयीं हैं, उनकी संख्या २५ है । (१) आदम (२) इदरीस (३) नूह (४) हूद (५) स्वालेह (६) इब्राहीम (७) लूत (८) इस्माईल (९) इसहाक़ (१०) याक़ूब (११) यूसुफ़ (१२) अय्यूब (१३) शुऐब (१४) मूसा (१५) हारून (१६) यूनुस (१७) दाऊद (१८) सुलैमान (१९) इलियास (२०) अल-यसअ (२१) ज़करिया (२२) यहिया (२३) ईसा (२४) ज़ुलकिफ़ल अधिकतर व्याख्याकारों के निकट (२५) आदरणीय मोहम्मद सलवातुल्लाह व सलामुहू अलैहि व अलैहिम अजमईन ।

[2]जिन नबियों और रसूलों के नाम तथा घटनायें क़ुरआन में वर्णन नहीं हैं, उनकी संख्या कितनी है ? अल्लाह तआला ही भली प्रकार से जानता है । एक हदीस में जो बहुत प्रसिद्ध है एक लाख चौबीस हज़ार तथा एक हदीस में आठ हज़ार बतायी गयी है । लेकिन यह कथन अत्यधिक कमज़ोर हैं क़ुरआन और हदीस से सिर्फ़ यही ज्ञात होता है कि विभिन्न समय तथा अवस्थाओं में शुभ सूचना देने वाले तथा सतर्क करने वाले (नबी) आते रहे हैं । अन्ततः यह नबूवत का क्रम आदरणीय मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर समाप्त हो गया । आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पहले कितने नबी आये उनकी उचित संख्या का ज्ञान सिर्फ़ अल्लाह को है । आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पश्चात जितने भी लोग नबूअत का दावा करें वह दज्जाल तथा झूठे हैं और उन पर ईमान लाने वाले इस्लाम से बाहर हैं । और मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत से अलग एक प्रतिकूल समुदाय हैं । जैसे-बहाई, बाबिया तथा मिर्जाई समुदाय ।

[3]यह मूसा अलैहिस्सलाम का विशेष गुण है, जिसमें वह दूसरे नबियों से श्रेष्ठ हैं । सहीह इब्ने हिब्बान में एक कथन के आधार पर इमाम इब्ने कसीर ने इस वार्तालाप की विशेषता में आदरणीय आदम तथा आदरणीय मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सम्मिलित माना है । तफ़सीर इब्ने कसीर व्याख्या आयत ﴿ تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ﴾

[4]ईमानवालों को स्वर्ग के सुख की शुभ सूचना देना तथा काफ़िरों को नरक की कठोर यातना से डराना ।

بَعْدَ الرُّسُلِ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ﴿١٦٥﴾

अल्लाह (तआला) पर न रह जाये।[1] और अल्लाह (तआला) बड़ा बलपूर्वक तथा बड़ा पूर्णज्ञानी है।

لَّٰكِنِ اللَّهُ يَشْهَدُ بِمَا أَنزَلَ إِلَيْكَ ۖ أَنزَلَهُ بِعِلْمِهِ ۖ وَالْمَلَائِكَةُ يَشْهَدُونَ ۚ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا ﴿١٦٦﴾

(१६६) जो कुछ आपकी ओर उतारा है, उस विषय में अल्लाह तआला स्वयं साक्षी है कि उसे अपने ज्ञान से उतारा है, और फ़रिश्ते भी गवाही देते हैं और अल्लाह (तआला) का साक्ष्या बस है।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَن سَبِيلِ اللَّهِ قَدْ ضَلُّوا ضَلَالًا بَعِيدًا ﴿١٦٧﴾

(१६७) नि:संदेह जिन्होंने कुफ़्र किया तथा अल्लाह के मार्ग (धर्म) से रोका वह बहुत दूर भटक गये।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَظَلَمُوا لَمْ يَكُنِ اللَّهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ طَرِيقًا ﴿١٦٨﴾

(१६८) वस्तुत: जिन्होंने कुफ़्र किया तथा अत्याचार कर लिये अल्लाह उन्हें क्षमा नहीं करेगा न उन्हें किसी मार्ग का दर्शन करायेगा।[2]

إِلَّا طَرِيقَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۚ وَكَانَ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ﴿١٦٩﴾

(१६९)परन्तु नरक का मार्ग, जिस में वह सदा निवास करेंगे तथा यह अल्लाह पर सरल है।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمُ

(१७०) हे मानवगण, तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की ओर से सत्य लेकर रसूल

---

[1]अर्थात नबूवत अथवा सावधान करने तथा शुभ सूचना देने का यह क्रम हमने इस लिए स्थापित किया कि किसी के पास यह तर्क शेष न रहे कि हमें तो तेरा संदेश पहुँचा ही नहीं। जिस प्रकार अन्य स्थान पर फ़रमाया :

﴿ وَلَوْ أَنَّا أَهْلَكْنَاهُم بِعَذَابٍ مِّن قَبْلِهِ لَقَالُوا رَبَّنَا لَوْلَا أَرْسَلْتَ إِلَيْنَا رَسُولًا فَنَتَّبِعَ آيَاتِكَ مِن قَبْلِ أَن نَّذِلَّ وَنَخْزَىٰ ﴾

"यदि हम उनको पैग़म्बर के (भेजने से) पूर्व ही मार देते तो वह कहते कि ऐ हमारे प्रभु ! तूने हमारी ओर कोई रसूल क्यों नहीं भेजा कि हम अपमानित तथा लज्जित होने से पूर्व ही तेरी आयतों का अनुकरण कर लेते।" (*सूर: ताहा*-१३४)

[2]क्योंकि निरन्तर अधर्म तथा अत्याचार करके उन्होंने अपने दिलों को काला कर लिया है, जिससे अब उनके मार्गदर्शन तथा मोक्ष की कोई आशा की किरण नहीं दिखायी देती।

الرَّسُوْلُ بِالْحَقِّ مِنْ رَّبِّكُمْ فَاٰمِنُوْا خَيْرًا لَّكُمْ ۭ وَاِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿١٧٠﴾	(मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) आ गये उनके प्रति विश्वास करो तुम्हारे लिये उत्तम है और यदि तुमने नकार दिया तो आकाशों एवं पृथ्वी में जो भी है अल्लाह का है।[1] तथा अल्लाह ज्ञानी पूर्ण परिचित है।
يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لَا تَغْلُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ وَلَا تَقُوْلُوْا عَلَي اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ ۭ	(१७१) हे अहले किताब अपने धर्म में अतिश्योक्ति न करो[2] तथा अल्लाह के ऊपर

---

[1]अर्थात तुम्हारे अविश्वास से अल्लाह का क्या बिगड़ेगा जैसे आदरणीय मूसा ने अपनी जाति से कहा था।

﴿ إِن تَكْفُرُوٓا۟ أَنتُمْ وَمَن فِى ٱلْأَرْضِ جَمِيعًا فَإِنَّ ٱللَّهَ لَغَنِىٌّ حَمِيدٌ ﴾

"यदि तुम तथा जगतवासी सभी कृतघ्नता करें (तो वे अल्लाह का क्या बिगाड़ लेगें) अल्लाह निस्पृह प्रशस्त है।" (*सूर: इब्राहीम-८*)

तथा हदीस क़ुदसी में है। अल्लाह कहता है कि मेरे भक्तों ! यदि तुम्हारे प्रथम एवं अन्तिम तथा सभी मानव एवं दानव उस एक पुरुष के हृदय के समान हो जायें जो तुममें सबसे संयमी है तो इससे मेरे राज्य में अधिकता न होगी। तथा यदि तुम्हारे पूर्व एवं अन्तिम मानव तथा दानव उस एक पुरुष के हृदय के समान हो जायें जो तुम में सर्वाधिक अवज्ञ है तो इससे मेरे राज्य में कोई कमी नहीं होगी। हे मेरे भक्तों ! तुम सभी एक भूमि में एकत्र हो जाओ तथा मुझसे प्रश्न करो तथा मैं प्रत्येक पुरुष को उसके प्रश्नानुसार दूँ तो उससे मेरे कोष में इतनी ही क़मी होगी जितनी सूई को समुद्र में डुबा कर निकालने से समुद्र जल में होती है (सहीह मुस्लिम, किताबुल बिर्र)

[2] غلو का अर्थ अतिश्योक्ति (किसी चीज़ को बढ़ा-चढ़ा कर वर्णन करना) है। जैसे ईसाईयों ने आदरणीय ईसा तथा उनकी माता के विषय में किया कि उनको रिसालत तथा वन्दगी के स्थान से उठा कर पूज्य के पद पर आसीन कर दिया। और उनकी अल्लाह की तरह पूजा करने लगे। इसी प्रकार आदरणीय ईसा के अनुयायियों को भी अतिश्योक्ति का प्रदर्शन करके उन्हें निर्दोष (प्राकृतिक निष्पाप) बनाकर उन्हें निषेध अथवा वैध बनाने का अधिकार दे दिया। जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿ ٱتَّخَذُوٓا۟ أَحْبَارَهُمْ وَرُهْبَٰنَهُمْ أَرْبَابًا مِّن دُونِ ٱللَّهِ ﴾

"उन्होंने अपने ज्ञानियों तथा महात्माओं को अल्लाह के अतिरिक्त अराध्य बना लिया।" (*सूर: अल-तौबा-३१*)

सत्य ही बोलो, वस्तुत: मरियम के पुत्र ईसा मसीह मात्र अल्लाह के दूत एवं शब्द हैं[1] जिसे मरियम की तरफ डाल दिया तथा उसकी ओर	إِنَّمَا الْمَسِيحُ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ رَسُولُ اللَّهِ وَكَلِمَتُهُ أَلْقَاهَا إِلَىٰ مَرْيَمَ وَرُوحٌ مِّنْهُ ۖ فَآمِنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ ۖ

यह अराध्य बनाना हदीस के अनुसार उनके मान्य किये हुये को उचित तथा वर्जित किये हुये को निषेध समझना था। जबकि वास्तव में यह अधिकार मात्र अल्लाह को है परन्तु अहले किताब ने यह अधिकार अपने ज्ञानियों आदि को दे दिया। अल्लाह तआला ने इस आयतों में अहले किताब को धर्म में इसी अतिश्योक्ति से मना किया है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी ईसाईयों के इस अतिश्योक्ति को देखते हुये अपने विषय में अपने अनुयायियों को सचेत किया।

«لاَ تُطْرُونِي كَمَا أَطْرَتِ النَّصَارَىٰ عِيسَى ابنَ مَرْيَمَ ؛ فَإِنَّمَا أَنَا عَبْدُهُ، فَقُولُوا: عَبْدُاللهِ وَرَسُولُه».

"तुम मुझे उस प्रकार सीमा से अधिक न बढ़ाना जिस प्रकार ईसाईयों ने ईसा पुत्र मरियम को बढ़ाया है, मैं तो केवल अल्लाह का भक्त हूँ, बस तुम मुझे उसका भक्त और रसूल ही कहना।" (सहीह बुख़ारी किताबुल अम्बिया, मुसनद अहमद, भाग १ पृष्ठ २३, तथा देखिये मुसनद अहमद भाग १ पृष्ठ १५३)

परन्तु अफ़सोस है कि मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत भी इसके उपरान्त इस अतिश्योक्ति से सुरक्षित न रह सकी जिसमें ईसाई लीन हुए और मुसलमान भी अपने पैग़म्बर अपितु पुनीत भक्तों तक को ईश्वरीय गुणों से युक्त कर दिया, जो वास्तव में ईसाईयों का आचरण था। इसी प्रकार विद्वानों और धर्मशास्त्रियों (इस्लामी शोध कर्ताओं) को भी धर्म का भाष्यकार मानने के अतिरिक्त उनको धार्मिक नियमों को बनाने का अधिकार दे दिया है। (فَإِنَّا لله وَإِنَّا إِلَيهِ رَاجِعُونَ). सत्य कहा था नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने।

«لَتَتَّبِعُنَّ سُنَنَ مَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ حَذْوَا النَّعْلِ بِالنَّعْلِ».

"जिस प्रकार से एक जूता दूसरे जूते के बराबर होता है, बिल्कुल उसी प्रकार तुम विगत उम्मतों का अनुगमन करोगे।"

[1]अल्लाह के शब्द का अर्थ यह है कि शब्द كُن (हो जा) से पिता के बिना उनकी उत्पत्ति हुई। और यह शब्द आदरणीय जिब्रील के द्वारा आदरणीय मरियम तक पहुँचाया गया। अल्लाह की आत्मा का अर्थ वह फूंक है, जो आदरणीय जिब्रील ने अल्लाह के आदेश से आदरणीय मरियम के गरेबान में फूंका, जिसे अल्लाह तआला ने पिता के वीर्य के स्थान पर बना दिया। इस प्रकार ईसा अल्लाह के शब्द भी हैं जो फरिश्ते ने आदरणीय मरियम की ओर डाला और उसकी वह आत्मा हैं जिसे लेकर जिब्रील मरियम की ओर भेजे गये। (तफ़सीर इब्ने कसीर)

وَلَا تَقُولُوا ثَلٰثَةٌ ؕ اِنْتَهُوا خَيْرًا لَّكُمْ ؕ اِنَّمَا اللّٰهُ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ؕ سُبْحٰنَهٗٓ اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗ وَلَدٌ ۘ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿١٧١﴾

से आत्मा हैं अत: अल्लाह तथा उसके रसूलों के प्रति विश्वास करो तथा न कहो कि अल्लाह तीन हैं,[1] रुक जाओ यह तुम्हारे लिये भला है। वस्तुत: तुम्हारा पूज्य मात्र एक अल्लाह है। वह पवित्र है कि उसकी कोई संतान हो उसी के अधिपत्य में है जो आकाशों एवं पृथ्वी में है तथा अल्लाह काम बनाने के लिये पर्याप्त है।

لَنْ يَّسْتَنْكِفَ الْمَسِيْحُ اَنْ يَّكُوْنَ عَبْدًا لِّلّٰهِ وَلَا الْمَلٰٓئِكَةُ الْمُقَرَّبُوْنَ ؕ وَمَنْ يَّسْتَنْكِفْ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَيَسْتَكْبِرْ فَسَيَحْشُرُهُمْ اِلَيْهِ جَمِيْعًا ﴿١٧٢﴾

(१७२) मसीह अल्लाह के दास होने से कदापि घृणा नहीं करते और न निकटवर्ती फ़रिश्ते।[2] और जो अल्लाह की इबादत से घृणा तथा अभिमान करेगा। वह उन सभी को अपनी ओर एकत्रित करेगा।

فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُوَفِّيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ وَيَزِيْدُهُمْ مِّنْ

(१७३) परन्तु जो ईमान लाये एवं सत्कर्म किये उन्हें उनका पूरा प्रतिफल देगा तथा अपनी अनुकम्पा से और भी अधिक देगा[3]

---

[1]ईसाईयों के कई गुट हैं। कुछ आदरणीय ईसा को अल्लाह, कुछ अल्लाह के साझी और कुछ अल्लाह का पुत्र मानते हैं। फिर जो अल्लाह मानते हैं वह त्रिमूर्ति (तीन भगवान) के तथा आदरणीय ईसा को तीन में से एक होने पर विश्वास करते हैं। अल्लाह तआला फ़रमा रहा है कि तीन भगवान कहने से रुक जाओ, अल्लाह तआला मात्र एक है।

[2]आदरणीय ईसा की भाँति कुछ लोगों ने फ़रिश्तों को भी अल्लाह का साझी बना रखा था। अल्लाह तआला फ़रमा रहा है कि यह सबके सब अल्लाह के भक्त हैं, और इससे उन्हें कदापि कोई इंकार नहीं है। तुम उनको अल्लाह अथवा उसकी अराध्यता में किस आधार पर मिश्रित करते हो।

[3]कुछ ने इस 'अधिक' से तात्पर्य यह लिया है कि अल्लाह तआला ईमानवालों को शफ़ाअत (अभिस्ताव) की अनुमति प्रदान करेगा, इस शफ़ाअत (अनुशंसा) की अनुमति पाकर जिनके लिए अल्लाह चाहेगा शफ़ाअत करेंगे।

किन्तु जो घृणा किये तथा घमन्ड किये[1] उन्हें दु:खद यातना देगा [2] तथा वे अल्लाह के सिवाय अपने लिए कोई संरक्षक और सहायक नहीं पायेंगे।

فَضۡلِهِۦۖ وَأَمَّا ٱلَّذِينَ ٱسۡتَنكَفُواْ
وَٱسۡتَكۡبَرُواْ فَيُعَذِّبُهُمۡ عَذَابًا أَلِيمٗا
وَلَا يَجِدُونَ لَهُم مِّن دُونِ ٱللَّهِ
وَلِيّٗا وَلَا نَصِيرٗا ١٧٣

(१७४) हे मानव गण ! तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की ओर से तर्क आ चुका है[3] तथा हमने तुम्हारी ओर ज्वलंत प्रकाश (पवित्र क़ुरआन) उतार दिया है।[4]

يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ قَدۡ جَآءَكُم بُرۡهَٰنٞ
مِّن رَّبِّكُمۡ وَأَنزَلۡنَآ إِلَيۡكُمۡ نُورٗا
مُّبِينٗا ١٧٤

(१७५) फिर जो लोग अल्लाह के प्रति विश्वास कर लिये और उसे दृढ़ता से पकड़ लिये उन्हें अपनी कृपा एवं अनुकम्पा में प्रवेशित करेगा तथा उन्हें अपने ओर का सत्यमार्ग दर्शायेगा।

فَأَمَّا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ بِٱللَّهِ وَٱعۡتَصَمُواْ
بِهِۦ فَسَيُدۡخِلُهُمۡ فِي رَحۡمَةٖ مِّنۡهُ
وَفَضۡلٖ وَيَهۡدِيهِمۡ إِلَيۡهِ صِرَٰطٗا
مُّسۡتَقِيمٗا ١٧٥

(१७६) वे आप से प्रश्न करते हैं। आप कह दें तुम्हें अल्लाह कलाल: के विषय में निर्देश

يَسۡتَفۡتُونَكَ قُلِ ٱللَّهُ يُفۡتِيكُمۡ فِي
ٱلۡكَلَٰلَةِۚ إِنِ ٱمۡرُؤٌاْ هَلَكَ لَيۡسَ

---

[1]अर्थात अल्लाह की आराधना व आज्ञा पालन से रुके रहे और इससे इंकार तथा अहंकार करते रहे।

[2]इस प्रकार अन्य स्थान पर फ़रमाया :

﴿ إِنَّ ٱلَّذِينَ يَسۡتَكۡبِرُونَ عَنۡ عِبَادَتِي سَيَدۡخُلُونَ جَهَنَّمَ دَاخِرِينَ ﴾

"नि:सन्देह जो लोग मेरी वन्दना से इंकार तथा घमंड करते हैं, अवश्य अपमानित तथा लज्जित होकर नरक में प्रवेश करेंगे।" (सूर: *अल-मोमिन*-६०)

[3]बुरहान, का अर्थ है ऐसा अकाट्य तर्क, जिसके पश्चात किसी को बहाने का कोई अवसर न रहे, ऐसी युक्ति जिससे हर प्रकार की शंकायें समाप्त हो जायें, इसीलिए इसे आगे प्रकाश ज्योति कहा गया है।

[4]इससे तात्पर्य पवित्र क़ुरआन है जो अविश्वास तथा मिश्रण के अंधकार में प्रकाश है। अपमान की पगडंडियों पर सीधा मार्ग तथा अल्लाह तआला की सशक्त रस्सी है अत: इसके अनुसार विश्वास वाले अल्लाह की दया एवं कृपा के पात्र होंगे।

لَهٗ وَلَدٌ وَّلَهٗٓ اُخْتٌ فَلَهَا نِصْفُ مَا تَرَكَ ۚ وَهُوَ يَرِثُهَآ اِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهَا وَلَدٌ ۚ فَاِنْ كَانَتَا اثْنَتَيْنِ فَلَهُمَا الثُّلُثٰنِ مِمَّا تَرَكَ ۚ وَاِنْ كَانُوْٓا اِخْوَةً رِّجَالًا وَّنِسَآءً فَلِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْاُنْثَيَيْنِ ۚ

करता है[1] कि यदि किसी पुरुष की मौत हो जाये तथा उसके उत्तराधिकारी में कोई संतान न हो और उसकी एक बहन हो तो उसके लिये छोड़े हुए (धन) का आधा है तथा वह उस (बहन) का उत्तराधिकारी है यदि उसके कोई संतान न हो,[2] यदि दो बहनें हों तो दोनों के लिये दो तिहाई है उसमें से जिसे

---

[1]कलाल: के विषय में पहले वर्णन हो चुका है कि उस मृत को कहते हैं, जिनका न पिता हो और न पुत्र। यहाँ पुन: उसके उत्तराधिकार की चर्चा हो रही है। कुछ लोगों ने कलाल: उस व्यक्ति को कहा है, जिसका केवल पुत्र न हो अर्थात पिता जीवित हो, परन्तु यह सही नहीं है। कलाल: की प्रथम परिभाषा ही ठीक है क्योंकि पिता की उपस्थिति में बहन उत्तराधिकारी नहीं होती है। पिता उसके विषय में बाधक बन जाता है। परन्तु यहाँ अल्लाह तआला फ़रमा रहा है कि यदि उसकी एक बहन हो तो वह उसके आधे धन की उत्तराधिकारी होगी, इससे यह संकेत मिलता है कि कलाल: वह व्यक्ति है, जिसकी मृत्यु के समय पुत्र के साथ-साथ पिता भी न हो। इस प्रकार पिता की अनुपस्थिति सांकेतिक से सिद्ध है।

टिप्पणी : पुत्र से तात्पर्य पुत्र तथा पौत्र दोनों हैं। इसी प्रकार बहन से तात्पर्य सगी बहन तथा सौतेली बहन (पिता की ओर से) है। (ऐसरुत्तफ़ासीर) हदीसों से सिद्ध होता है कि बहन के साथ-साथ पुत्री की उपस्थिति में बहन को आधा और पुत्री को आधा तथा पौत्री के उपस्थिति में पुत्री को आधा पौत्री को छठाँ भाग तथा बहन को शेष अर्थात एक तिहाई दिया गया। (फ़तहुल क़दीर तथा इब्ने कसीर) इससे ज्ञात हुआ कि मृतक की संतान हो तो बहन को एक भागीदार के रूप में कुछ नहीं मिलेगा। यदि वह संतान पुत्र हो तो किसी प्रकार से कुछ नहीं मिलेगा। और यदि पुत्री हुई तो बहन अस्बा बनकर साझीदार हो जायेगी। और शेष ले लेगी। यह शेष एक पुत्री की उपस्थिति में आधा तथा एक से अधिक की उपस्थिति में एक तिहाई होगा। (अस्बा वह होता है जिसका भाग निर्धारित न हो किन्तु जिनका भाग निर्धारित है उनसे जो शेष बच जाये, उसे पा जाये तथा उनके न होने पर पूरे धन का अधिकारी बन जाये)

[2]इसी प्रकार पिता भी न हो। इसलिए कि पिता भाई की अपेक्षा निकट है। पिता की उपस्थिति में भाई उत्तराधिकारी नहीं होता। यदि उस कलाल: स्त्री के पति अथवा कोई माता से जन्म लिया भाई होगा, तो उनका भाग निकालने के पश्चात, शेष माल का उत्तराधिकारी भाई होगा। (इब्ने कसीर)

يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ أَنْ تَضِلُّوا ۗ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ

वह छोड़ गया[1] और यदि भाई बहन दोनों हों पुरूष भी और स्त्रियाँ भी, तो पुरुष के लिये दो स्त्रियों के बराबर (भाग) है [2] अल्लाह तुम्हारे लिये वर्णन कर रहा है ताकि तुम भटक न जाओ तथा अल्लाह सर्वज्ञ है।

सूरतुल मायेद:-५

سُورَةُ الْمَائِدَةِ

सूरतुल मायद: मदीने में उतरी, इसमें एक सौ बीस आयतें और सोलह रूकूउ हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो अति कृपालु तथा अति दयालु है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَوْفُوا بِالْعُقُودِ ۚ أُحِلَّتْ لَكُمْ بَهِيمَةُ الْأَنْعَامِ إِلَّا مَا يُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ غَيْرَ مُحِلِّي

(१) हे ईमानवालो ! बंधनों (वचनों) को पूरा करो,[3] तुम्हारे लिये चौपाये पशु वैध कर दिये गये हैं[4] उनके सिवाये जो पढ़कर तुमको

---

[1]यही आदेश दो से अधिक बहनों की अवस्था में होगा। अर्थात यह अर्थ हुआ कि यदि कलाल: व्यक्ति की दो अथवा दो से अधिक बहनें होंगी तो उन्हें कुल माल का दो तिहाई मिलेगा।

[2]अर्थात कलाल: के उत्तराधिकारी मिले जुले हों स्त्री-पुरुष दोनों हों तो फिर एक पुरुष दो स्त्रियों के समान के नियम से त्यक्त धन का वितरण होगा।

[3] عقود बहुवचन है عقد का, जिसका अर्थ है गाँठ लगाना। इसका प्रयोग किसी वस्तु में गाँठ लगाने के लिये भी होता हो और पक्का दृढ़ वचन करने पर भी। यहाँ इससे तात्पर्य वह अल्लाह के आदेश हैं अल्लाह तआला ने जिनके पालन का भार मानव पर रखा है तथा वह वचन तथा सम्बन्ध भी हैं, जो मनुष्य आपस में करते हैं। दोनों को पूरा करना आवश्यक है।

[4] بَهِيمة चौपाये पशु को कहा जाता है। इसका मूल धातु بَهْم - إبهام है। कुछ का कहना है कि इनकी बातचीत तथा बुद्धि एवं समझ में चूँकि संदिग्धता है, इसलिए इनको بَهِيمة कहा जाता है। أنعام ऊँट, गाय, बकरी तथा भेड़ को कहा जाता है। क्योंकि इनकी चाल में कोमलता होती है। यह पालतू चौपाये पुल्लिंग तथा स्त्रीलिंग मिलाकर आठ प्रकार के हैं। जिनकी विस्तृत जानकारी *सूर: अल-अनआम* की आयत संख्या १२४ में आयेगी। इसके अतिरिक्त जो पशु जंगली कहलाते हैं। जैसे : हिरन नील गाय आदि, जिनका सामान्यत:

الصَّيْدِ وَأَنتُمْ حُرُمٌ ۗ إِنَّ اللَّهَ يَحْكُمُ مَا يُرِيدُ ①

सुनाये जाते हैं[1] परन्तु एहराम की स्थिति में शिकार न करो, नि:संदेह अल्लाह अपनी इच्छा से आदेश देता है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُحِلُّوا شَعَائِرَ اللَّهِ وَلَا الشَّهْرَ الْحَرَامَ وَلَا الْهَدْيَ وَلَا الْقَلَائِدَ وَلَا آمِّينَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ يَبْتَغُونَ

(२) हे ईमानवालो ! अल्लाह के धर्म अनुष्ठानों का निरादर न करो,[2] न आदरणीय महीने का,[3] न बलि के लिये हरम तक ले जाये जा रहे तथा पट्टा पहनाये पशु का,[4] न आदरणीय

शिकार किया जाता है। यह भी उचित हैं। जैसा कि *सूर: अल-बक़र:* की आयत संख्या १७३ में विस्तार पूर्वक वर्णन हो चुका है। नुकीले दाँत वाले वह पशु जो अपने शिकार को पकड़ कर चीरता हो। जैसे : शेर, चीता, कुत्ता, बिल्ली, भेड़िया आदि नुकीले दाँत वाले पशु हैं। वह पक्षी जो अपना शिकार पंजे से झपट कर पकड़ता है। जैसे : शिकरा, बाज़, शाहीन, गिद्ध आदि।

[1]इसका विस्तार पूर्वक वर्णन आयत संख्या ३ में आ रहा है।

[2] شعائر बहुवचन है شعيرة का इससे तात्पर्य अल्लाह के द्वारा निषेधित आदर स्वरूप है (जिनका आदर तथा सम्मान अल्लाह ने निर्धारित किया है) । कुछ ने इसे सामान्य रूप रखा है, और कुछ के निकट यहाँ हज तथा उमर: की धार्मिक रीति से तात्पर्य है। अर्थात इनका अनादर तथा अपमान न करो इसी प्रकार हज तथा उमर: के पूर्ण करने में किसी के मध्य रुकावट भी न बनो क्योंकि यह भी अनादर है।

[3]शहरुल हराम से तात्पर्य आदरणीय चार महीने (रजब, ज़ुलक़ादा, ज़ुलहिज्जा, तथा मोहर्रम) हैं इन का आदर स्थापित रखो और उनमें हत्या न करो। कुछ ने इससे केवल एक महीना अर्थात ज़ुलहिज्जा का महीना (हज का महीना) लिया है। कुछ ने इस आदेश को ﴿فَاقْتُلُوا الْمُشْرِكِينَ حَيْثُ وَجَدتُّمُوهُمْ﴾ से निरस्त माना है । परन्तु इसकी आवश्यकता नहीं दोनों ही आदेश की अपनी-अपनी परिधि है जिनसे इंकार नहीं।

[4]हदी ऐसे पशु को कहा जाता है, जो हाजी हरम में बलि देने के लिए साथ ले जाते थे। قلائد बहुवचन है قلادة का जो, गले के पट्टे को कहा जाता है, यहाँ हज के समय पर बलि दिये जाने वाले उन पशुओं से तात्पर्य लिया गया है। जिनके गलों में चिन्ह तथा पहचान के लिए पट्टे डाल दिये जाते हैं। परन्तु قلائد से उद्देश्य वही पशु हुए, जिन्हें हरम ले जाया जाता है । यहाँ हदी का विशेष रूप से वर्णन करके स्पष्ट कर दिया गया है। अर्थात इन पशुओं को किसी से छीना न जाये तथा उनके हरम तक पहुँचने में कोई रुकावट न डाली जाये।

فَضْلًا مِّنْ رَّبِّهِمْ وَرِضْوَانًا ۚ وَإِذَا حَلَلْتُمْ فَاصْطَادُوا ۚ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَآنُ قَوْمٍ أَنْ صَدُّوكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ أَنْ تَعْتَدُوا ۘ وَتَعَاوَنُوا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوَىٰ ۖ وَلَا تَعَاوَنُوا عَلَى الْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۖ إِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿٢﴾

घर (काअ़बा) को जा रहे लोगों का, जो अल्लाह की दया एवं अनुग्रह की खोज कर रहे हैं,[1] तथा जब एहराम खोलो तो फिर शिकार कर सकते हो[2] तथा जिन्होंने तुम्हें मस्जिदे हराम से रोका उनकी शत्रुता तुम्हें सीमा लाँघ जाने पर तैयार न करे,[3] तथा स्वभाव एवं संयम पर परस्पर सहायता करो, पाप तथा अत्याचार में सहायता न करो[4] और अल्लाह से डरते रहो, निश्चय अल्लाह कठिन यातना देने वाला है।

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةُ وَالدَّمُ وَلَحْمُ الْخِنْزِيرِ وَمَا أُهِلَّ لِغَيْرِ اللَّهِ

(३) तुम पर निषेध कर दिया गया है मुरदार, तथा रक्त, एवं सूअर का मांस तथा जिस पर

---

[1]अर्थात हज व उमर: के विचार से अथवा व्यापार के उद्देश्य से हरम जाने वाले लोगों को न रोको तथा न उन्हें कष्ट दो। कुछ व्याख्याकारों के निकट यह आदेश उस समय के हैं जब मुसलमान तथा मूर्तिपूजक एक साथ हज तथा उमर: करते थे। परन्तु जब यह आयत उतरी,

﴿ إِنَّمَا الْمُشْرِكُونَ نَجَسٌ فَلَا يَقْرَبُوا الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ بَعْدَ عَامِهِمْ هَٰذَا ﴾

"मूर्तिपूजक तो अपवित्र हैं, बस इस वर्ष के पश्चात ख़ाना काअ़बा के निकट न जाने पायें।" (*सूर: अल-तौबा-२८*)

तो मूर्तिपूजकों के विषय में यह आदेश निरस्त हो गया है और यह आदेश मुसलमानों के विषय में है। (फ़तहुल क़दीर)

[2]यहाँ आदेश कारण बताने अर्थात औचित्य बताने के लिये है। अर्थात जब एहराम खोल दो, तो शिकार करना तुम्हारे लिए उचित है।

[3]अर्थात यदि मक्का के मूर्तिपूजकों ने सन् ६ हिजरी में मस्जिदे-हराम में प्रवेश करने से रोक दिया था, परन्तु तुम उनके इस रोकने के कारण उनके साथ अत्याचार तथा दुर्व्यवहार का मार्ग न अपनाना। शत्रु के साथ भी ज्ञान तथा क्षमा का पाठ दिया जा रहा है।

[4]यह एक अति विशेष नियम का वर्णन है, जो मुसलमान का पग-पग पर मार्गदर्शन कर सकता है। काश, मुसलमान इस नियम को अपना सकें।

अल्लाह के अतिरिक्त अन्य का नाम पुकारा गया हो[1] तथा गला घुट कर मरा,[2] तथा चोट से मरा,[3] एवं गिरकर मरा[4] तथा अन्य पशु के सींघ मारने से मरा[5] और जिसका कुछ अंश हिंसक जन्तु ने खा लिया हो[6] परन्तु जिसे तुमने वध कर दिया,[7] तथा जो थानों पर वध किया

بِهٖ وَ الْمُنْخَنِقَةُ وَالْمَوْقُوْذَةُ وَالْمُتَرَدِّيَةُ وَالنَّطِيْحَةُ وَمَآ اَكَلَ السَّبُعُ اِلَّا مَا ذَكَّيْتُمْ وَمَا ذُبِحَ عَلَى النُّصُبِ وَ اَنْ تَسْتَقْسِمُوْا بِالْاَزْلَامِ ذٰلِكُمْ فِسْقٌ اَلْيَوْمَ يَئِسَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ دِيْنِكُمْ

---

[1]यहां से उन हराम (प्रतिबन्धित) वस्तुओं का वर्णन प्रारम्भ होता है, जिनका संकेत सूर: के आरम्भ में दिया गया है। आयत का इतना भाग सूर: *अल-बक़र:* में गुज़र चुका है। (देखिए आयत संख्या १७३)

[2]गला कोई व्यक्ति घोंट दे अथवा किसी चीज़ से फंस कर स्वयं गला घुंट जाये। दोनों अवस्था में मृत जानवर हराम है

[3]किसी ने पत्थर, लाठी अथवा कोई अन्य चीज़ मारी जिससे वह बिना वध (इस्लामी विधि के अनुसार गले पर छुरी चलाना) किये ही मर गया। अज्ञान काल में ऐसे जानवरों को खा लिया जाता था। इस्लामी धर्म नियम ने मना कर दिया।

बन्दूक़ का शिकार : बन्दूक़ से शिकार किए हुए जानवरों के विषय में आलिमों (इस्लामी धर्मगुरुओं) के मध्य मतभेद है। इमाम शौकानी ने एक हदीस से भावार्थ निकालते हुए, बन्दूक़ के शिकार को उचित माना है। (फ़तहुल क़दीर) अर्थात यदि बिस्मिल्लाह पढ़ कर गोली चलायी गयी और शिकार वध करने से पूर्व ही मर गया तो उसका खाना इस कथन के आधार पर उचित है।

[4]चाहे वह स्वयं गिरा हो अथवा किसी ने पहाड़ आदि से धक्का देकर गिराया हो।

[5] نطيحة शब्द منطوحة के अर्थ में है। अर्थात किसी ने उसे टक्कर मार दी तथा बिना वध किये वह मर गया।

[6]अर्थात शेर, चीता, तथा भेड़िया आदि जैसे हिंसक जन्तु ने उसे खाया हो तथा वह मर गया हो। अज्ञान काल में मर जाने के उपरान्त ऐसे जानवरों को खा लिया जाता था।

[7]साधारण व्याख्याकारों के निकट यह छूट सभी वर्णित जानवरों के लिए है अर्थात गला घोंटने से चोट द्वारा घायल, ऊंचे स्थान से गिरने से अथवा टक्कर द्वारा अथवा किसी हिंसक जन्तु द्वारा घायल जानवर। यदि तुम इस अवस्था में पाओ कि उनमें जीवन की किरण पायी जाती हो और फिर तुम उसे इस्लामी नियम के अनुसार वध कर लो, तो फिर तुम्हारे लिए खाना उचित होगा।

فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِ ۚ اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ وَرَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْنًا ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ فِيْ مَخْمَصَةٍ غَيْرَ مُتَجَانِفٍ لِّاِثْمٍ ۙ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ③

जाये[1] तथा पाँसे (लाटरी) द्वारा बाँटना[2] यह सभी महापाप है। आज काफ़िर (मूर्तिपूजक) तुम्हारे धर्म की ओर से निराश हो गये। अत: उनसे न डरो मात्र मुझसे डरो। आज मैंने तुम्हारे लिये धर्म को परिपूर्ण कर दिया तथा तुम पर अपनी अनुकम्पा पूरी कर दी और तुम्हारे लिये इस्लाम धर्म को पसन्द कर लिया।

जीवन के लक्षण ये हैं कि वध करते समय जानवर फड़के और टाँगें मारे। यदि छुरी फेरते समय यह लक्षण प्रदर्शित न हों तो समझ लो यह मृत है।

ज़िब्ह की धार्मिक विधि यह है कि बिस्मिल्लाह पढ़ कर तेज धार वस्तु से उसका गला इस प्रकार काटा जाये कि रगें कट जायें। वध के अतिरिक्त नहर भी मान्य है। जिसकी विधि यह है कि खड़े जानवर के गले पर छुरी मारी जाये (ऊँट का नहर किया जाता है) जिससे गले और रक्त की विशेष नसें कट जाती हैं और सारा रक्त बह जाता है।

[1]मूर्तिपूजक अपनी मूर्तियों के निकट पत्थर अथवा कोई वस्तु गाड़ करके विशेष स्थान बनाते थे। जिसे थान अथवा आसताना कहते थे। उसी पर मूर्तियों के नाम पर चढ़ाये गये जानवरों की बलि देते थे अर्थात यह ﴿وَمَا اُهِلَّ بِهٖ لِغَيْرِ اللّٰهِ﴾ ही का एक रूप था। इससे ज्ञात हुआ कि आसतानों, मक़बरों तथा दरगाहों पर जहाँ लोग अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिये जाते हैं, और वहाँ पर गड़े व्यक्ति की प्रसन्नता के लिए जानवरों (मुर्ग़ा, बकरा आदि) की बलि देते हैं अथवा पके हुए खाने बाँटते हैं, उनका खाना वर्जित है यह وما ذُبِحَ على النصب में आता है।

[2] ﴿وَاَنْ تَسْتَقْسِمُوْا﴾ के दो अर्थ किये गये हैं, एक तीरों के द्वारा बाँटना, दूसरे तीरों के द्वारा भाग्य मालूम करना। पहले अर्थ के विषय में कहा जाता है कि जूए आदि में बधित किये हुए जानवरों के बँटवारे के लिए यह तीर होते थे, जिसमें किसी को कुछ मिल जाता, कोई वंचित रह जाता। दूसरे अर्थ के अनुसार कहा गया है कि أزلام से तात्पर्य तीर हैं, जिनके द्वारा किसी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व भाग्य विचारते थे। उन्होंने तीन प्रकार के तीर बना रखे थे। एक (कर), दूसरे में (न कर) तथा तीसरे में कुछ नहीं होता था। (कर) वाला तीर निकल आता तो काम करते। (न कर) वाला तीर निकल आता तो न करते और तीसरा तीर निकल आता तो फिर दोबारा विचारते। यह भी एक ज्योतिष तथा अल्लाह के अतिरिक्त अन्य से माँगने के मार्ग का ही एक रूप है, इसलिए इसे भी वर्जित कर दिया गया। استقسام का अर्थ ही भाग्य का पता लगाना है। अर्थात तीरों के द्वारा भाग्य के विषय में जानने का प्रयत्न करते थे।

परन्तु जो भूख में आतुर हो जाये और कोई पाप न करना चाहता हो तो निश्चय अल्लाह क्षमानिधि कृपानिधि है ।[1]

يَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَآ اُحِلَّ لَهُمْ ۭ قُلْ اُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبٰتُ ۙ وَمَا عَلَّمْتُمْ مِّنَ الْجَوَارِحِ مُكَلِّبِيْنَ تُعَلِّمُوْنَهُنَّ مِمَّا عَلَّمَكُمُ اللّٰهُ ۡ فَكُلُوْا مِمَّآ اَمْسَكْنَ عَلَيْكُمْ وَاذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهِ ۠ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ④

(४) वह आप (नराशंस) से प्रश्न करते हैं कि उनके लिये क्या (खाना) वैध है आप कह दें कि तुम्हारे लिये पवित्र वस्तुऐं उचित हैं[2] तथा वह शिकारी जानवर जो तुमने सधा रखे हों जिनको कुछ बातें सिखाते हो जो अल्लाह ने तुम्हें सिखलाई[3] तो यदि तुम्हारे लिये वह (शिकार) को दबोच रखें और उसे छोड़ते समय अल्लाह का नाम उस पर लो तो उसे (शिकार को) खाओ[4] तथा अल्लाह से डरो, निःसन्देह अल्लाह शीघ्र हिसाब लेने वाला है ।

---

[1]यह भूख की व्याकुलता की परिस्थिति में वर्जित खाने की अनुमति है, परन्तु इसके द्वारा अल्लाह की अवज्ञा तथा सीमा उल्लंघन का विचार न हो, केवल प्राण रक्षा ही अभिप्रेत हो ।

[2]इससे वे सभी चीज़ों का तात्पर्य है जो उचित हैं । प्रत्येक उचित पवित्र है और वर्जित अपवित्र है

[3] جارح का बहुवचन جوارح है, जो दूसरों के लिए शिकार करने के लिए हैं जिसका तात्पर्य शिकारी कुत्ता, बाज़, चीता, शिकंरा तथा अन्य शिकारी पक्षी तथा हिंसक पशु हैं । مكلبين का अर्थ है शिकार पर छोड़ने से पूर्व उनको शिकार के लिए सिखाया गया हो, सिखाने का अर्थ है कि जब उसे शिकार पर छोड़ा जाये, तो दौड़ता हुआ जाये, जब रोक दिया जाये तो रुक जाये, बुलाया जाये तो वापस आ जाये ।

[4]ऐसे सिखाये हुए जानवरों का शिकार किया हुआ जानवर दो प्रतिबन्धों के साथ वैध है एक यह कि उसे शिकार पर छोड़ते समय बिस्मिल्लाह पढ़ ली गयी हो । दूसरा यह कि शिकारी जानवर शिकार करके अपने मालिक के लिए रख छोड़े और उसकी प्रतीक्षा करे, स्वयं न खाये । यद्यपि उसने उसे मार भी डाला हो, तब भी वह मृतक शिकार किया हुआ जानवर उचित होगा, जबकि उसके शिकार के लिए सिखाये तथा छोड़े हुए जानवर के अतिरिक्त किसी अन्य जानवर का सम्मिलित न हो । (सहीह बुख़ारी, कितुज़्ज़बाएहे वस्सैदे-मुस्लिम किताबुस्सैदे)

(५) आज सभी पवित्र वस्तुऐं तुम्हारे लिए विधि अनुकूल कर दी गयीं तथा अहले किताब का खाद्य तुम्हारे लिये वैधानिक है[1] तथा तुम्हारा खाद्य उनके लिये विधि अनुकूल (जायज़) है तथा सत्यव्रता मुसलमान नारियां और जो तुमसे पूर्व किताब (धर्मशास्त्र) दिये गये उनमें से सत्यव्रता नारियां[2] जब तुम उन्हें उनका विवाह मूल्य (महर) दे दो विवाह करके व्यभिचार के लिये नहीं और न गुप्त प्रेमिक बनाने के लिये, तथा जो ईमान को नकार दे उसका कर्म व्यर्थ हो गया तथा वह परलोक में घाटे में रहेगा।	اَلْيَوْمَ اُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبٰتُ ۭ وَطَعَامُ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ حِلٌّ لَّكُمْ ۠ وَطَعَامُكُمْ حِلٌّ لَّهُمْ ۡ وَالْمُحْصَنٰتُ مِنَ الْمُؤْمِنٰتِ وَالْمُحْصَنٰتُ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ اِذَآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ مُحْصِنِيْنَ غَيْرَ مُسٰفِحِيْنَ وَلَا مُتَّخِذِيْٓ اَخْدَانٍ ۭ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِالْاِيْمَانِ فَقَدْ حَبِطَ عَمَلُهٗ ۡ وَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝
(६) हे ईमान वालों ! जब तुम नमाज़ के लिये उठो तो अपने मुँह, तथा कोहनियों सहित	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا قُمْتُمْ اِلَى الصَّلٰوةِ فَاغْسِلُوْا وُجُوْهَكُمْ

[1]अहले किताब का वही वध किया पशु उचित होगा, जिसमें रक्त बह गया होगा। अर्थात उनका मशीन द्वारा वध उचित नहीं है क्योंकि इस में रक्त का बहना जो आवश्यक है पाया नहीं जाता।

[2]अहले किताब की स्त्रियों के साथ विवाह की अनुमति के साथ एक तो सुचरित्रता सतीत्व आवश्यक है, जो आजकल अधिकतर अहले किताब स्त्रियों में नहीं मिलता है। दूसरे उसके पश्चात यह कहा गया है कि जो ईमान के साथ कुफ्र करे, उसके कर्म नष्ट हो गये। इस से यह चेतावनी देना है कि यदि ऐसी स्त्री से विवाह करने से ईमान के नष्ट होने का भय है, तो यह बहुत हानिकर व्यापार है। और आजकल अहले किताब की स्त्रियों से विवाह करने में ईमान को जो ख़तरा है, उसके वर्णन की आवश्यकता नहीं। अर्थात इस का उद्देश्य यह है कि ईमान का बचाना अनिवार्य है। एक अनुमति पूर्ण कार्य के लिए अनिवार्य को ख़तरे में नहीं डाला जा सकता। इसलिए इसका औचित्य उस समय तक अनुचित रहेगा, जब तक ये दोनों उपरोक्त कमियाँ उनसे दूर न होंगी। इसके अतिरिक्त आजकल के अहले किताब अपने धर्म से बिल्कुल अज्ञान अपितु विमुख एवं विद्रोही हैं। इन परिस्थितियों में क्या वास्तव में उनकी गणना अहले किताब में हो भी सकती है ? والله أعلم

अपने हाथों को धो लिया करो[1] और अपने	وَاَيۡدِيَكُمۡ اِلَى الۡمَرَافِقِ وَامۡسَحُوۡا
सिर का मसह (दोनो हाथ तर करके सिर पर	بِرُءُوۡسِكُمۡ وَاَرۡجُلَكُمۡ اِلَى الۡكَعۡبَيۡنِ‌ؕ
फेरना) कर लो[2] तथा अपने पाँव टखनों समेत	وَاِنۡ كُنۡتُمۡ جُنُبًا فَاطَّهَّرُوۡا‌ؕ وَاِنۡ
धुल लो,[3] और यदि तुम अपवित्र हो तो स्नान	كُنۡتُمۡ مَّرۡضٰۤى اَوۡ عَلٰى سَفَرٍ اَوۡ جَآءَ
कर लो[4] और यदि तुम रोगी अथवा यात्रा पर	اَحَدٌ مِّنۡكُمۡ مِّنَ الۡغَآئِطِ اَوۡ لٰمَسۡتُمُ

---

[1] "मुहँ धोओ ।" अर्थात एक-एक, दो-दो अथवा तीन-तीन बार दोनो हाथ कलाईयों तक धोने, कुल्ली करने, नाक में पानी डालकर छिनकने के पश्चात। जैसाकि हदीस से सिद्ध है। मुँह धोने के पश्चात हाथों को कोहनियों तक धोया जाये।

[2] मसह (अर्थात दोनों हाथ भींगा कर सर पर फेरना) पूरे सिर का किया जाये, जैसाकि हदीस से सिद्ध है "अपने हाथ आगे से पीछे (पश्चात मस्तक) तक ले जाये और फिर वापस वहाँ से आगे लाये जहाँ से प्रारम्भ किया था।" इसी के साथ कानों का मसह करले यदि सिर पर पगड़ी अथवा मुरेठा हो तो हदीस के अनुसार मोज़ों की भाँति उस पर भी मसह उचित है। (सहीह मुस्लिम, किताबुल तहार:) इस प्रकार एक बार मसह कर लेना पर्याप्त है।

[3] أرجلكم का लगाव وجوهكم से है अर्थात अपने पैर टखनों तक धुलो, तथा यदि मोज़े अथवा इस प्रकार के अन्य वस्त्र पैरों पर चढ़े हों तो (जबकि वज़ू की अवस्था में पहना हो) सहीह हदीस के अनुसार पैर धोने के बजाय मोज़ों आदि पर मसह भी उचित है।

टिप्पणी : १. यदि पहले से वज़ू रहे तो नया वज़ू करना आवश्यक नहीं है परन्तु प्रत्येक नमाज़ के लिए नया वज़ू करना अच्छा है। २. वज़ू से पहले नीयत अनिवार्य है। ३. वज़ू से पहले बिस्मिल्लाह पढ़ना आवश्यक है ४. दाढ़ी घनी हो, तो उसका ख़िलाल (बालों में अंगूली फेरना कंघी की भाँति) किया जाये। ५. अंगों को क्रमानुसार धोया जाये ६. उनके मध्य देरी न की जाये। अर्थात एक अंग को धोने के पश्चात दूसरे अंग को धोने में देरी न की जाये। वल्कि सभी अंगों को कमानुसार एक के बाद दूसरे को धोया जाये ७. वज़ू करने वाले अंग के भागों में से कोई भी भाग सूखा रह जाये, तो वज़ू न होगा। ८. कोई भी अंग तीन वार से अधिक न धोया जाये। ऐसा करना सुन्नत के विपरीत है। (तफ़सीर इब्ने कसीर, फ़तहुल क़दीर तथा ऐस रुत्तफ़ासीर)

[4] अपवित्रता से तात्पर्य वह अपवित्रता है जो स्वप्न दोष अथवा पत्नी से सम्भोग के कारण होती है। और इसी आदेशाधीन में मासिक धर्म तथा प्रसव रक्त भी है। मासिक धर्म तथा प्रसव रक्त रुक जाये तो पवित्रता के लिए स्नान करना अनिवार्य है। परन्तु पानी न मलने की स्थिति में तयम्मुम की अनुमति है। (फ़तहुल क़दीर तथा ऐसरुत्तफ़ासीर)

हो अथवा तुम में से कोई वर्चस्थान से आये अथवा तुम पत्नी से मिले हो और जल न मिले तो पवित्र मिट्टी से तयम्मुम कर लो उसे अपने चेहरों तथा हाथों पर मलो[1] अल्लाह तुम पर तंगी नहीं चाहता[2] परन्तु तुम्हें पवित्र बनाना चाहता है और ताकि तुम पर अपनी पूरी कृपा करे[3] और ताकि तुम कृतज्ञ रहो।

النِّسَآءَ فَلَمْ تَجِدُوْا مَآءً فَتَيَمَّمُوْا صَعِيْدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوْا بِوُجُوْهِكُمْ وَاَيْدِيْكُمْ مِّنْهُ ؕ مَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيَجْعَلَ عَلَيْكُمْ مِّنْ حَرَجٍ وَّلٰكِنْ يُّرِيْدُ لِيُطَهِّرَكُمْ وَلِيُتِمَّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٦﴾

(७) तथा अपने ऊपर अल्लाह की कृपा तथा उस प्रतिज्ञा को स्मरण करो जिसकी तुमसे पुष्टी कराई जब तुमने कहा कि हमने सुना और मान लिया तथा अल्लाह (तआला) से डरते रहो। नि:संदेह अल्लाह (तआला) दिलों की बातों का जानकार (अन्तर्यामी) है।

وَاذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَمِيْثَاقَهُ الَّذِيْ وَاثَقَكُمْ بِهٖۤ ۙ اِذْ قُلْتُمْ سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ؗ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿٧﴾

(८) हे ईमानवालो! अल्लाह के लिये सत्य पर दृढ़, न्याय पर साक्षी हो[4] जाओ तथा किसी क़ौम

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ لِلّٰهِ شُهَدَآءَ بِالْقِسْطِ ؗ

---

[1]इसकी संक्षिप्त व्याख्या तथा तयम्मुम की विधि सूर: अल-निसा की आयत संख्या ४३ में आ चुकी है सहीह बुख़ारी में इसके उतरने के विषय में आता है कि एक यात्रा में बैयदा नामक स्थान पर आदरणीय आयशा का हार खो गया। जिसके कारण रुकना पड़ा अथवा रुके रहना पड़ा। भोर की नमाज़ के लिए लोगों के पास पानी नहीं था और खोजने पर पानी न मिला इस समय यह आयत उतरी, जिसमें तयम्मुम की आज्ञा दी गयी। आदरणीय उसैद बिन हुदैर ने आयत सुनकर कहा हे आले अबूबक्र! तुम्हारे कारण अल्लाह ने लोगों के लिए सुविधायें उतारीं और यह तुम्हारे कारण कोई प्रथम सुविधा नहीं है। (तुम लोगों के लिए पूर्ण विभुति हो) (सहीह बुख़ारी तफ़सीर *सूर: अल-मायद:*)

[2] इसीलिए तयम्मुम की अनुमति प्रदान कर दी है।

[3]इसीलिए हदीस में वज़ू करने के पश्चात दुआ करने पर बल दिया गया है। दुआओं (प्रार्थनाओं) की किताब से यह दुआ याद कर ली जाये।

[4]पहले वाक्य की व्याख्या सूर: अल-निसा आयत संख्या १३५ तथा दूसरे वाक्य की सूर: *अल-मायद:* के प्रारम्भ में आ चुकी है। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निकट

وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ عَلٰٓى اَلَّا تَعْدِلُوْا ؕ اِعْدِلُوْا ۫ هُوَ اَقْرَبُ لِلتَّقْوٰى ۫ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ⑧

की शत्रुता तुम्हें न्याय न करने पर तत्पर (तैयार) न करे, न्याय करो वह संयम से निकटतम है तथा अल्लाह से डरो वस्तुत: अल्लाह तुम्हारी कर्मों से सूचित है।

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ عَظِيْمٌ ⑨

(९) जिन्होंने विश्वास किया तथा सदाचार किये अल्लाह ने उनको क्षमा एवं भारी प्रतिफल का वचन दिया है।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ⑩

(१०) और जिन्होंने विश्वास नहीं किया तथा हमारे आदेशों को झुठलाया वही नरक के पात्र हैं।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ هَمَّ قَوْمٌ اَنْ يَّبْسُطُوْٓا اِلَيْكُمْ اَيْدِيَهُمْ فَكَفَّ اَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ

(११) ऐ ईमानवालों ! अल्लाह (तआला) ने जो उपकार तुम पर किये हैं, उसे याद करो जब कि एक जाति ने तुम पर अत्याचार करना चाहा, तो अल्लाह (तआला) ने उनके हाथों को तुम तक पहुँचने से रोक दिया।[1] और

न्यायिक गवाही का कितना महत्व है इसका आभास उस घटना से होता है जो हदीस में आती है, कि आदरणीय नौमान बिन बशीर (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो गया) कहते हैं कि मेरे पिता ने मुझे कुछ अनुदान दिया तो मेरी माता ने कहा कि इस उपहार पर जब तक आप अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को गवाही नहीं बनायेगें, मैं संतुष्ट नही हूँगी। अत: मेरे पिता नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुए तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा, क्या तुमने अपनी सभी सन्तान को इसी प्रकार अनुदान दिया है ? तो उन्होंने नकारात्मक उत्तर दिया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, अल्लाह से डरो ! और सन्तान के मध्य न्याय करो। और फरमाया, मैं अत्याचार पर गवाह नहीं बनूंगा। (सहीह बुख़ारी तथा मस्लिम, किताबुल हिबा)

[1]इसके अवतरण की विशेपता के हेतु व्याख्याकारों ने विभिन्न घटनाओं का वर्णन किया है। जैसे उस गंवार की घटना, कि रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक यात्रा से लौटते समय एक वृक्ष के नीचे विश्राम करने लगे। तलवार वृक्ष पर लटक रही थी। उस गंवार ने वह तलवार पकड़ कर आप पर तान ली और कहने लगा, हे "मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) आप को मुझसे कौन बचायेगा ?" आप सल्लल्लाहु अलैहि

وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿١١﴾

अल्लाह (तआला) से डरते रहो तथा ईमानवालों को अल्लाह तआला पर ही भरोसा करना चाहिए।

وَلَقَدْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۚ وَبَعَثْنَا مِنْهُمُ اثْنَيْ عَشَرَ نَقِيْبًا ۭ وَقَالَ اللّٰهُ اِنِّيْ مَعَكُمْ ۭ لَئِنْ اَقَمْتُمُ الصَّلٰوةَ وَاٰتَيْتُمُ

(१२) और अल्लाह तआला ने इस्राईल के पुत्रों से वचन लिया।[1] और उन्हीं में से बारह सरदार हम ने नियुक्त किये।[2] और अल्लाह (तआला) ने फ़रमा दिया, मैं नि:सन्देह तुम्हारे

वसल्लम ने विना झिझक उत्तर दिया, अल्लाह (अर्थात अल्लाह बचायेगा) यह कहना था कि तलवार उसके हाथ से गिर गयी। कुछ कहते हैं कि काअब बिन अशरफ़ और उसके साथियों ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आप के सहचरों के विरुद्ध, जब कि आप वहाँ पर विराजमान थे, धोखा तथा छल से हानि पहुँचाने का षडयन्त्र रचा था, जिससे अल्लाह तआला ने आप को बचाया। कुछ कहते हैं कि एक मुसलमान के हाथ से दो आमिरी व्यक्ति की हत्या भ्रान्ति के कारण हो गयी थी। उनकी देयत की आपूर्ति में यहूदियों के क़बीले बनू नदीर से सन्धि अनुसार जो सहयोग लेना था, उसकी आपूर्ति के लिए नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम स्वयं अपने साथियों सहित वहाँ पधारे और एक दीवार से टेक लगाकर बैठ गये। उन्होंने यह षडयन्त्र रचा कि ऊपर से चक्की का पत्थर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर गिरा दिया जाये, जिसे अल्लाह तआला ने वह्यी (प्रकाशना) द्वारा आप को अवगत करा दिया। संभवत: इन सारी घटनाओं के पश्चात यह आयत उतरी हो। क्योंकि एक आयत के उतरने के कई कारण तथा परिस्थितियाँ हो सकती हैं। (तफ़सीर इब्ने कसीर, ऐसारूत्तफ़ासीर, फ़तहुल क़दीर)

[1]जब अल्लाह तआला ने ईमानवालों को वह वचन पूरा करने के लिए कहा, जो उसने उनसे परम आदरणीय मोहम्मद रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के द्वारा लिया, और उन्हें सत्य की स्थापना तथा न्यायिक गवाही का आदेश दिया और उन्हें उन पुरस्कार को याद दिलाया जो उन पर प्रत्यक्ष और एवं गुप्त रूप से हुए तथा विशेष रूप से यह बात की उन्हें सत्य तथा सही मार्ग पर चलने का अवसर प्रदान किया, तो अब इस स्थान पर उस वचन का वर्णन किया जा रहा है, जो इस्राईल की सन्तान से लिया गया और जिसमें वे असफल रहे। यह मानो उनके माध्यम से मुसलमानों को चेतावनी दी जा रही है कि तुम भी कहीं इस्राईल की सन्तान की भाँति वचन भंग प्रारम्भ न कर देना।

[2]यह उस समय की घटना है, जब आदरणीय मूसा जबाबर: से युद्ध के लिए तैयार हुए, तो उन्होंने अपने समुदाय के बारह जातियों के बारह संरक्षक नियुक्त कर दिये ताकि वे उन्हें युद्ध के लिए तैयार भी करें, तथा अगुवाई भी करें एवं अन्य विषयों की व्यवस्था भी करें।

الزَّكٰوةَ وَ اٰمَنْتُمْ بِرُسُلِيْ وَعَزَّرْتُمُوْهُمْ وَاَقْرَضْتُمُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا لَّاُكَفِّرَنَّ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَلَاُدْخِلَنَّكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ فَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ﴿١٢﴾

साथ हूँ, यदि तुम नमाज़ स्थापित रखोगे, और ज़कात देते रहोगे और मेरे रसूलों को मानते रहोगे और उनकी सहायता करते रहोगे और अल्लाह (तआला) को श्रेष्ठ ऋण देते रहोगे, तो नि:सन्देह मैं तुम्हारी बुराईयाँ तुमसे दूर रखूँगा और तुम्हें उन स्वर्गों में ले जाऊँगा जिनके नीचे नहरें बह रही हैं। अब इस वचन के पश्चात भी तुममें से जो इंकार करे, वह नि:सन्देह सीधे मार्ग से भटक गया।

فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِّيْثَاقَهُمْ لَعَنّٰهُمْ وَجَعَلْنَا قُلُوْبَهُمْ قٰسِيَةً ۚ يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ عَنْ مَّوَاضِعِهٖ ۙ وَنَسُوْا حَظًّا مِّمَّا ذُكِّرُوْا بِهٖ ۚ

(१३) फिर उनके वचन भंग करने के कारण हमने उन्हें धिक्कारा और उनके दिल कठोर कर दिये कि वह शब्दों को उनके उस स्थान से परिवर्तित कर देते हैं।[1] और जो कुछ शिक्षा उनको दी गयी उसका बहुत बड़ा भाग भुला

---

[1]अर्थात इतने प्रबन्ध तथा वचन के उपरान्त भी इस्राईल की सन्तान ने वचन भंग किया, जिसके कारण वे अल्लाह के धिक्कार के पात्र हुए। इस धिक्कार का सांसारिक परिणाम यह हुआ कि उनके हृदय कठोर कर दिये गये, जिससे उनके दिल प्रभावित होने से वंचित हो गये तथा नबियों के भाषण तथा शिक्षायें उनके लिए बेकार हो गये। दूसरे यह कि वे अल्लाह के धर्मशास्त्रों में परिवर्तन करने लगे। यह परिवर्तन शाब्दिक तथा भाष्य दोनों रूप में होते थे। जो इस बात का प्रमाण था कि उनकी बुद्धि में कमी आ गयी है। और उनकी अवज्ञा में भी अत्याधिक बढ़ोत्तरी हो गयी कि अल्लाह की आयतों में हस्तक्षेप करने में भी उन्हें संकोच न हुआ। दुर्भाग्य से इस हार्दिक कठोरता तथा अल्लाह के कथन में परिवर्तन करने से उम्मते मुस्लिमा भी सुरक्षित न रही। मुसलमान कहलाने वाले सामान्य जन ही नहीं विशिष्ठ व्यक्ति भी ऐसे स्थान पर पहुँच चुके हैं कि शिक्षा तथा अल्लाह के आदेशों को याद दिलाने का तनिक प्रभाव उनके दिलों पर नहीं पड़ता, सब कुछ उनके लिए बेकार है। तथा जिन आलस्य तथा कमियों के वह शिकार हैं, उनको स्वीकार भी नहीं करते हैं। इसी प्रकार अपनी मार्मिक धार्मिक नियमों में नई बातों का गढ़ लेना तथा अपने वैचारिक कथन के पक्ष के लिए उन्हें अल्लाह के कथन में परिवर्तन करने में भी कोई रोक नहीं है। वह आवश्यकतानुसार निर्भीकता से यह कार्य भी कर जाते हैं।

وَلَا تَزَالُ تَطَّلِعُ عَلَىٰ خَائِنَةٍ مِّنْهُمْ إِلَّا قَلِيلًا مِّنْهُمْ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاصْفَحْ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ﴿١٣﴾

बैठे ।[1] उनके एक न एक विश्वासघात की सूचना तुझे मिलती रहेगी ।[2] परन्तु थोड़े से (लोग) ऐसे नहीं भी हैं ।[3] फिर भी उन्हे क्षमा करता जा और क्षमा करता जा ।[4] नि:सन्देह अल्लाह तआला उपकार करने वालों को मित्र रखता है ।

وَمِنَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّا نَصَارَىٰ أَخَذْنَا مِيثَاقَهُمْ فَنَسُوا حَظًّا مِّمَّا

(१४) और जो अपने आपको ईसाई कहते हैं ।[5] हमने उनसे (भी) वचन लिया था, उन्होंने भी

---

[1]यह तीसरा परिणाम है और इसका अर्थ है कि अल्लाह के आदेश के अनुसार कार्य करने से उन्हें कोई रूचि तथा इच्छा नहीं रही, अपितु अकर्मण्य तथा कुकर्म उनकी विशेषता बन गयी थी एवं वह नीचता के उस स्थान पर पहुँच गये कि न तो उनके हृदय ही सही रहे और न प्रकृति ही ।

[2]अर्थात विद्रोह, विश्वासघात तथा पाखण्ड उनके चरित्र बन गये जिसके नमूने हर समय आपके समक्ष आते रहेंगे ।

[3]यह थोड़े से लोग वही हैं, जो यहूदियों में से मुसलमान हो गये थे और उनकी संख्या दस से भी कम थी ।

[4]क्षमा करना तथा अनदेखी करने का आदेश उस समय दिया गया था, जब लड़ने की आज्ञा नहीं थी । बाद में उसके स्थान पर आदेश दिया गया ।

﴿ قَاتِلُوا الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْآخِرِ ﴾

"उन लोगों से युद्ध करो जो अल्लाह पर तथा आखिरत के दिन पर ईमान नहीं रखते ।" (*अल-तौबा* -२९)

कुछ के निकट क्षमा तथा त्याग का आदेश निरस्त नहीं हुआ है । यह स्वयं एक विशेष आदेश है, स्थिति तथा समय के अनुसार उसे भी अपनाया जा सकता है तथा उससे कई वार वह परिणाम प्राप्त हो जाते हैं, जिसके लिए युद्ध का आदेश है ।

[5] نصارى शब्द का उद्गम نُصْرَة से हुआ है, जिसका अर्थ है "सहायता करना ।" यह आदरणीय ईसा के प्रश्न . ﴿مَنْ أَنصَارِي إِلَى اللَّهِ﴾ अल्लाह के धर्म में मेरा कौन सहायक है ? पर उनके कुछ नि:स्वार्थी अनुयायियों ने उत्तर दिया था ﴿نَحْنُ أَنصَارُ اللَّهِ﴾ हम अल्लाह के लिये सहायता करने वाले हैं । इसी से यह लिया गया है । यह भी यहूदियों की भाँति अहले

ذُكِّرُوا بِهِ ۖ فَأَغْرَيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ ۚ وَسَوْفَ يُنَبِّئُهُمُ اللَّهُ بِمَا كَانُوا يَصْنَعُونَ ﴿١٤﴾

उसका बड़ा भाग भुला दिया, जो उन्हें शिक्षा दी गयी थी, तो हमने भी उनके मध्य शत्रुता और कटुता डाल दिया, जो क़ियामत तक रहेगी।[1] और जो कुछ यह करते हैं शीघ्र ही अल्लाह तआला उन्हें सब बता देगा।

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ قَدْ جَاءَكُمْ رَسُولُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ كَثِيرًا مِّمَّا كُنتُمْ تُخْفُونَ مِنَ الْكِتَابِ وَيَعْفُو عَن كَثِيرٍ ۚ قَدْ جَاءَكُم مِّنَ اللَّهِ نُورٌ وَكِتَابٌ مُّبِينٌ ﴿١٥﴾

(१५) हे अहले किताब ! तुम्हारे पास हमारे रसूल (मुहम्मद ! सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) आ गये जो बहुत सी वह बातें बता रहे हैं जो किताब (तौरात तथा इंजील) की बातें तुम छुपा रहे थे[2] तथा बहुत-सी बातों को छोड़ रहे हैं, तुम्हारे पास अल्लाह की ओर से ज्योति तथा खुली किताब (पवित्र क़ुरआन) आ चुकी है।[3]

किताब हैं। इनसे भी अल्लाह ने वचन लिया परन्तु उन्होंने भी इस पर ध्यान नहीं दिया, इसके परिणाम स्वरूप उनके हृदय भी प्रभावित होने से शून्य और उनके कर्म खोखले हो गये।

[1]यह अल्लाह को दिये गये वचन के विपरीत कर्म करने का प्रतिकार दण्ड है, जो अल्लाह तआला की ओर से उन पर क़ियामत तक के लिए थोप दी गयी है। अत: ईसाईयों के कई गुट हैं जो एक-दूसरे से अत्यधिक घृणा तथा द्वेष रखते हैं, एक-दूसरे को अधर्मी कहते हैं तथा एक-दूसरे के पूजा स्थल पर उपासना नहीं करते। लगता है कि मुसलमानों पर भी यह दण्ड थोप दिया गया है। यह समुदाय भी कई गुटों में बंट गया है, जिनके मध्य अत्यधिक मतभेद हैं एवं घृणा तथा द्वेष की दीवार खड़ी है।

[2]अर्थात उन्होंने तौरात तथा इंजील में जो परिवर्तन किये तथा उलट फेर किये उन्हें उजागर किया तथा जिनको छिपाते थे, उन्हे व्यक्त किया, जैसे पत्थर से मारने का दंड। जैसा कि हदीस में इसकी विस्तृत जानकारी मिलती है।

[3]'प्रकाश तथा ज्वलंत किताब' दोनों से तात्पर्य एक ही 'क़ुरआन करीम' है। इनके मध्य अरबी शब्दकोष वॉव (و) अक्षरों की द्वन्दता के कारण है किन्तु दोनों से अभिप्रेत एक अर्थात पवित्र क़ुरआन ही है जिसका स्पष्ट प्रमाण क़ुरआन करीम की अगली आयत है जिसमें कहा जा रहा है يهدي به الله "कि इसके द्वारा अल्लाह तआला मार्ग दर्शन देता है। यदि प्रकाश तथा किताब दो होते तो शब्द इस प्रकार होते يهدي بهما الله अल्लाह तआला

يَّهۡدِيۡ بِهِ اللّٰهُ مَنِ اتَّبَعَ رِضۡوَانَهٗ سُبُلَ السَّلٰمِ وَيُخۡرِجُهُمۡ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوۡرِ بِاِذۡنِهٖ وَيَهۡدِيۡهِمۡ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسۡتَقِيۡمٍ ﴿۱۶﴾

(१६) जिसके द्वारा अल्लाह उन्हें शान्ति का पथ दिखाता है जो उसकी प्रसन्नता का अनुकरण करें तथा उन्हें अंधकार से अपनी कृपा से प्रकाश की ओर निकाल लाता है तथा उन्हें सीधा मार्ग दर्शाता हैं।

لَقَدۡ كَفَرَ الَّذِيۡنَ قَالُوۡۤا اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الۡمَسِيۡحُ ابۡنُ مَرۡيَمَ ؕ قُلۡ فَمَنۡ يَّمۡلِكُ مِنَ اللّٰهِ شَيۡـًٔا اِنۡ اَرَادَ اَنۡ يُّهۡلِكَ الۡمَسِيۡحَ ابۡنَ مَرۡيَمَ وَاُمَّهٗ وَمَنۡ فِى الۡاَرۡضِ جَمِيۡعًا ؕ وَلِلّٰهِ مُلۡكُ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ وَمَا بَيۡنَهُمَا ؕ يَخۡلُقُ

(१७) नि:संदेह वह लोग काफ़िर (विश्वासहीन) हो गये जिन्होंने कहा कि मरियम का पुत्र मसीह अल्लाह है। कह दो कि यदि मरियम के पुत्र मसीह और उसकी माता एवं विश्व के सभी लोगों का वह विनाश करना चाहे तो कौन है जिसका अल्लाह के सामने तनिक भी अधिकार है ? तथा आकाशों एवं धरती और जो दोनों के मध्य है अल्लाह ही का राज्य है।

इन दोनों के द्वारा मार्ग दर्शन देता है।" परन्तु ऐसा नहीं है। इसलिए क़ुरआन करीम के इन शब्दों से यह स्पष्ट हो गया कि प्रकाश तथा ज्वलंत किताब दोनों का अर्थ एक ही अर्थात क़ुरआन करीम है। यह नहीं कि प्रकाश से नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा ज्वलंत किताब से पवित्र क़ुरआन का अभिप्रेत है। जैसाकि इस्लाम धर्म में नई बातें गढ़ने वालों ने गढ़ लिया है और यह सिद्ध करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम प्रकाश हैं। तथा यह विश्वास गढ़ लिया कि "अल्लाह के प्रकाश के प्रकाश हैं।" इस प्रकार गढ़े गये विश्वास के लिए इसके पक्ष में एक हदीस भी वर्णन करते हैं कि अल्लाह ने सर्वप्रथम नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का प्रकाश पैदा किया और फिर उस प्रकाश से सारी दुनिया बनायी। यद्यपि कि यह हदीस किसी भी प्रमाणित हदीस की संकलित पुस्तक में नहीं है। इसके अतिरिक्त उस सहीह हदीस के विपरीत है जिसमें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, अल्लाह ने सर्वप्रथम क़लम पैदा किया। «إِنَّ أَوَّلَ مَا خَلَقَ اللهُ الْقَلَمُ» यह कथन त्रिमिज़ी तथा अबू दाऊद में है। हदीस के प्रकांड विद्वान मोहद्दिस अलबानी लिखते हैं कि यह हदीस सही है जो स्पष्ट रूप से गढ़ी हदीस أوّل مَا خَلَقَ الله نوري (कि सर्वप्रथम अल्लाह मेरे प्रकाश की रचना की) को निर्मूल सिद्ध कर रही है। (तअ'लीक़ातुल मिश्कात भाग १, पृष्ठ ३४)

مَا يَشَآءُ ۗ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٧﴾	वह जो (भी) चाहे पैदा करता है और अल्लाह सर्वशक्तिमान है ।[1]
وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ وَالنَّصٰرٰى نَحْنُ اَبْنٰٓؤُا اللّٰهِ وَاَحِبَّآؤُهٗ ۗ قُلْ فَلِمَ يُعَذِّبُكُمْ بِذُنُوْبِكُمْ ۗ بَلْ اَنْتُمْ بَشَرٌ مِّمَّنْ خَلَقَ ۗ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ۗ وَلِلّٰهِ	(१८) और यहूदी तथा ईसाई कहते हैं कि हम अल्लाह के पुत्र तथा मित्र हैं ।[2] आप कह दीजिए कि फिर अल्लाह (तआला) तुम्हारे पापों के कारण तुम्हें दण्ड क्यों देता है ?[3] नहीं बल्कि तुम उसके सृष्टि में एक मनुष्य हो । वह

---

[1]इस आयत में अल्लाह तआला ने अपने सम्पूर्ण प्रभुत्व तथा सम्पूर्ण स्वामित्व का वर्णन किया है । उद्देश्य ईसाईयों के आदरणीय ईसा को पूज्य का स्थान देने के विश्वास का खण्डन करना है । आदरणीय ईसा के साक्षात भगवान होने को मानने वाले पहले तो कुछ ही लोग थे अर्थात एक .ही गुट याक़ूबिया गुट था । अब यह विश्वास लगभग सभी ईसाई गुटों में आदरणीय ईसा को भगवान मानने का किसी न किसी रूप में व्याप्त है । इसलिए ईसाईयों में अब त्रिमूर्ति के विश्वास की आधारशिला है । अतः क़ुरआन ने इस स्थान पर स्पष्ट कर दिया कि किसी पैग़म्बर, रसूल तथा नबी को भगवान का रूप दे देना स्पष्टरूप से कुफ्र है । इस कुफ्र को ईसाईयों ने किया कि आदरणीय ईसा को भगवान का पद दे दिया, यदि कोई गुट अथवा समुदाय किसी अन्य पैग़म्बर को मानवता तथा रिसालत के स्थान से उठाकर भगवान के पद पर आसीन करेगा, तो वह भी इसी कुफ्र को करेगा ।

[2]यहूदियों ने आदरणीय उज़ैर को तथा ईसाईयों ने आदरणीय ईसा को अल्लाह का पुत्र कहा तथा स्वयं को भी अल्लाह का पुत्र और उसका प्रिय समझने लगे । कुछ कहते हैं कि यहाँ पर हालत लुप्त है अर्थात أتباع أبناء الله "हम अल्लाह के पुत्रों (उज़ैर तथा मसीह) के अनुयायी हैं ।" दोनों भावों में से कोई सा भी भाव लिया जाये, उससे उनके घमंड तथा अल्लाह तआला के विषय में अनुचित विश्वास का प्रदर्शन होता है । जिसका अल्लाह तआला के समक्ष कोई स्थान नहीं है ।

[3]इसमें उनके उपरोक्त घमंड को निराधार सिद्ध किया है कि यदि तुम वास्तव में अल्लाह के प्रिय तथा लाडले होते अथवा प्रिय होने का यह अर्थ है कि तुम जो चाहो करो, अल्लाह तआला तुम्हारी पकड़ न करेगा तो फिर अल्लाह तआला तुम्हारे पापों पर दंड क्यों देता है ? इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि अल्लाह के दरबार में निर्णय दावों के आधार पर नहीं होता है तथा न क़ियामत के दिन होगा, वरन वह तो ईमान, संयम तथा कर्मों को देखता है एवं दुनियाँ में भी उसी के प्रकाश में निर्णय करता है तथा क़ियामत के दिन भी इसी नियमानुसार निर्णय करेगा ।

مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ؗ وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ⑱

जिसे चाहता है क्षमा करता है तथा जिसे चाहता है यातना देता है।[1] तथा अल्लाह (तआला) का स्वामित्व आकाशों तथा धरती पर तथा उनके मध्य जो कुछ है प्रत्येक वस्तु पर है। एवं उसी की ओर पलट कर आना है।

يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ قَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ عَلٰى فَتْرَةٍ مِّنَ الرُّسُلِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا جَآءَنَا مِنْۢ بَشِيْرٍ وَّلَا نَذِيْرٍ ؗ فَقَدْ جَآءَكُمْ بَشِيْرٌ وَّنَذِيْرٌ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ⑲

(१९) हे अहले किताब ! रसूलों के आगमन में एक विलम्ब के पश्चात हमारा रसूल (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) आ चुका है जो तुम्हारे लिये (धर्म विधानों) का वर्णन कर रहा है ताकि तुम यह न कहो कि हमारे पास कोई शुभसूचक तथा सतर्क करने वाला नहीं आया, तो तुम्हारे पास एक शुभसूचक एवं सतर्क करने वाला (अन्तिम ईशदूत) आ गया है,[2] निश्चय अल्लाह सर्वशक्तिमान है।

وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ جَعَلَ فِيْكُمْ اَنْۢبِيَآءَ وَجَعَلَكُمْ

(२०) और याद करो मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अपने वर्ग से कहा, हे मेरे वर्ग के लोगो ! अल्लाह (तआला) के उस उपकार को याद करो कि उसने तुममें से ईशदूत (पैग़म्बर) बनाये

---

[1]इस प्रकार यह यातना तथा क्षमा का निर्णय अल्लाह तआला के उसी नियम के आधार पर होगा, जिसको उसने स्पष्ट कर दिया है कि ईमानवालों को क्षमा तथा काफ़िरों को यातना, सभी लोगों का निर्णय इसी आधार पर होगा। हे अहले किताब ! तुम भी उसकी रचना की उत्पत्ति अर्थात मनुष्य हो। तुम्हारे लिए निर्णय अन्य व्यक्तियों से भिन्न क्यों होगा ?

[2]आदरणीय ईसा तथा परम आदरणीय मोहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मध्य का काल में जो लगभग ५७० वर्ष का अन्तर है। यह अन्तर एक अवकाश कहलाता है। अहले किताब से कहा जा रहा है कि इस अवकाश के पश्चात हमने अपने अन्तिम रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को भेज दिया है। अब तुम यह भी न कह सकोगे कि हमारे पास कोई शुभसूचना देने वाला तथा सतर्क करने वाला ईशदूत (पैग़म्बर) ही नहीं आया।

مُّلُوكًا وَّاٰتٰىكُمْ مَّا لَمْ يُؤْتِ اَحَدًا مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ۝

तथा तुम्हें राज्य प्रदान किया ।[1] तथा तुम्हें वह प्रदान किया जो अखिल जगत में किसी को प्रदान नहीं किया ।[2]

---

[1]अधिकतर नबी इस्राईल की सन्तानों में हुये हैं जिनका क्रम आदरणीय ईसा पर समाप्त कर दिया गया तथा अन्तिम पैग़म्बर (ईशदूत) इस्माईल की सन्तान से हुए -सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम । इसी प्रकार कई बादशाह भी इस्राईल की सन्तान में हुए और और कुछ नबियों को भी अल्लाह तआला ने राज्य प्रदान किया, जैसे आदरणीय सुलेमान अलैहिस्सलाम । इसका यह अर्थ निकला कि नबूवत की भाँति राज्य भी अल्लाह तआला का पुरस्कार है । उसे किसी भी साधारणतः बुरा समझना बहुत बड़ी त्रुटि है यदि राज्य बुरा होता तो अल्लाह तआला किसी नबी को प्रदान न करता और न इसे अनुकम्पा के रूप में पवित्र क़ुरआन में उसकी चर्चा करता, जैसा कि आजकल पश्चिमी लोकतंत्र का उन्माद जन मानस पर आच्छादित है तथा पश्चिम चालबाजों ने यह मंत्र इस प्रकार फूँका है कि केवल पश्चिम राजनीति से प्रभावित राजनीतिज्ञ ही नहीं, अपितु पगड़ी और टोपी वाले भी इससे न बच सके । अन्ततः राज्य तथा वंशगत राज्य यदि शासक और राजा न्यायकारी एवं संयमी है तो लोकतंत्र से हज़ार गुना उत्तम है ।

[2]यह संकेत पुरस्कारों और चमत्कारों की ओर है जो अल्लाह ने इस्राईल के पुत्रों को प्रदान किये । जैसे मन तथा सलवा का उतरना, बादलों की छाया, फ़िरऔन से मुक्ति के लिए नदी में मार्ग बनाना आदि । इस प्रकार इस समुदाय को अपने समय में श्रेष्ठ तथा उच्च स्थान प्राप्त था । परन्तु अन्तिम ईशदूत (पैग़म्बर) परम आदरणीय मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत तथा उनके आगमन के पश्चात यह श्रेष्ठ स्थान मुसलमानों को प्राप्त हो गया ।

﴿كُنْتُمْ خَيْرَ أُمَّةٍ أُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ﴾

"तुम श्रेष्ठ समुदाय हो जिसे मानव जाति के लिये बनाया गया है ।" (*सूरः आले इमरान*-११०)

परन्तु यह भी प्रतिबन्धित है, उस उद्देश्य की पूर्ति के साथ जिसका वर्णन इसी मंत्र में किया गया है ।

﴿تَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ﴾

"तुम लोगों को सत्कर्म का आदेश देते हो तथा कुकर्मों से रोकते हो । एवं अल्लाह तआला पर ईमान रखते हो ।"

(२१) मेरे वर्ग वालो ! उस पवित्र धरती में प्रवेश करो ।[1] जो अल्लाह (तआला) ने तुम्हारे नाम लिख दी है ।[2] और अपनी पीठ न दिखाओ ।[3] कि हानि में पड़ जाओगे ।

يٰقَوْمِ ادْخُلُوا الْاَرْضَ الْمُقَدَّسَةَ الَّتِىْ كَتَبَ اللّٰهُ لَكُمْ وَلَا تَرْتَدُّوْا عَلٰٓى اَدْبَارِكُمْ فَتَنْقَلِبُوْا خٰسِرِيْنَ ﴿٢١﴾

(२२) उन्होंने उत्तर दिया हे मूसा ! वहाँ तो शक्तिशाली लड़ाकू लोग हैं तथा जब तक वह वहाँ से निकल न जायें, हम तो कदापि नहीं जायेंगे । यदि वे वहाँ से निकल जायें तो हम (प्रसन्नता पूर्वक) वहाँ चले जायेंगे ।[4]

قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِنَّ فِيْهَا قَوْمًا جَبَّارِيْنَ ۖ وَاِنَّا لَنْ نَّدْخُلَهَا حَتّٰى يَخْرُجُوْا مِنْهَا ۚ فَاِنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَا فَاِنَّا دٰخِلُوْنَ ﴿٢٢﴾

(२३) परन्तु जो अल्लाह से डर रहे थे उनमें से दो पुरुषों ने कहा जिन पर अल्लाह ने कृपा

قَالَ رَجُلٰنِ مِنَ الَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمَا ادْخُلُوْا عَلَيْهِمُ الْبَابَ ۚ

---

[1]इस्राईल की सन्तान के परम पूर्वज आदरणीय याक़ूब अलैहिस्सलाम का निवास स्थान बैतुल मक़दिस था । परन्तु आदरणीय यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के मिश्र में राज्य के समय ये लोग मिश्र में जाकर बस गये । फिर तब से उस समय तक ये लोग वहीं रहे, जब तक आदरणीय मूसा अलैहिस्सलाम रातों-रात उन्हें फ़िरऔन के अत्याचार से बचाकर (फ़िरऔन से छिप कर) मिश्र से निकाल नहीं ले गये । उस समय बैतुल मक़दिस पर अमालक़ा का राज था, जो एक वीर जाति थी । जब आदरणीय मूसा अलैहिस्सलाम ने फिर बैतुल मक़दिस जाकर आबाद होने का निश्चय किया, तो इसके लिए वहाँ पर राज करने वालों अर्थात अमालक़ा जाति के लोगों से युद्ध अवश्य करना था, अत: आदरणीय मूसा ने अपने समुदाय के लोगों को पवित्र भूमि में प्रवेश करने का आदेश दिया और अल्लाह तआला की ओर से विजय की शुभ सूचना भी सुनाई । परन्तु इसके उपरान्त भी इस्राईल की सन्तान अमालिक़ा के साथ युद्ध करने को तैयार न हुई । (इब्ने कसीर)

[2]इससे तात्पर्य विजय है, जिसका वचन अल्लाह तआला ने धर्मयुद्ध के रूप में उनसे कर रखा था ।

[3]अर्थात धर्मयुद्ध से मुँह न मोड़ो ।

[4]इस्राईल की सन्तान अमालक़ा की वीरता से भयभीत हो गयी तथा प्रथम चरण में साहस खो दिया तथा धर्मयुद्ध से रुक गये, अल्लाह के रसूल आदरणीय मूसा के आदेश की कोई चिन्ता की न अल्लाह तआला के विजय प्रदान करने के वचन पर विश्वास किया । तथा वहाँ जाने से स्पष्ट रूप से इंकार कर दिया ।

فَإِذَا دَخَلْتُمُوهُ فَإِنَّكُمْ غَالِبُونَ ۚ وَعَلَى اللَّهِ فَتَوَكَّلُوا إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ﴿٢٣﴾

की, कि तुम उन पर द्वार से प्रवेश कर जाओ जब प्रवेश कर जाओगे तो तुम्ही विजयी रहोगे तथा यदि ईमान रखते हो तो अल्लाह ही पर भरोसा रखो ।[1]

قَالُوا يَا مُوسَىٰ إِنَّا لَن نَّدْخُلَهَا أَبَدًا مَّا دَامُوا فِيهَا ۖ فَاذْهَبْ أَنتَ وَرَبُّكَ فَقَاتِلَا إِنَّا هَاهُنَا قَاعِدُونَ ﴿٢٤﴾

(२४) उन्होंने कहा कि हे मूसा ! हम कदापि वहाँ न जायेंगे जब तक वह उसमें रहेंगे, अत: तुम तथा तुम्हारा पोषक जाकर दोनों लड़ो हम यहीं बैठे हैं ।[2]

قَالَ رَبِّ إِنِّي لَا أَمْلِكُ إِلَّا نَفْسِي وَأَخِي ۖ فَافْرُقْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ ﴿٢٥﴾

(२५) उस (मूसा) ने कहा मेरे पोषक ! मैं मात्र स्वयं पर तथा अपने भाई (हारून) पर अधिकार रखता हूँ अत: हमारे तथा अवज्ञाकारियों के बीच अलगाव कर दे ।[3]

قَالَ فَإِنَّهَا مُحَرَّمَةٌ عَلَيْهِمْ ۛ أَرْبَعِينَ سَنَةً ۛ يَتِيهُونَ فِي

(२६) उस (अल्लाह) ने कहा यह चालीस वर्ष तक उन पर निषेधित है वह धरती में भ्रमण

---

[1]मूसा की जाति में केवल यही दो व्यक्ति निकले जिन्हें अल्लाह तआला की ओर से सहायता पर विश्वास था, उन्होंने जाति को समझाया कि तुम साहस तो करो, तो फिर देखो कि अल्लाह तआला किस प्रकार विजय प्रदान करता है ।

[2]परन्तु इसके उपरान्त भी इस्राईल की सन्तान ने कायरता, दुराचार तथा दुष्टता का प्रदर्शन करते हुए कहा कि तू और तेरा पोषक जाकर लड़ें । इसके विपरीत बद्र के युद्ध के समय रसूल अल्लाह अलैहि वसल्लम ने सहाबा (رضي الله عنهم) से विचार-विमर्श किया तो उन्होंने अपनी अल्प संख्या तथा कम साधन के उपरान्त भी अपने उत्साह का प्रदर्शन किया और यह भी कहा, "हे रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हम आप से वैसे नहीं कहेंगे जैसे मूसा के समुदाय ने मूसा को उत्तर दिया ।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी वल तफ़सीर)

[3]इसमें अवज्ञाकारी समुदाय के समक्ष अपनी विवशता का प्रदर्शन भी है तथा उनसे विलग होने की घोषणा भी ।

الْأَرْضِ ۚ فَلَا تَأْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ ﴿٢٦﴾

करते रहेंगे[1] अत: आप (मूसा) अवज्ञाकारियों पर खेद न करें ।[2]

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ ابْنَيْ اٰدَمَ بِالْحَقِّ ۘ اِذْ قَرَّبَا قُرْبَانًا فَتُقُبِّلَ مِنْ اَحَدِهِمَا وَلَمْ يُتَقَبَّلْ مِنَ الْاٰخَرِ ؕ

(२७) और आदम के दो पुत्रों कि सत्य कथा उन्हें पढ़कर सुना दो[3] जबकि दोनों ने एक-एक उपहार भेंट दिया तो एक से स्वीकार की गई तथा दूसरे से अस्वीकार कर दी गयी[4] तो

---

[1]यह तीह का मैदान कहलाता है। जिसमें चालीस वर्ष यह लोग अपनी अवज्ञा तथा धर्मयुद्ध से इंकार के कारण फिरते रहे, फिर भी इस मैदान में अल्लाह ने उन्हें खाने के लिये मन्न (एक प्रकार की मीठी गोंद) तथा सल्वा (एक प्रकार के पक्षी) उतारे, जिससे उकताकर उन्होंने अपने ईशदूत से कहा कि नित्य एक प्रकार के खाने से हमारा मन भर गया अत: अपने पोषक (अल्लाह) से प्रार्थना करो कि वह अनेक प्रकार वनस्पतियाँ तथा दालें हमारे लिये उपजाये । यहीं उन पर मेघों ने छाया की, पत्थर पर आदरणीय मूसा के लाठी मारने से बारह जातियों के लिये बारह स्रोत प्रवाहित हुये, ऐसे ही अन्य अनुकम्पायें भी होती रहीं। चालीस वर्ष बाद फिर ऐसी स्थिति उत्पन्न की गई कि यह बैतुल मक़दिस में प्रवेश किये।

[2]ईशदूत (पैग़म्बर) जब धर्म प्रचार-प्रसार के उपरान्त भी देखता है कि उसका समुदाय सीधे मार्ग को अपनाने के लिए तैयार नहीं है, जिसमें उसे दोनों लोक की भलाईयाँ हैं तो स्वभाविक रूप से उसे अत्यधिक दुख तथा चिन्ता होती है। यही नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की भी दशा होती थी, जिसका वर्णन क़ुरआन मजीद में विभिन्न स्थानों पर है। परन्तु इस आयत में आदरणीय मूसा को सम्बोधित किया जा रहा है। कि जब तुमने अपना सतर्क करने तथा आमन्त्रण देने का कर्तव्य पूर्ण कर दिया तथा अल्लाह का संदेश लोगों तक पहुँचा दिया। और अपने समुदाय को एक विशाल सफलता के प्रारम्भिक बिन्दु पर ला खड़ा कर दिया, परन्तु वे अपने दुस्साहस तथा दुर्बोध के कारण तेरी बात मानने को तैयार नहीं हैं, तो तू अपने कर्तव्य को पूरा कर चुका तथा अब तुझे उनके विषय में दुखी एवं चिन्तित होने की कोई आवश्यकता नहीं है। ऐसे अवसर पर दुखी होना एक स्वभाविक बात है। परन्तु इस सन्तावना का यह तात्पर्य है कि आमन्त्रण देने तथा सतर्क करने के उपरान्त अब तुम अल्लाह के पास भार मुक्त हो गये।

[3]आदम के इन दो पुत्रों का नाम हाबील तथा क़ाबील था।

[4]यह चढ़ावा अथवा बलि किसलिए प्रस्तुत की गयी ? इसके विषय में कोई उचित कथन प्राप्त नहीं है । परन्तु यह अवश्य प्रसिद्ध है कि प्रारम्भ में आदरणीय आदम तथा हव्वा के मिलाप से एक समय में एक पुत्र तथा एक पुत्री का जन्म होता था। दूसरे गर्भ से पुन: इसी प्रकार एक पुत्र तथा एक पुत्री जन्म लेते। एक गर्भ के बहन भाई का विवाह दूसरे

قَالَ لَاَقْتُلَنَّكَ ؕ قَالَ اِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللّٰهُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿۲۷﴾

उसने कहा कि मैं तुझे अवश्य मार डालूँगा तो उसने कहा कि अल्लाह परहेज़गारों के ही स्वीकार करता है।

لَئِنْۢ بَسَطْتَّ اِلَيَّ يَدَكَ لِتَقْتُلَنِيْ مَآ اَنَا بِبَاسِطٍ يَّدِيَ اِلَيْكَ لِاَقْتُلَكَ ۚ اِنِّيْۤ اَخَافُ اللّٰهَ رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۲۸﴾

(२८) यदि तू मुझे हत करने के लिये हाथ बढ़ायेगा तो मैं तेरी हत्या करने हेतु हाथ नहीं बढ़ा सकता मैं अल्लाह अखिल जगत के पालन हार से डरता हूँ।

اِنِّيْۤ اُرِيْدُ اَنْ تَبُوْٓاَ بِاِثْمِيْ وَاِثْمِكَ فَتَكُوْنَ مِنْ اَصْحٰبِ النَّارِ ۚ وَذٰلِكَ جَزٰٓؤُا الظّٰلِمِيْنَ ﴿۲۹﴾

(२९) मैं चाहता हूँ कि तू मेरा पाप तथा अपना पाप समेट ले[1] और नरकवासियों में हो जाये, तथा यही अत्याचारियों का कुफल है।

فَطَوَّعَتْ لَهٗ نَفْسُهٗ قَتْلَ اَخِيْهِ فَقَتَلَهٗ فَاَصْبَحَ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿۳۰﴾

(३०) बस उसकी इच्छाओं ने उसे भाई की हत्या करने के लिए तैयार कर दिया और

गर्भ के भाई बहन से होता। हबील के साथ पैदा होने वाली बहन कुरूप थी तथा क़ाबील के साथ पैदा होने वाली बहन सुन्दर थी। उस समय के नियमानुसार हाबील का विवाह क़ाबील की बहन से तथा क़ाबील का विवाह हाबील की बहन से होना था, परन्तु क़ाबील चाहता था कि वह अपना विवाह हाबील की बहन के बजाय अपनी ही बहन से कर ले, जो सुन्दर थी। आदरणीय आदम ने उसे समझाया परन्तु वह न माना, अन्त में आदरणीय आदम ने अल्लाह के लिए बलि चढ़ाने का आदेश दिया और कहा कि जिसकी बलि स्वीकार हो जायेगी क़ाबील की बहन का विवाह उसी के साथ कर दिया जायेगा। हाबील की बलि स्वीकार हुई आकाश से अग्नि आयी और उसे खाई जो उसके स्वीकार होने का प्रमाण था। कुछ व्याख्याकारों का कथन है कि वैसे ही दोनों भाईयों ने अपनी-अपनी ओर से अल्लाह तआला के लिये बलि चढ़ाई थी, हाबील ने एक अच्छे बकरे की बलि चढ़ाई तथा क़ाबील ने एक सिट्टे की। हाबील की बलि स्वीकार होने के कारण क़ाबील ईर्ष्या का शिकार हो गया।

[1]मेरे पाप का अर्थ, हत्या का वह पाप जो मुझे उस समय होता, जब मैं तेरी हत्या करता। जैसाकि हदीस में आता है कि हत एवं हत्यारा दोनों नरक में जायेंगें। सहाबा ने पूछा कि हत्यारे का नरक में जाना समझ में आता है, परन्तु जिसकी हत्या की गयी हो वह नरक में क्यों जायेगा ? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उत्तर दिया कि इसलिए कि वह भी हत्यारे की हत्या कर देना चाहता था। (सहीह बुख़ारी तथा मुस्लिम, किताबुल फ़ितन)

उसने उसकी हत्या कर दी, जिससे वह हानि प्राप्त करने वालों में हो गया ।[1]

فَبَعَثَ اللَّهُ غُرَابًا يَبْحَثُ فِي الْأَرْضِ لِيُرِيَهُ كَيْفَ يُوَارِي سَوْءَةَ أَخِيهِ ۚ قَالَ يَا وَيْلَتَىٰ أَعَجَزْتُ أَنْ أَكُونَ مِثْلَ هَٰذَا الْغُرَابِ فَأُوَارِيَ سَوْءَةَ أَخِي ۖ فَأَصْبَحَ مِنَ النَّادِمِينَ ﴿٣١﴾

(३१) फिर अल्लाह (तआला) ने एक कौए को भेजा जो धरती खोद रहा था । कि उसे दिखाये कि वह अपने भाई की लाश (शव) को किस प्रकार छिपा दे । वह कहने लगा हाय अफ़सोस ! क्या मैं ऐसा करने के योग्य भी न रहा कि अपने भाई की लाश को इस कौए की भाँति गाड़ सकता ? फिर तो वह बड़ा दुखी एवं लज्जित हो गया ।

مِنْ أَجْلِ ذَٰلِكَ كَتَبْنَا عَلَىٰ بَنِي إِسْرَائِيلَ أَنَّهُ مَنْ قَتَلَ نَفْسًا

(३२) इसी कारण हमने इस्राईल की संतान पर लिख दिया कि जो व्यक्ति किसी को बिना

---

[1] इसलिए हदीस में आता है ।

« لاَ تُقْتَلُ نَفْسٌ ظُلْمًا إِلاَّ كَانَ عَلَى ابنِ آدَمَ الأَوَّلِ كِفْلٌ مِنْ دَمِها؛ لأَنَّهُ كانَ أَوَّلَ مَنْ سَنَّ القَتْلَ ».

"जो भी हत्या अत्याचार स्वरूप होती है (हत्या के साथ) उसके अनर्थ ख़ून का बोझ आदम के उस पहले पुत्र पर भी होता है क्योंकि यह प्रथम व्यक्ति है जिसने हत्या का कार्य किया ।" (सहीह बुख़ारी किताबुल अंबिया तथा मुस्लिम किताबुल क़िसाम:)

इमाम इब्ने कसीर कहते हैं कि "देखने से यह प्रतीत होता है कि क़ाबील को हाबील की अनर्थ हत्या करने का दंड दुनिया में प्राथमिक रूप से दे दिया गया था । हदीस में भी आता है । नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ।

« مَا مِنْ ذَنْبٍ أَجْدَرُ أَنْ يُعَجِّلَ اللهُ عُقُوبَتَهُ فِي الدُّنْيا مَعَ مَا يَدَّخِرُ لِصَاحِبِهِ فِي الآخِرَةِ؛ مِنَ البَغْيِ وقَطِيعَةِ الرَّحِمِ »

"अत्याचार एवं क्रुरता तथा संबन्ध भंग करना दो इस योग्य पाप है कि अल्लाह तुरंत इनका दंड संसार में दे दे, फिर भी परलोक का दंड इसके अतिरिक्त उसके लिये संचित होगा जो वहाँ भुगतना पड़ेगा ।" (अबू दाऊद किताबुल अदब, इब्ने माजा किताबुल ज़ुहद तथा मुसनद अहमद ५/३६-३८)

और क़ाबील में यह दोनों पाप एकत्रित हो गये थे । (इब्ने कसीर)

بِغَيْرِ نَفْسٍ أَوْ فَسَادٍ فِي الْأَرْضِ فَكَأَنَّمَا قَتَلَ النَّاسَ جَمِيعًا ۖ وَمَنْ أَحْيَاهَا فَكَأَنَّمَا أَحْيَا النَّاسَ جَمِيعًا ۚ وَلَقَدْ جَاءَتْهُمْ رُسُلُنَا بِالْبَيِّنَاتِ ثُمَّ إِنَّ كَثِيرًا مِّنْهُم بَعْدَ ذَٰلِكَ فِي الْأَرْضِ لَمُسْرِفُونَ ﴿٣٢﴾

इसके कि वह किसी का हत्यारा हो अथवा धरती पर उपद्रव उत्पन्न करने वाला हो, हत्या कर डाले तो ऐसा है कि उसने सभी लोगों की हत्या कर दी। तथा जो व्यक्ति एक की जान बचाये, उसने मानो सभी को जीवत कर दिया।[1] और उनके पास हमारे रसूल बहुत-सी स्पष्ट निशानियाँ लेकर आये, परन्तु फिर भी उन में से अधिकतर लोग धरती पर अत्याचार (तथा कठोरता एवं क्रूरता) करने वाले ही रहे।[2]

إِنَّمَا جَزَاءُ الَّذِينَ يُحَارِبُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيَسْعَوْنَ فِي الْأَرْضِ فَسَادًا أَن يُقَتَّلُوا أَوْ يُصَلَّبُوا أَوْ تُقَطَّعَ أَيْدِيهِمْ وَأَرْجُلُهُم مِّنْ خِلَافٍ أَوْ يُنفَوْا مِنَ الْأَرْضِ ۚ ذَٰلِكَ

(३३) उनका दण्ड जो अल्लाह (तआला) से और उसके रसूल से लड़ें तथा धरती पर उपद्रव करें यही है कि वे मार दिये जायें अथवा फाँसी पर चढ़ा दिये जायें अथवा उलटी ओर से उनके हाथ पैर काट दिये जायें, अथवा उन्हें

---

[1]इस अवैध हत्या के बाद अल्लाह तआला ने मानव गण के मूल्य को व्यक्त करने के लिये इस्राईल की सन्तान को यह आदेश उतारा। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि अल्लाह तआला के यहाँ मानवगण का कितना महत्व है तथा कितना आदर है तथा यह नियम केवल इस्राईल की सन्तान के लिये ही नहीं था इस्लाम धर्म की शिक्षाओं के अनुसार भी यह नियम चिरस्थाई है। सुलेमान बिन अली रिबअी कहते हैं कि मैने आदरणीय हसन बसरी से पूछा, "यह नियम हम लोगों के लिये भी है, जिस प्रकार इस्राईल की सन्तान के लिए थी।" उन्होंने उत्तर दिया "हाँ, सौगन्ध है उस शक्ति की जिसके अतिरिक्त कोई पूजने योग्य नहीं। इस्राईल की सन्तान के ख़ून हमारे ख़ूनों से अधिक आदरणीय नहीं थे।"

[2]इसमें यहूदियों की निन्दा की गयी है कि उनके पास सभी नबी स्पष्ट लक्षण तथा शुभ सूचना लेकर आये, परन्तु उनका आचरण सदैव अवज्ञाकारिता तथा सीमा उल्लंघन करने वाला ही रहा। इसमें ऐसा प्रतीत होता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सन्तावना दी जा रही है कि यह आप की हत्या करने तथा हानि पहुँचाने का जो षडयन्त्र करते रहे हैं, यह इनकी कोई नई बात नहीं है। इनका सम्पूर्ण इतिहास इनके छल तथा कपट से परिपूर्ण है आप हर स्थिति में अल्लाह पर भरोसा करें वह उनसे अच्छी उपाय जानता है, वह सभी षडयन्त्रों से बचाने में निपुण है।

لَهُمْ خِزْيٌ فِي الدُّنْيَا وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٣٣﴾

देश से निकाल दिया जाये।[1] यह तो हुई उनका सांसारिक अपमान तथा अनादर तथा आख़िरत में उनके लिए भारी यातना है।

إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا مِن قَبْلِ أَن تَقْدِرُوا عَلَيْهِمْ ۖ فَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ

(३४) परन्तु जो अपने ऊपर तुम्हारे नियन्त्रण से पूर्व क्षमा माँग लें।[2] निःसंदेह अल्लाह तआला

---

[1]इसके उतरने की विशेषता के विषय में आता है कि उकल तथा ओरैना जाति के कुछ लोग मुसलमान होकर मदीना पधारे, उन्हें मदीने की जलवायु का उनके स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ा तो नबी . करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें मदीने से बाहर, जहाँ दान के ऊँट थे, भेज दिया कि उनका दूध-मूत्र, पियो, अल्लाह स्वस्थ करेगा। अतः कुछ दिनों बाद वे स्वस्थ हो गये, परन्तु उसके पश्चात उन्होंने ऊँटों के रखवाले चरवाहों की हत्या कर दी तथा ऊँट हँका कर ले गये। जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इस विषय में सूचना प्राप्त हुई तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके पीछे आदमी दौड़ाये, जो उन्हें ऊँटों सहित पकड़ लाये। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके हाथ-पैर उल्टी ओर से काट डाले, उनकी आँखों में गर्म सलाखें डलवायी (क्योंकि उन्होंने भी चरवाहे के साथ ऐसा ही किया था) फिर उन्हें धूप में डाल दिया गया, यहाँ तक कि वे वहीं मर गये। सहीह बुख़ारी में यह शब्द भी आते हैं कि उन्होंने चोरी भी की तथा हत्या भी की, ईमान लाने के पश्चात कुफ्र भी किया, तथा अल्लाह तथा रसूल से युद्ध भी। (सहीह बुख़ारी किताबुल दयात वल तिब्ब वल तफ़सीर, सहीह मुस्लिम किताबुल क़सामः) । यह आयत मुहारबा कहलाती है। यह सामान्य आदेश है अर्थात मुसलमान तथा काफ़िर दोनों के लिये हैं। मुहारबा का अर्थ है कि किसी संगठित तथा शस्त्रों से सुसज्जित जत्थे का इस्लामी राज्य के भीतर अथवा उसके निकट जंगल आदि में राह चलते क़ाफ़िलों अथवा व्यक्ति अथवा समूह पर हमला करना, हत्या तथा उपद्रव करना, चोरी-छिपे अपहरण करना, बलात्कार करना आदि। इसके जो चार दंड बताये गये हैं, इमाम (समय के शासक) को अधिकार है कि उसमें से जो दंड देना उचित समझे दे। कुछ लोग कहते है कि यदि मुहारिबों ने हत्या, चोरी तथा आतंक फैलाया हो तो उनको मृत्यु दंड (हत्या अथवा फाँसी) दिया जायेगा तथा जिसने केवल हत्या की तथा माल नहीं लिया, उसकी भी हत्या की जायेगी, तथा जिसने हत्या भी की और माल भी छीना उसका एक दाहिना हाथ तथा बायाँ पैर अथवा बायाँ हाथ तथा दाहिना पैर काट दिया जायेगा। तथा जिसने न हत्या की एवं न माल छीना उसने केवल आतंक फैलाया, उसे देश से निकाल दिया जायेगा। इमाम शौकानी का कथन है कि पहली बात उचित है कि दंड देने में इमाम को अधिकार है। (फ़तहुल क़दीर)

[2]यदि गिरफ़्तार होने से पूर्व वह क्षमा माँग कर इस्लामी राज्य की शरण में आने की घोषणा कर दे तो फिर उनको क्षमा कर दिया जायेगा, वर्णित दंड नहीं दिये जायेंगे।

غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٣٤﴾

अत्यधिक क्षमाशील तथा अत्याधिक कृपालु एवं दयालु है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَابْتَغُوا إِلَيْهِ الْوَسِيلَةَ وَجَاهِدُوا فِي سَبِيلِهِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٣٥﴾

(३५) हे मुसलमानों ! अल्लाह तआला से डरते रहो तथा उसकी ओर निकटता प्राप्त करने का प्रयत्न करो ।[1] तथा उसके मार्ग में धर्म युद्ध करो ताकि तुम्हारी भलाई हो ।

परन्तु फिर इस विषय में मतभेद है कि दंड की क्षमा के साथ उन्होंने हत्या करके अथवा माल लूट कर अथवा बलात्कार करके मनुष्यों को जो कष्ट दिये हैं यह अपराध भी क्षमा किये जायेंगे अथवा उनका बदला लिया जायेगा। कुछ आलिमों के निकट यह क्षमा नहीं किये जायेंगे अपितु इनका बदला लिया जायेगा। इमाम शौकानी तथा इमाम इब्ने कसीर का झुकाव इस ओर है कि उनको क्षमा किया जायेगा। और इसको प्रत्यक्ष आयत का उद्देश्य बताया है । परन्तु गिरफ़्तारी के पश्चात क्षमा माँगने से अपराध क्षमा न होंगे, वह दंड के अधिकारी होंगे। (फ़तहुल क़दीर तथा इब्ने कसीर)

[1]वसीला (وسيلة) का अर्थ ऐसा विषय है जो किसी उद्देश्य की प्राप्ति तथा उसके सामिप्य का साधन बने। "अल्लाह तआला की निकटता प्राप्त करने का कारण प्रयत्न करो" का अर्थ होगा कि ऐसे कर्म करो जिससे तुम्हें अल्लाह की प्रसन्नता तथा उसकी निकटता प्राप्त हो। इमाम शौकानी का कथन है "वसीला अर्थात सामिप्य संयम आदि वह सत्कर्म हैं जिनके माध्यम से भक्त अल्लाह की निकटता प्राप्त करते हैं।" इसी प्रकार प्रतिबंधित तथा निषेध वस्तुओं तथा कर्मों से बचने से भी अल्लाह की निकटता प्राप्त होती है, इसलिए प्रतिबंधित तथा निषेध वस्तुओं तथा कर्मों को छोड़ना भी अल्लाह की निकटता प्राप्त करने का माध्यम है। परन्तु मूर्खो ने इस वास्तविक माध्यम को छोड़ कर क़ब्र में गड़े लोगों को अपना माध्यम बना लिया है। जिसका धार्मिक नियमों में कोई स्थान नहीं है। अपितु हदीस में उस मोक़ामे महमूद (उच्च स्थान) को भी वसीला कहा गया है जो स्वर्ग में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को प्रदान किया जायेगा। इसीलिए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो भी अज़ान के पश्चात मेरे लिये इस माध्यम की प्रार्थना करेगा, वह मेरी शिफ़ाअत का पात्र होगा। (सहीह बुख़ारी किताबुल अज़ान, सहीह मुस्लिम किताबुल सलात) दुआए वसीला :

« اللَّهُمَّ! رَبَّ هٰذِهِ الدَّعْوَةِ التَّامَّةِ، وَالصَّلٰوةِ الْقَائِمَةِ؛ آتِ مُحَمَّدًا الْوَسِيلَةَ وَالْفَضِيلَةَ وَابْعَثْهُ مَقَامًا مَّحْمُودًا الَّذِي وَعَدْتَهُ »

(३६) विश्वास करो, कि काफ़िरों के लिए यदि वह सब कुछ हो जो सारी धरती में है, तथा उसके समान और अधिक भी हो और वह उन सबको क़ियामत के दिन की यातना के बदले प्रतिशोध में देना चाहें तो भी असम्भव है कि उनसे स्वीकार कर लिया जाये, उनके लिए तो दुखदायी यातना है ।[1]

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْ أَنَّ لَهُم مَّا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لِيَفْتَدُوا بِهِ مِنْ عَذَابِ يَوْمِ الْقِيَامَةِ مَا تُقُبِّلَ مِنْهُمْ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٣٦﴾

(३७) वे चाहेंगे की नरक से निकल जायें । परन्तु वे कदापि उसमें से न निकल सकेंगे उनके लिए तो स्थाई यातनायें हैं ।[2]

يُرِيدُونَ أَن يَخْرُجُوا مِنَ النَّارِ وَمَا هُم بِخَارِجِينَ مِنْهَا ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ﴿٣٧﴾

(३८) चोर तथा चोरनी का हाथ काट दो[3] यह उनके करतूत का बदला तथा अल्लाह की

وَالسَّارِقُ وَالسَّارِقَةُ فَاقْطَعُوا أَيْدِيَهُمَا جَزَاءً بِمَا كَسَبَا نَكَالًا

---

[1]हदीस मे आता है कि एक नरकवासी को नरक से निकाल कर अल्लाह तआला के समक्ष लाया जायेगा । अल्लाह तआला उससे पूछेगा कि "तूने अपना विश्राम स्थान कैसा पाया ?" वह कहेगा, "बहुत बुरा विश्राम स्थल ।" अल्लाह तआला फ़रमायेगा, "क्या तू धरती भर के स्वर्ण इससे छुटकारा प्राप्त करने के लिए बदला स्वरूप देना पसन्द करेगा ?" वह सकारात्मक उत्तर देगा । अल्लाह तआला फ़रमायेगा, मैंने तो दुनिया में इससे भी बहुत कम की माँग तुझसे की थी, तूने उसका कोई ध्यान नहीं दिया और उसे पुन: नरक में डाल दिया जायेगा । (सहीह मुस्लिम सिफ़तुल क़ियाम:, सहीह बुख़ारी अल-रिक़ाक़ वल अंबिया)

[2]यह आयत काफ़िरों (विश्वासहीन) के लिए है क्योंकि ईमानवालों को दण्ड के उपरान्त नरक से निकाल लिया जायेगा जैसाकि हदीस से इसकी पुष्टि होती है ।

[3]कुछ विचारकों के अनुसार चोरी का यह आदेश सामान्य है । चोरी थोड़ी सी वस्तु की हो या बहुत-सी वस्तु की । इसी प्रकार वह सुरक्षित स्थान पर रखी हो अथवा असुरक्षित स्थान पर रखी हो प्रत्येक अवस्था में चोरी का दण्ड दिया जायेगा । जब कि दूसरे विचारकों के निकट इसके लिए सुरक्षित तथा निर्धारित आवश्यक है । फिर मात्रा के निर्धारण में मतभेद हैं । हदीस के ज्ञाताओं के निकट कम से कम मात्रा चौथाई दीनार अथवा तीन दिरहम के अथवा उसके समुल्य की कोई चीज़ हो, इससे कम की चोरी पर हाथ नहीं काटा जायेगा । इसी प्रकार हाथ कलाईयों से काटे जायेंगे, कोहनी अथवा कधों से नहीं । जैसाकि कुछ का विचार है । (विस्तृत जानकारी के लिए हदीस, फ़िक्ह तथा तफ़सीर की पुस्तकों का अध्ययन किया जाये)

مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٣٨﴾

ओर से दण्ड है, तथा अल्लाह तआला शक्तिशाली तथा पूर्ण वैज्ञानिक है।

فَمَنْ تَابَ مِنْۢ بَعْدِ ظُلْمِهٖ وَاَصْلَحَ فَاِنَّ اللّٰهَ يَتُوْبُ عَلَيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٣٩﴾

(३९) जो अपने पाप के पश्चात क्षमा माँग ले तथा सुधार कर ले, तो अल्लाह (तआला) दया के रूप में उसकी ओर आकर्षित होता है।[1] निःसन्देह अल्लाह तआला क्षमाशील कृपानिधि है।

اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٤٠﴾

(४०) क्या तुझे ज्ञात नहीं कि अल्लाह (तआला) के लिए आकाशों तथा धरती का राज्य है? जिसे चाहे दण्ड दे, जिसे चाहे क्षमा कर दे। अल्लाह तआला प्रत्येक वस्तु पर प्रभुत्व रखने वाला है।

يٰۤاَيُّهَا الرَّسُوْلُ لَا يَحْزُنْكَ الَّذِيْنَ يُسَارِعُوْنَ فِي الْكُفْرِ مِنَ الَّذِيْنَ قَالُوْۤا اٰمَنَّا بِاَفْوَاهِهِمْ وَلَمْ تُؤْمِنْ قُلُوْبُهُمْ ۛ وَمِنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا ۛ سَمّٰعُوْنَ لِلْكَذِبِ سَمّٰعُوْنَ لِقَوْمٍ اٰخَرِيْنَ ۙ لَمْ يَاْتُوْكَ ؕ يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ

(४१) हे रसूल! आप उनके लिये दुखी न हों जो अविश्वास में दौड़ लगा रहे हैं जिन्होंने अपने मुखों से कहा कि हमने विश्वास किया तथा उनके दिलों ने विश्वास नहीं किया[2] तथा जो यहूदी हो गये, उनमें कुछ झूठ सुनने के अभ्यासी तथा अन्य लोगों के गुप्तचर हैं, जो आप के पास नहीं आये। वह शब्दों को उनके स्थानों से फेर देते हैं, कहते हैं कि यदि तुम

---

[1]इस क्षमा से तात्पर्य अल्लाह के यहाँ क्षमा की स्वीकृति है, यह नहीं कि क्षमा माँग लेने से चोरी अथवा किसी दंडनीय अपराध का दंड क्षमा हो जायेगा। दंड संहितायें पश्चाताप से क्षमा नहीं की जायेंगी।

[2]नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कृतघ्नों तथा मिश्रणवादियों के ईमान न लाने के कारण तथा सीधे मार्ग न अपनाने के कारण जो दुख तथा खेद होता था, उस पर अल्लाह तआला अपने पैग़म्बर को अधिक दुखी न होने का निर्देश दे रहा है ताकि इस प्रकार आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह संतोष रहे कि ऐसे लोगों के विषय में अल्लाह तआला मुझसे न पूछेगा।

यह दिये जाओ तो मान लो तथा यह (आदेश) न दिये जाओ तो अलग रहो ।[1] और जिसे

مِنْ بَعْدِ مَوَاضِعِهِ ۚ يَقُولُونَ إِنْ أُوتِيتُمْ هَٰذَا فَخُذُوهُ وَإِن لَّمْ تُؤْتَوْهُ فَاحْذَرُوا ۚ

---

[1]आयत संख्या ४१ से ४४ तक के उतरने के विषय में दो घटनाओं का वर्णन होता है। प्रथम दो विवाहित यहूदी बलात्कारों (पुरूष-स्त्री) का। उन्होंने तो अपनी किताब तौरात में परिवर्तन कर डाला था, इसके अतिरिक्त उसके कुछ आदेशों का पालन भी नहीं करते थे। इसी प्रकार पत्थरों से मारकर विवाहित बलात्कारियों को मार डालने के दण्ड का आदेश उनकी किताब में था तथा अब भी है। परन्तु वे इस दण्ड से बचना भी चाहते थे इसलिए आपस में निर्णय किया कि मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास चलते हैं, यदि वह हमारे बनाये हुए दण्ड कोड़ों की मार अथवा मुंह काला करने के निर्णय को मान लेते हैं, तो मान जायेंगे तथा यदि पत्थरों से मार कर मार डालने का निर्णय करेंगे तो नहीं मानेंगे। अत: आदरणीय अब्दुल्लाह बिन उमर फ़रमाते हैं कि यहूदी मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा कि तौरात में पत्थरों से मारकर मार डालने के विषय में क्या है ? उन्होंने कहा तौरात में बलात्कार का दण्ड कोड़े मारना तथा अपमानित करना है अब्दुल्लाह बिन सलाम ने कहा कि तुम झूठ बोलते हो, तौरात में पत्थरों से मारकर मार डालने का आदेश विद्यमान है, जाओ तौरात लाओ, तौरात लाकर वह पढ़ने लगे तो पत्थर से मारकर मार डालने वाली आयत (मंत्र) पर हाथ रख कर आगे-पीछे की आयतें पढ़ दीं। अब्दुल्लाह बिन सलाम ने कहा कि हाथ हटाओ, जब हाथ हटाया गया तो वहां पत्थरों से मारने की आयत विद्यमान थी। अन्तत: उन्हें स्वीकर करना पड़ा कि मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सच कहते हैं। तौरात में पत्थरों से मारने का दण्ड विद्यमान है। अत: दोनों बलात्कारियों को पत्थरों से मारकर मार डाला गया। (देखें सहीहैन तथा अन्य हदीस की पुस्तकें) एक अन्य घटना का वर्णन इस प्रकार आता है कि यहूदियों का एक क़बीला अपने को दूसरे क़बीले से अधिक श्रेष्ठ तथा सम्मानित समझता था और इसके अनुसार अपने हत का आर्थिक दण्ड हत्यारे से लेने का मूल्य सौ (वस्क़) तथा दूसरे क़बीले का पचास वस्क़ निर्धारित कर रखा था। जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीने पधारे तो यहूदियों के दूसरे क़बीले को कुछ साहस हुआ, जिनके हत के रक्त का मूल्य हत्यारे से आधी लिया जाता था तथा उसने रक्त का मूल्य सौ वस्क देने से मना कर दिया। निकट था कि उनके मध्य लड़ाई छिड़ जाती, परन्तु उनके समझदार लोग नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से निर्णय कराने को तैयार हो गये। इस समय यह आयत उतरी। जिसमें एक आयत में रक्त के मूल्य में समानता का आदेश दिया गया। (यह कथन मुसनद अहमद में है, जिसके प्रमाण को शेख़ अहमद शाकिर ने सही कहा है। मुसनद अहमद भाग १, पृष्ठ हदीस संख्या २२१२) इमाम इब्ने कसीर का कथन है, सम्भव है कि दोनों घटनायें एक ही समय में घटित हों तथा उन सबके लिए ये आयतें उतरी हों। (इब्ने कसीर)

وَمَنْ يُّرِدِ اللّٰهُ فِتْنَتَهٗ فَلَنْ تَمْلِكَ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَمْ يُرِدِ اللّٰهُ اَنْ يُّطَهِّرَ قُلُوْبَهُمْ ؕ لَهُمْ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ ۚۖ وَّلَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿۴۱﴾

अल्लाह भटकाना चाहे उसके लिये अल्लाह पर आप का तनिक अधिकार नहीं है। इन्हीं के दिलों को अल्लाह पवित्र नहीं करना चाहता इन्हीं के लिये संसार में अपमान तथा आख़िरत (परलोक) में भारी दंड है।

سَمّٰعُوْنَ لِلْكَذِبِ اَكّٰلُوْنَ لِلسُّحْتِ ؕ فَاِنْ جَآءُوْكَ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ اَوْ اَعْرِضْ عَنْهُمْ ۚ وَاِنْ تُعْرِضْ عَنْهُمْ فَلَنْ يَّضُرُّوْكَ شَيْـًٔا ؕ وَاِنْ حَكَمْتَ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ﴿۴۲﴾

(४२) यह कान लगा-लगा कर झूठ सुनने वाले[1] तथा जी भर-भर कर हराम खाने वाले हैं। यदि यह तुम्हारे पास आयें तो तुम्हें अधिकार है चाहो तो उनके बीच निर्णय कर दो, चाहो तो न करो, यदि तुम उनसे मुहँ मोड़ भी लोगे, तो भी ये तुम्हें कोई हानि नहीं पहुँचा सकते और यदि तुम निर्णय करो तो उनमें न्याय के साथ निर्णय करो, निःसन्देह न्याय करने वालों के साथ अल्लाह तआला प्रेम रखता है।

وَكَيْفَ يُحَكِّمُوْنَكَ وَعِنْدَهُمُ التَّوْرٰىةُ فِيْهَا حُكْمُ اللّٰهِ ثُمَّ يَتَوَلَّوْنَ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ ؕ وَمَآ اُولٰٓئِكَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۴۳﴾

(४३) तथा (आश्चर्य की बात है कि) वह कैसे अपने पास तौरात होते हुए, जिसमें अल्लाह के आदेश हैं तुमको निर्णायक बनाते हैं। फिर उसके पश्चात पलट जाते हैं। वास्तव में ये ईमान तथा विश्वास वाले नहीं हैं।

اِنَّآ اَنْزَلْنَا التَّوْرٰىةَ فِيْهَا هُدًى وَّنُوْرٌ ۚ يَحْكُمُ بِهَا النَّبِيُّوْنَ

(४४) हमने तौरात उतारी है जिसमें मार्गदर्शन तथा प्रकाश ज्योति है। यहूदियों में इसी तौरात

---

[1] سمّاعون (सम्माऊना) का अर्थ है "अत्यधिक सुनने वाला" इसके दो भावार्थ हो सकते हैं। भेद जानने के लिए बहुत अधिक सुनना अथवा दूसरों की बातें जानने के लिए सुनना। कुछ व्याख्याकारों ने पहला अर्थ लिया है और कुछ ने दूसरा।

الَّذِينَ أَسْلَمُوا لِلَّذِينَ هَادُوا وَالرَّبَّانِيُّونَ وَالْأَحْبَارُ بِمَا اسْتُحْفِظُوا مِن كِتَابِ اللَّهِ وَكَانُوا عَلَيْهِ شُهَدَاءَ ۚ فَلَا تَخْشَوُا النَّاسَ وَاخْشَوْنِ وَلَا تَشْتَرُوا بِآيَاتِي ثَمَنًا قَلِيلًا ۚ وَمَن لَّمْ يَحْكُم بِمَا أَنزَلَ اللَّهُ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْكَافِرُونَ ﴿٤٤﴾

द्वारा अल्लाह के मानने वाले,[1] अंबिया (अलैहिमुस्सलाम) तथा अल्लाह वाले और ज्ञानी निर्णय किया करते थे क्योंकि उन्हें अल्लाह की इस किताब की सुरक्षा का आदेश दिया गया था।[2] तथा वे इस पर स्वीकार करने वाले गवाह थे।[3] अब तुम्हें चाहिए कि लोगों से न डरो। बल्कि मुझसे डरो, मेरी आयतों को थोड़े-थोड़े मूल्य पर न बेचो।[4] और जो

---

[1] أَسْلَمُوا (असलमू) यह नवियों की विशेषता का वर्णन है कि वे सभी नबी इस्लाम धर्म के अनुयायी थे, जिसकी ओर मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आमन्त्रण दे रहे हैं। अर्थात सभी नवियों का धर्म एक ही रहा है। इस्लाम जिसकी आधारशिला है कि एक अल्लाह की इवादत (उपासना) तथा उसकी इवादत में किसी को सम्मिलित न किया जाये। प्रत्येक नवी ने सर्वप्रथम एकेश्वर तथा उसके साथ किसी को भी सम्मिलित न करने का आमन्त्रण दिया।

﴿وَمَا أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ مِن رَّسُولٍ إِلَّا نُوحِي إِلَيْهِ أَنَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا أَنَا فَاعْبُدُونِ﴾

"हमने आप से पूर्व जितने भी रसूल भेजे सभी को यही प्रकाशना (वह्यी) की कि मेरे अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं है, वस तुम सव मेरी इवादत (वंदना) करो।" (सूर: अल-अंविया-२५)

इसको क़ुरआन में الدين (अद्-दीन) भी कहा गया है। जैसाकि सूर: शूरा की आयत संख्या १३ में भी इसी विषय का वर्णन किया गया है।

﴿شَرَعَ لَكُم مِّنَ الدِّينِ مَا وَصَّىٰ بِهِ نُوحًا﴾

"हमने आपके लिए वही धर्म निर्धारित किया है जो आप से पूर्व अन्य नबियों के लिए किया था।"

[2] अतः उन्होंने तौरात में कोई परिवर्तन नहीं किया, जिस प्रकार वाद में लोगों ने किया।

[3] कि यह किताव किसी कमी अथवा अधिकता से सुरक्षित है और अल्लाह की ओर से उतारी गयी है।

[4] अर्थात लोगों से डर कर तौरात के वास्तविक आदेश पर पर्दा न डालो, न दुनिया के थोड़े से लाभ के लिए उनमें परिवर्तन करो।

अल्लाह की उतारी हुई प्रकाशनाओं (वह्यी) के आधार पर निर्णय न करें वे पूर्ण तथा परिपंक्व काफ़िर हैं ।[1]

(४५) और हमने (तौरात) में यहूदियों के अधिकार में यह बात निर्धारित कर दी है कि जान के बदले जान और आँख के बदले आँख तथा नाक के बदले नाक एवं कान के बदले कान व दाँत के बदले दाँत तथा विशेष घावों का भी बदला है ।[2] फिर जो व्यक्ति उसको क्षमा कर दे तो वह उसके लिए प्रायश्चित है तथा जो लोग अल्लाह के आदेशों के अनुसार निर्णय न करें, वही लोग अत्याचारी हैं ।[3]

وَكَتَبْنَا عَلَيْهِمْ فِيهَا أَنَّ النَّفْسَ بِالنَّفْسِ وَالْعَيْنَ بِالْعَيْنِ وَالْأَنْفَ بِالْأَنْفِ وَالْأُذُنَ بِالْأُذُنِ وَالسِّنَّ بِالسِّنِّ وَالْجُرُوحَ قِصَاصٌ ۚ فَمَنْ تَصَدَّقَ بِهِ فَهُوَ كَفَّارَةٌ لَهُ ۚ وَمَنْ لَمْ يَحْكُمْ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿٤٥﴾

---

[1]फिर किस प्रकार तुम ईमान के बदले कुफ़्र (अविश्वास) के लिए तैयार हो गये ?

[2]जब तौरात में प्राण के बदले प्राण तथा घावों में बदले का आदेश दिया गया था तो यहूदियों के एक क़बीले (बनू नदीर) को दूसरे क़बीले (बनू कुरैज़ा) से इसके अतिरिक्त व्यवस्था करना तथा अपने हत द्वारा मृतक का बदला अन्य क़बीलों से दुगना लेने का क्या औचित्य है ? जैसाकि इसकी विस्तृत जानकारी पिछले पृष्ठों में आ चुकी है ।

[3]यह इस बात की ओर संकेत है कि जिस क़बीले ने उपरोक्त निर्णय किया था । यह अल्लाह के द्वारा उतारे गये आदेश के विपरीत था तथा इस प्रकार उन्होंने अत्याचार किया । अर्थात मनुषय इस बात के लिए प्रतिबंधित है कि वह अल्लाह के आदेशों को अपनाये तथा उसी के आधार पर निर्णय करे तथा जीवन की सभी समस्याओं में उसी के प्रकाश में समाधान निकाले । यदि वह ऐसा नहीं करेगा तो अल्लाह तआला के समक्ष अत्याचारी तथा दुराचारी एवं काफ़िर माना जायेगा । ऐसे लोगों के लिए अल्लाह तआला ने तीनों शब्दों का प्रयोग करके अपने क्रोध का प्रदर्शन किया है । इसके उपरान्त भी मनुष्य अपने बनाये हुए नियमों तथा अपनी इच्छाओं को श्रेष्ठता दे तो इससे बड़ा दुर्भाग्य क्या होगा ?

टिप्पणी : धर्मशास्त्रियों ने लिखा है कि पिछले धर्मों के जिन नियमों का आदेश अल्लाह तआला ने निरन्तर रखा है, हमारे लिए भी उसके अनुसार कर्म करना आवश्यक है और इस आयत में वर्णित आदेश निरस्त नहीं हुए है । इसलिए यह भी इस्लाम धर्म के नियमों

وَقَفَّيْنَا عَلَىٰٓ اٰثَارِهِمْ بِعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرٰىةِ ۪ وَاٰتَيْنٰهُ الْاِنْجِيْلَ فِيْهِ هُدًى وَّنُوْرٌ ۙ وَّمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَهُدًى وَّمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِيْنَ ۟

(४६) और हमने उनके पीछे ईसा पुत्र मरियम को भेजा, जो अपने से पूर्व की किताब अर्थात तौरात की पुष्टि करने वाले थे।[1] तथा हमने उन्हें इंजील प्रदान की जिसमें प्रकाश तथा मार्गदर्शन था तथा वह अपने से पूर्व की किताब तौरात की पुष्टि करती थी तथा वह स्पष्ट मार्ग दर्शन तथा शिक्षा थी अल्लाह तआला से डरने वालों के लिए।[2]

के आदेश हैं। जैसाकि हदीस से इसकी पुष्टि होती है। इसी प्रकार हदीस में النفس با لنفس (जान के बदले जान) के सामान्य आदेश से दो अवस्थायें अलग हैं कि कोई मुसलमान अगर किसी काफ़िर की हत्या कर दे तो बदले में उस मुसलमान को उसी प्रकार ग़ुलाम (दास) के बदले स्वतन्त्र को हत नहीं किया जायेगा। (विस्तार के लिए देखें फ़तहुल बारी व नैलुल अवतार आदि)

[1]अर्थात विगत नबियों के तत्पश्चात ही आदरणीय ईसा को भेजा जो अपने पूर्व उतारी गयी किताब तौरात की पुष्टि करने वाले थे, उसको झुठलाने वाले नहीं, जो इस बात का प्रमाण है कि आदरणीय ईसा भी अल्लाह के सत्य रसूल हैं और उसी अल्लाह के भेजे हुए हैं जिसने आदरणीय मूसा पर तौरात उतारी थी, इसके उपरान्त भी यहूदियों ने आदरणीय ईसा अलैहिस्सलाम को झुठलाया, तथा उनके आदेशों का विरोध और अनादर एवं अपमान किया।

[2]अर्थात जिस प्रकार तौरात अपने समय में लोगों के मार्गदर्शन का साधन थी। इसी प्रकार इंजील के उतरने के उपरान्त यही स्थान इंजील को प्राप्त हो गयी तथा फिर क़ुरआन करीम के उतरने के बाद तौरात, तथा इंजील एवं अन्य आसमानी पुस्तकों के आदेशों के अनुसार कर्म करना निरस्त कर दिया गया तथा मार्गदर्शन एवं मोक्ष का मात्र एक साधन पवित्र क़ुरआन रह गया और इसी पर अल्लाह तआला ने आसमानी किताबों की श्रृंखला समाप्त कर दी। अतएव यह इस बात की घोषणा है कि क़ियामत तक जन्म लेने वाले सभी मनुष्यों की भलाई तथा सफलता इसी क़ुरआन से सम्बन्धित है, जो इससे सम्बन्धित हो गया, सम्मानित हो गया, जो अलग हो गया असफलता तथा अपमान उसका भाग्य बन गया है। इससे ज्ञात हुआ कि सर्व धर्म संभाव: का विचार एकदम अनुचित है सत्य हर समय में एक ही रहा है, अनेक नहीं। सत्य के अतिरिक्त प्रत्येक असत्य है। तौरात अपने समय की सत्य थी, उसके पश्चात इंजील अपने समय की सत्य थी, इंजील के उतरने के पश्चात तौरात के अनुसार कार्य उचित नहीं था, तथा जब क़ुरआन उतरा, तो इंजील निरस्त

وَلْيَحْكُمْ أَهْلُ الْإِنْجِيلِ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ فِيهِ ۚ وَمَنْ لَمْ يَحْكُمْ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ﴿٤٧﴾

(४७) तथा इंजील वालों को भी चाहिए कि अल्लाह तआला ने जो कुछ इंजील में उतारा है, उसी के अनुसार आदेश करें।[1] तथा जो अल्लाह तआला के उतारे हुए से ही आदेश न करें वे कुकर्मी दुराचारी हैं।

وَأَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ الْكِتَابِ وَمُهَيْمِنًا عَلَيْهِ ۖ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ ۖ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَهُمْ عَمَّا جَاءَكَ مِنَ الْحَقِّ ۚ لِكُلٍّ جَعَلْنَا مِنْكُمْ

(४८) तथा हमने आप की ओर सत्य से परिपूर्ण यह किताब उतारी है, जो अपने से पूर्व की सभी किताबों की पुष्टि करती है तथा उनकी रक्षक है।[2] इसलिए आप उनके बीच अल्लाह की उतारी हुई किताब के अनुसार निर्णय कीजिए[3] इस सत्य से हटकर उनकी

हो गयी, इंजील के अनुसार कार्य उचित नहीं रहा तथा केवल क़ुरआन ही मात्र एक कार्यक्रम तथा मोक्ष के लिए कर्म काण्ड रह गया है। इस पर आस्था बिना अर्थात मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबूवत (दूतत्व) को स्वीकार किये बीना मोक्ष सम्भव नहीं और जानकारी के लिए देखें *सूर: अल-बक़र:* की आयत संख्या ६२ की व्याख्या।

[1]इंजील के अनुपालकों को यह आदेश उस समय तक था, जब तक आदरणीय ईसा की नबूवत का काल था। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आगमन के पश्चात आदरणीय ईसा की नबूवत का काल भी समाप्त हो गया। तथा इंजील के आदेशों का पालन भी समाप्त हो गया। अब ईमानवाला वही समझा जायेगा जो मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत (दूतत्व) पर ईमान लायेगा और क़ुरआन करीम के आदेशों का पालन करेगा।

[2]प्रत्येक आसमानी किताब अपने से पूर्व की आसमानी किताबों की पुष्टि करने वाली ही रही है, जिस प्रकार क़ुरआन भूतपूर्व आसमानी किताबों की पुष्टि करने वाला है। पुष्टि का अर्थ यह है कि ये सभी किताबें वास्तव में अल्लाह की उतारी हुई किताबें हैं। परन्तु क़ुरआन प्रमाण शास्त्र होने के साथ-साथ مُهيمن (रक्षक, विश्वास साक्षी तथा निर्णायक) भी है। अर्थात पूर्व की किताबों में चूंकि परिवर्तन भी हुआ है इसलिए क़ुरआन का निर्णय मान्य होगा, जिसको यह उचित कहेगा वह उचित शेष अनुचित तथा असत्य है।

[3]इससे पूर्व आयत संख्या ४६ में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह अधिकार दिया गया था कि आप उनके विवाद में निर्णय करें अथवा न करें आपकी इच्छा है। परन्तु अब उसके स्थान पर यह आदेश दिया जा रहा है कि उनके आपसी विवादों का भी निर्णय क़ुरआन के आदेश के अनुसार ही करें।

شِرْعَةً وَّمِنْهَاجًا ۚ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَعَلَكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ لِّيَبْلُوَكُمْ فِيْ مَآ اٰتٰىكُمْ فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ ۚ اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿٤٨﴾

इच्छाओं के अनुसार न जाईये ।[1] तुम में से प्रत्येक के लिए हम ने एक विधान तथा मार्ग निर्धारित कर दिया है ।[2] यदि अल्लाह चाहता तो तुम सब को एक ही समुदाय बना देता, परन्तु वह चाहता है कि जो तुम्हें दिया है, उसमें तुम्हारी परीक्षा ले ।[3] तुम पुण्य की ओर शीघ्रता करो, तुम सबको अल्लाह ही की ओर पलट कर जाना है, फिर वह तुम्हें हर वह चीज़ बता देगा जिसमें तुम मतभेद रखते हो ।

وَاَنِ احْكُمْ بَيْنَهُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ

(४९) तथा आप उनके विवाद में अल्लाह की उतारी हुई प्रकाशनाओं (वह्यी) के अनुसार

---

[1]यह वास्तव में अनुयायियों को शिक्षा जा दी रही है कि अल्लाह की उतारी हुई किताब से हटकर लोगों की ईच्छाओं के तथा विचारों तथा उनके स्वयं अपने बनाये हुए नियम के अनुसार निर्णय करना भटकावा है, जिसकी आज्ञा पैग़म्बर (ईशदूत) को नहीं तो भला किसी अन्य को यह अधिकार किस प्रकार प्राप्त हो सकता है ।

[2]इससे तात्पर्य पूर्व के धर्मिक नियम हैं, जिनमें कुछ आदेश एक-दूसरे से भिन्न थे । एक धर्म के नियम में कोई चीज़ अवैध तथा दूसरे धर्म के नियम में वही वैध थी कुछ में किसी समस्या में कड़ाई थी तो दूसरे में सुविधा थी । परन्तु धर्म सभी एक अर्थात एकेश्वरवाद पर आधारित था । इस प्रकार सभी का आमन्त्रण एक था । इस विषय को एक हदीस में इस प्रकार से वर्णन किया गया ।

« نَحْنُ مَعَاشِرَ الأَنْبِيَاءِ إِخْوَةٌ لِعَلَّاتٍ ، دِيْنُنَا وَاحِدٌ ».

"हम नबियों का गुट अल्लाती भाई है हमारा धर्म एक है ।" (सहीह बुख़ारी)

"अल्लाती भाई" वह होते हैं जिनकी मातायें भिन्न हों, परन्तु पिता एक हो । अत: इसका अर्थ यह हुआ कि इनका धर्म एक ही था, परन्तु धार्मिक नियम भिन्न थे । लेकिन इस्लामी नियम के उपरान्त अब सभी नियम निरस्त हो गये तथा अब धर्म भी एक है और नियम भी एक है ।

[3]अर्थात क़ुरआन के उतरने के उपरान्त अब मोक्ष तो इसी से सम्बन्धित है । परन्तु हमें मोक्ष के मार्ग को अपनाने के लिए अल्लाह तआला ने कोई दबाव नहीं रखा है, वरन् वह चाहता तो वह ऐसा कर सकता था, परन्तु इस प्रकार तुम्हारी परीक्षा सम्भव न थी, जबकि वह तुम्हारी परीक्षा लेना चाहता है ।

وَاحْذَرْهُمْ اَنْ يَّفْتِنُوْكَ عَنْۢ بَعْضِ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ اِلَيْكَ ؕ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاعْلَمْ اَنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّصِيْبَهُمْ بِبَعْضِ ذُنُوْبِهِمْ ؕ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ لَفٰسِقُوْنَ ﴿٤٩﴾

निर्णय दीजिए। उनकी इच्छाओं का पालन न कीजिए तथा उनसे सावधान रहिये कि कहीं ये आपको अल्लाह के उतारे हुए किसी आदेश से विचलित न कर दें, यदि यह मुहँ मोड़ लें तो विश्वास करो कि अल्लाह का यही विचार है कि उन्हें उनके कुछ पापों का दण्ड दे ही दे तथा अधिकतर लोग अवज्ञाकारी होते हैं।

اَفَحُكْمَ الْجَاهِلِيَّةِ يَبْغُوْنَ ؕ وَمَنْ اَحْسَنُ مِنَ اللّٰهِ حُكْمًا لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ﴿٥٠﴾

(५०) क्या यह लोग पुन: अवज्ञानात्मक निर्णय चाहते हैं ?[1] और विश्वास रखने वालों के लिए अल्लाह (तआला) से श्रेष्ठ निर्णायक तथा आदेश करने वाला कौन हो सकता है।[2]

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الْيَهُوْدَ وَالنَّصٰرٰۤى اَوْلِيَآءَ ؕ بَعْضُهُمْ

(५१) हे ईमान वालो ! तुम यहूदियों तथा ईसाईयों को मित्र न बनाओ।[3] यह तो आपस

---

[1]अब क़ुरआन तथा इस्लाम के अतिरिक्त सभी अज्ञान है तथा यह अब भी प्रकाश तथा मार्गदर्शन (इस्लाम) को छोड़ कर अज्ञानता ही की खोज में तथा उसके इच्छुक हैं ? यह प्रश्न इंकार एवं प्रतिकार के लिए है तथा ف लिप्त शब्द की ओर फिरता है तथा अर्थ है।

« يعرضون عن حكمك بما أنزل الله عليك و يتولون عنه، يبتغون حكم الجاهلية »

"तेरे इस निर्णय से जो अल्लाह ने तुझ पर उतारा है, यह इंकार करते हैं तथा पीठ फेरते हैं तथा अज्ञानता के मार्ग की खोज में हैं।" (फ़तहुल क़दीर)

[2]हदीस में आता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

« أَبْغَضُ النَّاسِ إِلَى اللهِ عَزَّ وَجَلَّ ثَلَاثَةٌ: مُبْتَغٍ فِي الإِسْلَامِ سُنَّةَ الْجَاهِلِيَّةِ، وطَالِبُ دَمِ امْرِىءٍ بِغَيرِ حَقٍّ لِيُرِيقَ دَمَهُ ».

"अल्लाह तआला को सबसे अधिक अप्रिय व्यक्ति वह है जो इस्लाम में अज्ञानता की रीति की खोज करे और जो अनर्थ किसी का ख़ून बहाने का प्रयत्न करे।" (सहीह बुख़ारी किताबुल दियात)

[3]इसमें यहूदियों तथा इसाईयों से मित्रता तथा प्रेम सम्बन्ध स्थापित करने से मना किया गया है जो इस्लाम धर्म तथा मुसलमानों के शत्रु हैं और इस पर इतनी बड़ी चेतावनी दी गयी है कि जो उनसे मित्रता रखेगा, वह उन्हीं में से समझा जायेगा। (और देखिए *सूर: आले इमरान* आयत संख्या २८ तथा आयत संख्या ११८ की व्याख्या)

أَوۡلِيَآءُ بَعۡضٍۚ وَمَن يَتَوَلَّهُم مِّنكُمۡ فَإِنَّهُۥ مِنۡهُمۡۗ إِنَّ ٱللَّهَ لَا يَهۡدِي ٱلۡقَوۡمَ ٱلظَّٰلِمِينَ ۝٥١

में ही एक-दूसरे के मित्र हैं ।[1] तुममें से जो कोई भी इनसे मित्रता करे तो वह उनमें से है, अत्याचारियों को अल्लाह तआला कदापि मार्गदर्शन नहीं देता ।[2]

فَتَرَى ٱلَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٞ يُسَٰرِعُونَ فِيهِمۡ يَقُولُونَ نَخۡشَىٰٓ أَن تُصِيبَنَا دَآئِرَةٞۚ فَعَسَى ٱللَّهُ أَن يَأۡتِيَ بِٱلۡفَتۡحِ أَوۡ أَمۡرٖ مِّنۡ عِندِهِۦ فَيُصۡبِحُواْ عَلَىٰ مَآ أَسَرُّواْ

(५२) आप देखेंगे कि जिनके दिलों में रोग है ।[3] वह दौड़-दौड़ कर उनमें घुस रहे हैं तथा कहते हैं कि हमें भय है कि ऐसा न हो कि कोई घटना हम पर घटित हो जाये ।[4] अधिक सम्भव है कि अल्लाह (तआला) विजय प्रदान कर दे[5] अथवा अपने पास से कोई अन्य निर्णय

---

[1]क़ुरआन के इस वर्णित सत्य का प्रत्यक्ष दर्शन प्रत्येक व्यक्ति कर सकता है कि यहूदियों तथा इसाईयों में आपस में निष्ठा के आधार पर अत्यधिक मतभेद तथा आपसी ईर्ष्या तथा द्वेष है । परन्तु इसके उपरान्त भी इस्लाम तथा मुसलमानों के विरुद्ध ये आपस में एक-दूसरे के सहायक, मित्र तथा रक्षक हैं ।

[2]इन आयतों के उतरने की विशेषता में वर्णन किया जाता है कि आदरणीय ओबाद: बिन साबित अन्सारी तथा अवसरवादियों के प्रमुख अब्दुल्लाह बिन उबैय दोनों ही अज्ञानकाल में यहूदियों के मित्र चले आ रहे थे । जब बद्र के युद्ध में मुसलमानों की विजय हुई तो अब्दुल्लाह बिन उबैय ने इस्लाम धर्म का प्रदर्शन किया । इधर बनु केनुकाअ के यहूदियों ने थोड़े दिनों ही पश्चात् उपद्रव उत्पन्न किया और वे धर लिए गये जिस पर आदरणीय ओबाद: ने अपने यहूदी मित्रों से सम्बन्ध तोड़ने की घोषणा कर दी, परन्तु इसके विपरीत अब्दुल्लाह बिन उबैय ने यहूदियों को हर प्रकार से बचाने का प्रयास किया । जिस पर यह आयत उतरी ।

[3]इससे तात्पर्य द्वयवाद (निफ़ाक़) है । अर्थात अवसरवादी यहूदियों से प्रेम तथा मित्रता में शीघ्रता करते हैं ।

[4]अर्थात मुसलमानों की.पराजय हो जाने के कारण हमें भी हानि उठानी पड़े । यहूदियों से मित्रता होगी तो हमें ऐसे अवसर पर काम आयेगी ।

[5] अर्थात मुसलमानों को ।

فِيٓ أَنفُسِهِمۡ نَٰدِمِينَ ﴿٥٢﴾

लाये ।[1] फिर तो यह अपने हृदय मे छिपाई हुई बात पर अत्यधिक लज्जित होंगे ।

وَيَقُولُ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓاْ أَهَٰٓؤُلَآءِ ٱلَّذِينَ أَقۡسَمُواْ بِٱللَّهِ جَهۡدَ أَيۡمَٰنِهِمۡ إِنَّهُمۡ لَمَعَكُمۡۚ حَبِطَتۡ أَعۡمَٰلُهُمۡ فَأَصۡبَحُواْ خَٰسِرِينَ ﴿٥٣﴾

(५३) तथा ईमानवाले कहेंगे कि क्या यही वे लोग हैं जो बड़े विश्वास से अल्लाह की सौगन्ध खा-खा कर कहते हैं कि हम तुम्हारे साथ हैं । उन के कर्म नष्ट हो गये तथा ये असफल हो गये ।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ مَن يَرۡتَدَّ مِنكُمۡ عَن دِينِهِۦ فَسَوۡفَ يَأۡتِي ٱللَّهُ بِقَوۡمٖ يُحِبُّهُمۡ وَيُحِبُّونَهُۥٓ أَذِلَّةٍ عَلَى ٱلۡمُؤۡمِنِينَ أَعِزَّةٍ عَلَى ٱلۡكَٰفِرِينَ يُجَٰهِدُونَ فِي سَبِيلِ ٱللَّهِ وَلَا يَخَافُونَ لَوۡمَةَ لَآئِمٖۚ ذَٰلِكَ فَضۡلُ ٱللَّهِ

(५४) हे ईमानवालो ! तुममें से जो अपने धर्म से पलट जाये ।[2] तो अल्लाह (तआला) बहुत शीघ्र ऐसे समुदाय के लोगों को लायेगा जो अल्लाह के प्रिय होंगे तथा वे भी अल्लाह से प्रेम करते होंगे[3] वह कोमल हृदय होंगें मुसलमानों पर, कठोर तथा निर्दय होंगें काफ़िरों पर, अल्लाह के मार्ग में धर्मयुद्ध करेंगे किसी अपमानित करने वाले व्यक्ति के

---

[1]यहूदियों तथा ईसाईयों पर सुरक्षा कर (जिज़या) लगा दे अथवा इसकी ओर संकेत है कि वनू कुरैज़ा तथा उनके सन्तानों को बन्दी बनाने तथा बनू नदीर को देश निकाला देने आदि की ओर जो निकट भविष्य में घटित हुआ ।

[2]अल्लाह तआला की ओर से भविष्य वाणी है जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के देहान्त के पश्चात घटित हुई । इस उपद्रव को कुचलने का श्रेय आदरणीय अबू बक्र (رضي الله عنه) तथा उनके साथियों को प्राप्त हुआ ।

[3]मुर्तिद (धर्म के किसी नियम पर विश्वास न रखने वाले) के प्रतिकूल जिस समुदाय को अल्लाह तआला खड़ा करेगा, उनके चार गुणों को स्पष्ट करके वर्णन किया जा रहा है । १.अल्लाह से प्रेम करना तथा उसका प्रिय होना, २ईमानवालों के लिए कोमल तथा काफ़िरों के लिए कठोर होना, ३. अल्लाह के मार्ग में धर्मयुद्ध करना, ४अल्लाह के विषय में किसी के अपमानित करने की चिन्ता न करना । सहाबा कराम (رضي الله عنهم) इन गुणों तथा विशेषताओं से सुशोभित थे । अत: अल्लाह तआला ने उन्हें दुनिया तथा आख़िरत के सभी सुखों से पुरस्कृत किया तथा दुनिया में ही अपनी प्रसन्नता का प्रमाण-पत्र उन्हें प्रदान कर दिया ।

يُؤْتِيهِ مَن يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٥٤﴾

अपमान करने की चिन्ता न करेंगें।[1] ये है अल्लाह (तआला) की कृपा जिसे चाहे प्रदान करे । अल्लाह तआला सर्वशक्तिमान है तथा अत्यधिक ज्ञानवाला है।

إِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَالَّذِينَ آمَنُوا الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ رَاكِعُونَ ﴿٥٥﴾

(५५) (मुसलमानों) ! तुम्हारा मित्र स्वयं अल्लाह तथा उसका रसूल है, एवं ईमानवाले हैं,[2] जो नमाजों को स्थापित करते हैं तथा जकात अदा करतें हैं तथा वे रूकूउ (दण्डवत) (श्रद्धायुक्त तथा ध्यानमग्न होकर) करने वाले हैं ।

وَمَن يَتَوَلَّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَالَّذِينَ آمَنُوا فَإِنَّ حِزْبَ اللَّهِ هُمُ الْغَالِبُونَ ﴿٥٦﴾

(५६) तथा जो व्यक्ति अल्लाह (तआला) से तथा उसके रसूल एवं मुसलमानों से मित्रता करे उसे विश्वास करना चाहिए कि अल्लाह (तआला) के भक्त ही प्रभावशाली होंगे।[3]

---

[1]यह ईमानवालों का चौथा गुण है। अर्थात अल्लाह तआला के आदेशों के पालन में किसी व्यक्ति द्वारा अपमानित करने की चिन्ता न करना। यह भी बड़ा विशेष गुण है। समाज में जिन बुराईयों का प्रचलन जनसमूह में सामान्य हो जाये उनके विरुद्ध पुण्य पर स्थिरता एवं अल्लाह तआला के आदेशों का पालन इस गुण के बिना सम्भव नहीं है। वरन् कितने लोग हैं जो बुराई, अल्लाह की अवज्ञाकारिता, तथा समाज में उत्पन्न बुराई से अपने आप को बचाना चाहते हैं, परन्तु बुरा-भला कहने वालों के भय से उनका मुक़ाबिला करने का साहस नहीं कर पाते। परिणाम स्वरूप उन बुराईयों के दलदल से निकल नहीं पाते तथा सत्य तथा असत्य से बचने के शक्ति से वंचित ही रहते हैं। इसीलिए अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि जिनको यह गुण प्राप्त हो जाये उन पर अल्लाह तआला की विशेष कृपा है।

[2]जब यहूदियों तथा ईसाईयों की मित्रता से मना किया गया, तो अब इसका उत्तर दिया जा रहा है कि फिर वह मित्रता किससे करें? कहा कि ईमानवालों का सर्वप्रथम मित्र अल्लाह तआला स्वयं है तथा उसके रसूल हैं तथा फिर उसके अनुयायी ईमानवाले हैं आगे उनके कुछ एक गुण बताये गये हैं।

[3]यह अल्लाह तआला की पार्टी का लक्षण है तथा उसके विजय की सूचना दी जा रही है। अल्लाह तआला के भक्तों का गुट वही है जो मात्र अल्लाह, उसके रसूल तथा ईमानवालों से सम्बन्ध रखे तथा काफिरों, मूर्तिपूजकों, यहूदियों तथा ईसाईयों से मित्रता एवं पक्षपात का सम्बन्ध न रखे चाहे वे उनके सगे सम्बन्धी क्यों न हों। जैसाकि सूरः *मुजादिलः* के अन्त में

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَكُمْ هُزُوًا وَّلَعِبًا مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَالْكُفَّارَ اَوْلِيَآءَ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٥٧﴾

(५७) मुसलमानों ! उन लोगों को मित्र न बनाओ जो तुम्हारे धर्म को हँसी-खेल बनाये हुए हैं, (चाहे) वे उनमें से हों जो तुमसे पूर्व किताब दिये गये अथवा काफ़िर हों।[1] यदि तुम ईमानवाले हो तो अल्लाह से डरते रहो।

وَاِذَا نَادَيْتُمْ اِلَى الصَّلٰوةِ اتَّخَذُوْهَا هُزُوًا وَّلَعِبًا ۭ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُوْنَ ﴿٥٨﴾

(५८) तथा जब तुम नमाज़ के लिए पुकारते हो, तो वह उसे हँसी-खेल ठहरा लेते हैं।[2] यह इसलिए कि यह बुद्धि नही रखते हैं।

फ़रमाया गया है, "तुम अल्लाह तथा अन्त दिवस पर ईमान रखने वालों को ऐसा न पाओगे कि वे ऐसे लोगों से प्रेम रखें जो अल्लाह तथा उसके रसूल के शत्रु हों, चाहे वे उनके पिता हों, तथा उनके पुत्र हों, और उनके भाई हों, अथवा उनके परिवार तथा जाति के लोग हों।" फिर शुभ सूचना दी गयी, कि "ये वे लोग हैं जिनके दिलों में ईमान है तथा जिन्हें अल्लाह की सहायता प्राप्त है, उन्हें ही अल्लाह तआला स्वर्ग में प्रवेश करायेगा ······ तथा, यही अल्लाह के भक्तों का गुट है, सफलता जिनका सौभाग्य है।" (*सूर: मुजादिल:* अन्तिम आयत)

[1]अहले किताब से यहूदी तथा ईसाई एवं काफ़िरों से मूर्तिपूजकों का अर्थ है। यहाँ फिर यही बल दिया गया है कि धर्म को खेल तथा उपहास बनाने वाले चूँकि अल्लाह तथा उसके रसूल के शत्रु हैं, इसलिए उनके साथ ईमानवालों की मित्रता नहीं होनी चाहिए।

[2]हदीस में आता है कि जब शैतान अज़ान की आवाज़ सुनता है तो पादता (अपना वायु त्यागता) हुआ भागता है, जब अज़ान समाप्त हो जाती है तो फिर लौट आता है, तकबीर (नमाज़ खड़े होते समय की इक़ामत) के समय पुन: पीठ फेर कर चल देता है, जब तकबीर समाप्त हो जाती है, तो फिर आकर नमाज़ियों के दिलों में शंकायें उत्पन्न करता है। अल-हदीस-(सहीह बुख़ारी किताबुल अज़ान, सहीह मुस्लिम किताबुस्सलात) शैतान की ही तरह शैतान के अनुयायियों को भी अज़ान का स्वर अच्छा नहीं लगता, इसलिए ये इसका उपहास उड़ाते हैं। इस आयत से यह भी ज्ञात हुआ कि रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस भी क़ुरआन की भाँति धर्म का स्रोत है तथा उसी प्रकार प्रमाण है क्योंकि क़ुरआन ने नमाज़ के लिए "निदा" (आमन्त्रण, घोषणा आदि) का वर्णन तो किया है, परन्तु यह "निदा" (घोषणा) किस प्रकार की जाये ? इसके शब्द क्या होंगे ? यह क़ुरआन करीम में नहीं हैं। यह चीज़ें हदीस से प्रमाणित हैं, जो इसका प्रमाण तथा धर्म के स्रोत होने का प्रमाण हैं।

(५९) आप कह दीजिए, हे यहूदियों तथा इसाईयो ! तुम हमसे केवल इसलिए शत्रुता रखते हो कि हम अल्लाह (तआला) पर और जो कुछ हमारी ओर उतारा गया है तथा जो कुछ इससे पूर्व उतारा गया है उस पर ईमान लाये हैं, और इसलिए भी कि तुममें अधिकतर दुराचारी हैं।

قُلْ يَاَهْلَ الْكِتٰبِ هَلْ تَنْقِمُوْنَ مِنَّآ اِلَّآ اَنْ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْنَا وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلُ ۙ وَاَنَّ اَكْثَرَكُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿۵۹﴾

(६०) कह दीजिए कि क्या मैं तुम्हें बताऊँ? कि इससे भी अधिक बुरे बदले का पाने वाला अल्लाह तआला के निकट कौन है ? वह जिस पर अल्लाह तआला ने धिक्कार की हो तथा उस पर वह क्रोधित हुआ हो एवं उनमें से कुछ को बन्दर तथा सूअर बना दिया तथा जिन्होंने झूठे देवताओं की पूजा की यही लोग बुरे श्रेणी वाले हैं तथा यही सत्यमार्ग से बहुत अधिक भटके हुए हैं ।[1]

قُلْ هَلْ اُنَبِّئُكُمْ بِشَرٍّ مِّنْ ذٰلِكَ مَثُوْبَةً عِنْدَ اللّٰهِ ؕ مَنْ لَّعَنَهُ اللّٰهُ وَغَضِبَ عَلَيْهِ وَجَعَلَ مِنْهُمُ الْقِرَدَةَ وَالْخَنَازِيْرَ وَعَبَدَ الطَّاغُوْتَ ؕ اُولٰٓئِكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّاَضَلُّ عَنْ سَوَآءِ السَّبِيْلِ ﴿۶۰﴾

हुज्जिते हदीस (हदीस के प्रमाण होने का अर्थ) यह है कि जिस प्रकार क़ुरआन के मंत्रों से प्रमाणित आदेशों तथा कर्तव्यों का पालन अनिवार्य है तथा उन का इंकार नास्तिकता है इसी प्रकार ईश्दूत (रसूल) के कथनों से प्रमाणित आदेशों तथा कर्तव्यों का पालन भी आवश्यक है, फिर भी रसूल की हदीस का निरन्तर सिद्ध होना आवश्यक है, सही हदीस अनेक कथाकारों द्वारा हो अथवा एक से, वह कथित हो कर्मिक हो अथवा प्रमाणित सभी कर्म योग्य हैं । हदीस सहीह को एक की सूचना होने के कारण अथवा कथाकार के निर्बोध होने का दावा करके अथवा बुद्धि में न आने का बहाना करके अथवा इसी प्रकार के अन्य कारणों से अस्वीकार करना सही नहीं है यह सब हदीसों के इंकार के विभिन्न रूप हैं जो अनेक सम्प्रदायों ने इसे नकारने तथा अस्वीकार करने के लिये अपना रखे हैं।

[1]अर्थात तुम तो (हे अहले किताब !) (शास्त्रधारियों) हमसे अकारण खिन्न हो जबकि इसके सिवाय हमारा कोई दोष नहीं कि हम अल्लाह तथा पवित्र क़ुरआन पर विश्वास रखते है तथा इसके पूर्व जो धर्मशास्त्र उतारे गये। क्या वह भी कोई दोष अथवा कलंक है अर्थात यह कलंक तथा निन्दा का विषय नहीं जैसाकि तुमने समझ लिया है हम तुम्हें बताते हैं कि बुराई के योग्य तथा कुपथ जो घृणा तथा निन्दा के पात्र हैं, कौन हैं ? वह लोग हैं जिन पर

(६१) तथा जब वे आप के पास आते हैं कि हम ईमान लाये, यद्यपि वह कुफ्र लिये हुए आये थे तथा उसी कुफ्र के साथ गये भी एवं यह जो कुछ छिपा रहे हैं, उसे अल्लाह तआला भली-भाँति जानता है।[1]

وَإِذَا جَاءُوكُمْ قَالُوا آمَنَّا وَقَدْ دَخَلُوا بِالْكُفْرِ وَهُمْ قَدْ خَرَجُوا بِهِ ۚ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا كَانُوا يَكْتُمُونَ ﴿٦١﴾

(६२) तथा आप देखेंगे कि इन में से अधिकतर पाप के कार्यों की ओर, अत्याचार तथा क्रूरता की ओर एवं हराम माल खाने की ओर लपक रहे हैं, जो कुछ यह कर रहे हैं, वह अत्यधिक बुरे कर्म हैं।

وَتَرَىٰ كَثِيرًا مِّنْهُمْ يُسَارِعُونَ فِي الْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَأَكْلِهِمُ السُّحْتَ ۚ لَبِئْسَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٦٢﴾

(६३) उन्हें उनके पुजारी तथा ज्ञानी उनको झूठ बोलने तथा अवैध खाने से क्यों नही रोकते ? निःसन्देह ये बुरे कर्म हैं, जो यह कर रहे हैं।[2]

لَوْلَا يَنْهَاهُمُ الرَّبَّانِيُّونَ وَالْأَحْبَارُ عَن قَوْلِهِمُ الْإِثْمَ وَأَكْلِهِمُ السُّحْتَ ۚ لَبِئْسَ مَا كَانُوا يَصْنَعُونَ ﴿٦٣﴾

अल्लाह की धिक्कार तथा रोष हुआ और कुछ को अल्लाह ने बन्दर और सुअर बना दिया तथा जिन्होंने राक्षस की पूजा की, तथा इस दर्पण में तुम भी अपना मुख तथा कर्म देख लो कि यह किनका इतिहास है तथा कौन लोग हैं, क्या यह तुम ही तो नहीं हो।

[1]यह द्वयवादियों (मुनाफ़िक़ों) का वर्णन है जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में अविश्वास के साथ आते हैं तथा उसी के साथ वापस चले जाते हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के संगत तथा शिक्षा-दीक्षा का कोई प्रभाव उन पर कदाचित नहीं होता क्योंकि दिल में तो ईर्ष्या छिपा होता है। तथा रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थिति का उद्देश्य मार्गदर्शन प्राप्त करना नहीं, बल्कि धोखा, छल, कपट करना होता है। तो फिर इस उपस्थिति का लाभ क्या हो सकता है ?

[2]यह ज्ञानियों धर्मगुरुओं एवं साधु, संतों की निन्दा है कि साधारण लोगों में से अधिकांश तुम्हारे समक्ष अवज्ञा एवं कुकर्म करते हैं परन्तु तुम उन्हें रोकते नहीं ऐसी दशा में तुम्हारा मौन घोर अपराध है, इससे विदित होता है कि सत्कर्मों के प्रचार तथा दुष्कर्मों से रोकने का कितना महत्व है और इसे त्याग देने पर कितनी कड़ी धमकी है, जैसाकि अहादीस (रसूल के कथनों) में इस विषय को सविस्तार एवं स्पष्टरूप से वर्णित किया गया है।

وَقَالَتِ الْيَهُودُ يَدُ اللَّهِ مَغْلُولَةٌ ۚ غُلَّتْ أَيْدِيهِمْ وَلُعِنُوا بِمَا قَالُوا ۘ بَلْ يَدَاهُ مَبْسُوطَتَانِ يُنفِقُ كَيْفَ يَشَاءُ ۚ وَلَيَزِيدَنَّ كَثِيرًا مِّنْهُم مَّا أُنزِلَ إِلَيْكَ مِن رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَكُفْرًا ۚ

(६४) तथा यहूदियों ने कहा कि अल्लाह (तआला) का हाथ बंधा हुआ है।[1] उन्हीं के हाथ बंधे हुए हैं तथा उनके इस कथन के कारण उन पर धिक्कार की गयी। अपितु अल्लाह तआला के दोनों हाथ खुले हुए हैं। जिस प्रकार चाहता है

---

[1]यह वही बात है जो *सूर: आले इमरान* की आयत संख्या १८१ में की गयी है कि जब अल्लाह तआला ने अपने मार्ग में व्यय करने की प्रेरणा दी तथा उसे अल्लाह को अच्छा ऋण देने के समान कहा गया तो इन यहूदियों ने कहा कि "अल्लाह तआला तो भिखारी है।" लोगों से ऋण मांग रहा है तथा वह उस उत्तम भाष्य शैली को न समझ सके जो उसके अन्दर निहित था। अर्थात सभी कुछ अल्लाह का दिया हुआ है। तथा अल्लाह के दिये हुए माल में से कुछ उसके मार्ग में व्यय कर देना, कोई ऋण नहीं है, परन्तु यह उसकी अति कृपा है कि वह उस पर भी अत्यधिक प्रतिफल प्रदान कर रहा है। यहाँ तक कि एक-एक दाने को सात-सात सौ दाने तक बढ़ा देता है। तथा उसको अच्छा ऋण इसलिए कहा गया है कि जितना तुम व्यय करोगे, अल्लाह तआला उससे कई गुना तुम्हें वापस लौटायेगा। مغلولـة का अर्थ بخيلة किया गया है, जिसका अर्थ है कृपण। अर्थात यहूदियों का तात्पर्य यह नहीं था कि वास्तव में अल्लाह के हाथ बंधे हैं, अपितु उनका अर्थ यह था कि उसने अपने हाथ व्यय करने से रोके हुए हैं। (इब्ने कसीर) अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि हाथ तो उन्हीं के बंधे हुए हैं। अर्थात कंजूसी तो उन्हीं का आचरण है। अल्लाह तआला के तो दोनों हाथ खुले हुए हैं, वह जिस प्रकार चाहता है व्यय करता है। वह अत्यधिक कृपालु तथा अत्यधिक प्रदान करने वाला है, सभी कोष उसी के पास हैं। इसके अतिरिक्त अपनी सृष्टि की सभी इच्छाओं तथा आवश्यकताओं का प्रबन्ध कर रखा है। हमें रात अथवा दिन में, यात्रा अथवा निवास में तथा अन्य अवस्थाओं में जिन-जिन चीज़ों की आवश्यकता होती है अथवा हो सकती है, सब वही उपलब्ध कराता है।

﴿وَآتَاكُم مِّن كُلِّ مَا سَأَلْتُمُوهُ ۚ وَإِن تَعُدُّوا نِعْمَتَ اللَّهِ لَا تُحْصُوهَا ۗ إِنَّ الْإِنسَانَ لَظَلُومٌ كَفَّارٌ﴾

"तुमने जो कुछ उससे मांगा, वह उसने तुम्हें दिया, अल्लाह तआला की अनुग्रह इतनी है कि तुम गिन नहीं सकते मनुष्य ही मूर्ख है तथा अत्यधिक कृतघ्न है।" (*सूर: इब्राहीम*-३४)

हदीस में भी है, नवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : अल्लाह का दाहिना हाथ भरा हुआ है, रात-दिन व्यय करता है परन्तु कोई कमी नहीं आती, ज़रा देखो जब से आकाश तथा धरती उसने वनाये हैं वह व्यय कर रहा है परन्तु उसके हाथ के कोष में कमी नहीं आयी ...... (अल-बुख़ारी किताबुल तौहीद, बॉब व काना अर्शुहु अलल मॉऐ मुस्लिम किताबुज्जकात वॉबुल हस्से अलन्नफक:)

وَأَلْقَيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ ۚ كُلَّمَا أَوْقَدُوا نَارًا لِلْحَرْبِ أَطْفَأَهَا اللَّهُ ۚ وَيَسْعَوْنَ فِي الْأَرْضِ فَسَادًا ۚ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِينَ ﴿٦٤﴾

व्यय करता है तथा जो कुछ तेरी ओर तेरे प्रभु की ओर से उतारा जाता है वह उनमें से अधिकतर को अवहेलना तथा कुफ़्र में बढ़ा देता है, तथा हमने उनमें आपस में ही क़ियामत तक के लिए द्वेष तथा ईर्ष्या डाल दिया है, वह जब कभी भी युद्ध की आग को भड़काना चाहते हैं अल्लाह तआला उसको बुझा देता है।[1] यह देश भर में आतंक तथा उपद्रव मचाते फिरते हैं।[2] तथा अल्लाह तआला उपद्रवियों से प्रेम नहीं करता।

وَلَوْ أَنَّ أَهْلَ الْكِتَابِ آمَنُوا وَاتَّقَوْا لَكَفَّرْنَا عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَلَأَدْخَلْنَاهُمْ جَنَّاتِ النَّعِيمِ ﴿٦٥﴾

(६५) तथा यदि यह अहले किताब ईमान लाते तथा अल्लाह से डरते।[3] तो हम उनकी सभी बुराईयाँ मिटा देते तथा उन्हें अवश्य सुखद स्वर्ग में ले जाते।

وَلَوْ أَنَّهُمْ أَقَامُوا التَّوْرَاةَ وَالْإِنْجِيلَ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْهِمْ مِنْ رَبِّهِمْ لَأَكَلُوا مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ

(६६) यदि वह तौरात तथा इंजील तथा उन धर्मशास्त्रों की स्थापना करते जो उनकी ओर उनके पालनहार की ओर से उतारी गई है[4]

---

[1]अर्थात यह जब भी आपके विरुद्ध कोई षडयन्त्र करते हैं अथवा लड़ाई के कारण उत्पन्न करते हैं, तो अल्लाह तआला उनको निष्काम कर देता तथा उनके षडयन्त्र को उन्हीं पर पलटा देता है। उन्हीं का जूता उन्हीं का सिर वाली बात पैदा कर देता।

[2]उनका दूसरा आचरण यह है कि धरती पर उपद्रव फैलाने का भरसक प्रयत्न करते हैं। वास्तविकता यह है कि अल्लाह तआला उपद्रवियों को प्रिय नहीं रखता।

[3]अर्थात वह ईमान जिसकी माँग अल्लाह तआला करता है उनमें सबसे विशेष मोहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत पर ईमान लाना है, जैसाकि उनके ऊपर उतारी गयी किताबों में भी उनको इसका आदेश दिया गया है। तथा अल्लाह से डरो और अल्लाह के क्रोध से बचो, जिनमे में सबसे विशेष शिर्क है जिसमें वे लीन हैं तथा वह इंकार है जो अन्तिम रसूल के साथ वह कर रहे हैं।

[4]तौरात तथा इंजील के पालन करने का अर्थ उनके उन आदेशों का पालन है जो उनमें उन्हें दिये गये हैं तथा उन्हीं में एक आदेश अन्तिम नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान

تَحْتِ اَرْجُلِهِمْ ؕ مِنْهُمْ اُمَّةٌ مُّقْتَصِدَةٌ ؕ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ سَآءَ مَا يَعْمَلُوْنَ ﴿٦٦﴾

तो अपने ऊपर तथा पैरों के नीचे से खाते ।[1] उनमें एक गिरोह संतुलित है तथा अधिकांश दुराचार कर रहे हैं ।[2]

يٰۤاَيُّهَا الرَّسُوْلُ بَلِّغْ مَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ؕ وَاِنْ لَّمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَّغْتَ رِسَالَتَهٗ ؕ وَاللّٰهُ يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٦٧﴾

(६७) हे रसूल ! (सन्देशवाहक) आपकी ओर आपके पोषक के पास से जो (सन्देश) उतारा गया है उसे पहुँचा दें, यदि आप ने यह नहीं किया तो अपने पालनहार का सन्देश नहीं पहुँचाया[3] और अल्लाह लोगों से आप की

लाना भी था । مَا أُنْــزِلَ का अर्थ सभी आसमानी किताबें हैं जिनमें क़ुरआन करीम भी सम्मिलित है । तात्पर्य यह है कि यह इस्लाम धर्म स्वीकार कर लें ।

[1]ऊपर-नीचे का अर्थ प्राचुर्ता के रूप में लिया गया है अथवा ऊपर से का अर्थ अवश्यकतानुसार आकाश से तथा नीचे से का अर्थ धरती से है जिसका परिणाम खाद्य पदार्थ की अधिकता है । जिस प्रकार से एक अन्य स्थान पर फ़रमाया :

﴿وَلَوْ أَنَّ أَهْلَ الْقُرَىٰٓ ءَامَنُوا۟ وَاتَّقَوْا۟ لَفَتَحْنَا عَلَيْهِم بَرَكَٰتٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْأَرْضِ﴾

"यदि बस्ती वाले ईमान लाये होते और उन्होंने अल्लाह का भय रखा होता तो हम उन पर 'आकाश तथा धरती की विभूतियों के (द्वार) खोल देते ।" (सूर: *अल-आराफ़*-९६)

[2]परन्तु उनके बहुमत ने ईमान का यह मार्ग नही अपनाया तथा वह अपने कुफ़्र पर अड़े रहे एवं मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत (दूत्तव) के इंकार पर दृढ़ रहे । इसी मार्ग तथा इंकार को यहाँ दुराचार कहा गया है । मध्यम नीति को अपनाने वाले एक गुट से तात्पर्य यहाँ अब्दुल्लाह बिन सलाम जैसे आठ अथवा नौ अन्य व्यक्ति हैं जो मदीने के यहूदियों में से मुसलमान हुए ।

[3]इस आदेश का यह लाभ है कि जो भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर उतारा गया है उसे बिना किसी भय तथा विलम्ब के आप लोगों तक इसे पहुँचा दें । अत: आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ऐसा ही किया । आदरणीया आयशा (رضي الله عنها) फ़रमाती हैं कि "जो व्यक्ति यह शंका करे कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुछ छिपा लिया, उसने अवश्य झूठ कहा ।" सहीह बुख़ारी ४८५५) तथा आदरणीय अली (رضي الله عنه) से भी पूछा गया कि तुम्हारे पास क़ुरआन के अतिरिक्त प्रकाशना (वह्यी) के द्वारा उतारी गयी कोई बात है ? तो उन्होंने सौगन्ध खाकर नकारात्मक उत्तर दिया तथा कहा .(إلاَّ فَهْمًا يُعْطِيْهِ اللهُ رَجُلًا) (अपितु क़ुरआन की समझ है जिसे चाहे अल्लाह तआला प्रदान कर दे) (सहीह बुख़ारी ६९०३) हज्जतुल विदाआ के अवसर पर आप

रक्षा करेगा ।[1] निःसंदेह अल्लाह विश्वासहीनों को मार्गदर्शन नहीं देता।

(६८) आप कह दें कि हे अहले किताब ! तुम्हारा कोई आधार नहीं जब तक कि तौरात तथा इंजील एवं जो भी (धर्मशास्त्र) तुम्हारे पालक की ओर से तुम्हारे पास उतारा गया है उसकी स्थापना (पालन) न करो तथा जो आपकी ओर (पवित्र क़ुरआन) आप के पोषक की

قُلْ يَاَهْلَ الْكِتٰبِ لَسْتُمْ عَلٰى شَيْءٍ حَتّٰى تُقِيْمُوا التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۭ وَلَيَزِيْدَنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ مَّآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ۚ

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक लाख अथवा एक लाख चालीस हज़ार के जन समूह के समक्ष पूछा, "तुम मेरे विषय में क्या कहोगे ?" उन्होंने उत्तर दिया।

(نَشْهَدُ أَنَّكَ قَدْ بَلَّغْتَ، وَأَدَّيْتَ، وَنَصَحْتَ).

"हम गवाही देंगे कि आपने अल्लाह तआला का संदेश पहुँचा दिया तथा दायित्व अदा कर दिया एवं भलाई कर दी।"

"आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आकाश की ओर उंगली उठाकर संकेत करते हुए फ़रमाया (तीन बार) اللهم هل بلّغت अथवा اللهم فاشهد (तीन बार) (सहीह मुस्लिम किताबुल हज बाब हज्जतुन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अर्थात हे अल्लाह ! मैंने तेरा संदेश पहुँचा दिया तू गवाह रह, तू गवाह रह, तू गवाह रह।"

[1]यह रक्षा अल्लाह तआला ने चमत्कारिक रूप से भी की, तथा सांसारिक साधनों से भी। सांसारिक साधनों में इस आयत के उतरने से बहुत पूर्व अल्लाह तआला ने सर्वप्रथम आप के चाचा अबू तालिब के दिल में आपका स्वभाविक प्रेम डाल दिया तथा वह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रक्षा करते रहे। उनका कुफ़्र पर बना रहना भी इन कारणों का एक भाग प्रतीत होता है। क्योंकि यदि वह मुसलमान हो जाते तो शायद क़ुरैश के सरदारों के दिलों में उनका वह भय न रहता, जो उनके धर्म के अनुयायी होने के कारण उनके अन्तिम समय तक बना रहा। फिर उनके देहान्त के उपरान्त कुछ अन्य क़ुरैशी सरदारों द्वारा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रक्षा की, उसके पश्चात मदीने के अंसारों द्वारा आप की रक्षा की । फिर जब यह आयत उतरी तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सुरक्षा के प्रत्यक्ष प्रबन्धों को हटा दिया। उसके पश्चात अनेक बड़े ख़तरे पेश आये, परन्तु अल्लाह तआला ने रक्षा की। अतः वह्यी (प्रकाशना) के द्वारा अल्लाह तआला ने समय-समय पर यहूदियों के छल-षडयन्त्र से सूचित करके एक भयानक ख़तरे की घटना से बचा लिया तथा घमासान युद्ध के समय काफ़िरों के ख़तरनाक आक्रमणों से भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सुरक्षित रखा।

रक्षा करेगा ।[1] नि:संदेह अल्लाह विश्वासहीनों को मार्गदर्शन नहीं देता ।

(६८) आप कह दें कि हे अहले किताब ! तुम्हारा कोई आधार नहीं जब तक कि तौरात तथा इंजील एवं जो भी (धर्मशास्त्र) तुम्हारे पालक की ओर से तुम्हारे पास उतारा गया है उसकी स्थापना (पालन) न करो तथा जो आपकी ओर (पवित्र क़ुरआन) आप के पोषक की

قُلْ يَٰٓأَهْلَ ٱلْكِتَٰبِ لَسْتُمْ عَلَىٰ شَىْءٍ حَتَّىٰ تُقِيمُوا۟ ٱلتَّوْرَىٰةَ وَٱلْإِنجِيلَ وَمَآ أُنزِلَ إِلَيْكُم مِّن رَّبِّكُمْ ۗ وَلَيَزِيدَنَّ كَثِيرًا مِّنْهُم مَّآ أُنزِلَ إِلَيْكَ مِن رَّبِّكَ طُغْيَٰنًا وَكُفْرًا ۖ

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक लाख अथवा एक लाख चालीस हज़ार के जन समूह के समक्ष पूछा, "तुम मेंरे विषय में क्या कहोगे ?" उन्होंने उत्तर दिया ।

(نَشْهَدُ أَنَّكَ قَدْ بَلَّغْتَ، وَأَدَّيْتَ، وَنَصَحْتَ).

"हम गवाही देंगे कि आपने अल्लाह तआला का संदेश पहुँचा दिया तथा दायित्व अदा कर दिया एवं भलाई कर दी ।"

"आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आकाश की ओर उंगली उठाकर संकेत करते हुए फ़रमाया (तीन बार) اللهم هل بلغت अथवा اللهم فاشهد (तीन बार) (सहीह मुस्लिम किताबुल हज बाब हज्जतुन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अर्थात हे अल्लाह ! मैंने तेरा संदेश पहुँचा दिया तू गवाह रह, तू गवाह रह, तू गवाह रह ।"

[1]यह रक्षा अल्लाह तआला ने चमत्कारिक रूप से भी की, तथा सांसारिक साधनों से भी । सांसारिक साधनों में इस आयत के उतरने से बहुत पूर्व अल्लाह तआला ने सर्वप्रथम आप के चाचा अबू तालिब के दिल में आपका स्वभाविक प्रेम डाल दिया तथा वह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रक्षा करते रहे । उनका कुफ़्र पर बना रहना भी इन कारणों का एक भाग प्रतीत होता है । क्योंकि यदि वह मुसलमान हो जाते तो शायद क़ुरैश के सरदारों के दिलों में उनका वह भय न रहता, जो उनके धर्म के अनुयायी होने के कारण उनके अन्तिम समय तक बना रहा । फिर उनके देहान्त के उपरान्त कुछ अन्य क़ुरैशी सरदारों द्वारा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रक्षा की, उसके पश्चात मदीने के अंसारों द्वारा आप की रक्षा की । फिर जब यह आयत उतरी तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सुरक्षा के प्रत्यक्ष प्रबन्धों को हटा दिया । उसके पश्चात अनेक बड़े ख़तरे पेश आये, परन्तु अल्लाह तआला ने रक्षा की । अत: वह्यी (प्रकाशना) के द्वारा अल्लाह तआला ने समय-समय पर यहूदियों के छल-षडयन्त्र से सूचित करके एक भयानक ख़तरे की घटना से बचा लिया तथा घमासान युद्ध के समय काफ़िरों के ख़तरनाक आक्रमणों से भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सुरक्षित रखा ।

فَلَا تَأْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٦٨﴾

ओर से उतारा गया है वह इनमें से अधिकतर की हठ तथा कुफ़्र को बढ़ायेगा [1] अत: आप अविश्वासियों पर खेद न करें।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَادُوْا وَالصّٰبِـُٔوْنَ وَالنَّصٰرٰى مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٦٩﴾

(६९) मुसलमानों, यहूदियों, तारों के पुजारियों एवं ईसाईयों में से जो भी अल्लाह तथा अन्त दिवस (प्रलय) के प्रति विश्वास करेगा तथा सदाचार करेगा उन्हीं पर कोई भय नहीं न वह शोक करेंगे।[2]

لَقَدْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ وَاَرْسَلْنَآ اِلَيْهِمْ رُسُلًا ؕ كُلَّمَا جَآءَهُمْ رَسُوْلٌۢ بِمَا لَا تَهْوٰٓى اَنْفُسُهُمْ ۙ فَرِيْقًا كَذَّبُوْا

(७०) हमने इस्राईल के पुत्रों (यहूदियों) से वचन लिया तथा उनके पास रसूलों को भेजा। जब कोई रसूल उनके पास ऐसा आदेश लाया जो उनका मन स्वीकार न करता था तो

---

[1]यह मार्गदर्शन तथा भटकाव उस नियमानुसार है जो अल्लाह तआला की विधि है। अर्थात जिस प्रकार कुछ कर्मों, तथा चीजों के कारण से ईमान, सत्कर्म तथा लाभकारी ज्ञान में बढ़ोत्तरी होती है। उसी प्रकार इंकार तथा अवज्ञा के कारण कुफ़्र में भी बढ़ोत्तरी होती है। इस विषय की चर्चा अल्लाह तआला ने क़ुरआन में विभिन्न स्थानों पर की है। जैसे :

﴿ قُلْ هُوَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هُدًى وَّشِفَآءٌ ؕ وَالَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ فِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرٌ وَّهُوَ عَلَيْهِمْ عَمًى ؕ اُولٰٓئِكَ يُنَادَوْنَ مِنْ مَّكَانٍۢ بَعِيْدٍ ﴾

"कह दीजिए! यह क़ुरआन ईमान वालों के लिए मार्गदर्शन तथा रोग निवारक है तथा जोलोग ईमान नहीं लाते उनके कान बहरे हैं और यह उनके पक्ष में अंधापन है। बहरेपन के कारण उनको जैसे दूर स्थान से आवाज़ दी जाती हो।" (*सूर: हा मीम अल-सजद:-४४*)

﴿ وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۙ وَلَا يَزِيْدُ الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا خَسَارًا ﴾

"और हम क़ुरआन के द्वारा वह चीज उतारते हैं जो ईमानवालों के लिए स्वास्थ्य तथा कृपा है तथा अत्याचारी के लिए तो इससे हानि ही होती है।" (*सूर: बनी इस्राईल-८२*)

[2]यह वही विषय है जो *सूर: अल-बक़र:* की आयत संख्या ६२ में वर्णित हो चुका है, उसे देख लिया जाये।

وَفَرِيقًا يَقْتُلُونَ ﴿٧٠﴾

उन्होंने एक गुट को झुठलाया तथा एक गुट की हत्या करते रहे।

وَحَسِبُوٓا أَلَّا تَكُونَ فِتْنَةٌ فَعَمُوا وَصَمُّوا ثُمَّ تَابَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ ثُمَّ عَمُوا وَصَمُّوا كَثِيرٌ مِّنْهُمْ ۚ وَاللَّهُ بَصِيرٌۢ بِمَا يَعْمَلُونَ ﴿٧١﴾

(७१) तथा समझ बैठे कि कोई दण्ड न मिलेगा, इसलिये अंधे-बहरे हो गये। फिर अल्लाह (तआला) ने उनको क्षमा कर दिया उसके उपरान्त भी उनमें से अधिकतर लोग अंधे-बहरे हो गये।[1] और अल्लाह (तआला) उनके कर्मों को भली-भाँति देखने वाला है।

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوٓا إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ ۖ وَقَالَ الْمَسِيحُ يَـٰبَنِىٓ إِسْرَٰٓءِيلَ اعْبُدُوا اللَّهَ رَبِّى وَرَبَّكُمْ ۖ إِنَّهُۥ مَن يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ حَرَّمَ

(७२) वह लोग काफ़िर हो गये जिन्होंने कहा कि मरियम का पुत्र मसीह ही अल्लाह है[2] जबकि मसीह ने (स्वयं) कहा कि हे इस्राईल के पुत्रो ! मेरे पोषक तथा अपने पोषक अल्लाह की पूजा करो [3] क्योंकि जो अल्लाह के साथ

---

[1]अथार्त समझते थे कि कोई दण्ड नहीं मिलेगा। परन्तु अल्लाह द्वारा वर्णित नियमों के आधार पर दण्ड निर्धारित हुआ कि यह सत्य को देखने से नेत्रहीन हो गये तथा सत्य को सुनने से वधिर हो गये तथा क्षमा माँग लेने के उपरान्त भी यही कर्म उन्होंने दोहराया है, तो इस का वही दण्ड भी पुन: दिया गया।

[2]यही विषय आयत संख्या १७ में आ चुका है यहाँ अहले किताब के कुपथा की चर्चा पुन: की जा रही है। इसमें उनके उस गुट की धर्म भ्रष्टता का वर्णन है जो आदरणीय मसीह के स्वयं अल्लाह होने पर विश्वास करता है।

[3]अर्थात आदरणीय ईसा अर्थात मसीह पुत्र मरियम ने माँ की गोद में (अल्लाह के आदेश से जबकि बच्चे उस अवस्था में बोलने की शक्ति नही रखते) सर्वप्रथम अपने मुख से अपने को भक्त ही कहा तथा कहा।

﴿ إِنِّى عَبْدُ اللَّهِ ءَاتَىٰنِىَ الْكِتَـٰبَ وَجَعَلَنِى نَبِيًّا ﴾

"मैं अल्लाह का भक्त हूँ तथा उसका रसूल हूँ, मुझे उसने किताब भी प्रदान की है।" (*सूर: मरियम-३०*)

आदरणीय मसीह नें यह नहीं कहा कि मैं अल्लाह अथवा अल्लाह का पुत्र हूँ केवल यह कहा कि मैं, अल्लाह का दास हूँ। तथा व्यस्क अवस्था में भी उन्होंने यही आमन्त्रण दिया।

﴿ إِنَّ اللَّهَ رَبِّى وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوهُ ۚ هَـٰذَا صِرَٰطٌ مُّسْتَقِيمٌ ﴾

اللّٰهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَمَأْوٰىهُ النَّارُ ۖ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ﴿٧٢﴾

मिश्रण (शिर्क) करेगा अल्लाह ने उस पर स्वर्ग निषेध कर दी है तथा उसका ठिकाना नरक है एवं अत्याचारियों (मिश्रणवादियों) का कोई सहायक न होगा।[1]

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ ثَالِثُ ثَلٰثَةٍ ۘ وَمَا مِنْ اِلٰهٍ اِلَّآ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۭ وَاِنْ

(७३) वह लोग भी पूर्ण रूप से काफ़िर हो गये जिन्होंने कहा कि अल्लाह तीन का तीसरा है।[2] वास्तव में अल्लाह (तआला) के अतिरिक्त कोई

"नि:संदेह मेरा और तुम्हारा प्रभु अल्लाह है, उसी की उपासना करो, यही सीधा मार्ग है।" (*सूर: आले इमरान*-५१)

यह वही शब्द हैं जो माँ की गोद में कहे थे (देखिये *सूर: मरियम*-३६) तथा जब क़ियामत के निकट वह आकाश से उतरेंगे, जिसकी सूचना सहीह हदीस में दी गयी है तथा जिस पर अहले सुन्नत का विश्वास है, तब भी वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शिक्षाओं के अनुसार लोगों को अल्लाह की तौहीद (ऐकश्वरवाद) तथा उसकी भक्ति की ओर बुलायेंगें, न कि अपनी उपासना की ओर।

[1]आदरणीय मसीह ने अपनी भक्ति तथा रिसालत का प्रदर्शन उस समय भी किया था जब वह माँ की गोद में स्तनपान की आयु में थे। पुन: व्यस्क अवस्था में भी यही घोषणा की तथा साथ ही साथ शिर्क की पहचान तथा बचावो की विधि एवं बुराईयाँ भी वर्णित कर दीं कि मूर्तिपूजक पर स्वर्ग निषेध है तथा उसका कोई सहायक भी न होगा, जो उसे नरक से निकाल लाये, जैसाकि मिश्रणवादियों का भ्रम है।

[2]यह ईसाईयों के दूसरे गुट का वर्णन है, जो तीन के योग को ईश्वर मानता है तथा उसे त्रिमूर्ति कहता है। यद्यपि इसकी व्याख्या तथा वर्णन में उनके मध्य स्वयं मतभेद हैं। परन्तु उचित बात यह है कि उन्होंने आदरणीय ईसा तथा उनकी माता आदरणीया मरियम को भी पूज्य बना लिया है। जैसा कि क़ुरआन ने उसका विस्तार पूर्वक वर्णन किया है अल्लाह तआला प्रलय के दिन आदरणीय ईसा से प्रश्न करेगा।

﴿ ءَاَنْتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُوْنِيْ وَاُمِّيَ اِلٰهَيْنِ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ﴾

"क्या तूने लोगों से कहा था कि मुझे तथा मेरी माता को अल्लाह के अतिरिक्त (पूज्य) बना लेना ?" (*सूर: अल-मायद:*-११६)

इससे ज्ञात हुआ कि ईसा तथा मरियम, इन दोनों को ईसाईयों ने पूज्य बनाया, तथा अल्लाह तीसरा पूज्य हुआ, जो त्रिमूर्ति में तीसरा (तीन में का तीसरा) कहलाया। पहले विश्वास की तरह अल्लाह तआला ने इसे भी अधर्म कहा है।

لَمْ يَنْتَهُوْا عَمَّا يَقُوْلُوْنَ لَيَمَسَّنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٧٣﴾

पूज्य नहीं तथा यदि यह लोग अपने कथन से न रुके तो उनमें से जो कुफ्र में रहेंगे उन्हें कठोर यातनायें अवश्य पहुँचेंगी।

اَفَلَا يَتُوْبُوْنَ اِلَى اللّٰهِ وَيَسْتَغْفِرُوْنَهٗ ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٧٤﴾

(७४) यह लोग अल्लाह (तआला) की ओर क्यों नहीं झुकते तथा क्यों नहीं क्षमा-याचना करते ? अल्लाह (तआला) अत्यधिक क्षमाशील तथा अत्यधिक कृपालु है।

مَا الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ۭ وَاُمُّهٗ صِدِّيْقَةٌ ۭ كَانَا يَاْكُلٰنِ الطَّعَامَ ۭ اُنْظُرْ كَيْفَ نُبَيِّنُ لَهُمُ الْاٰيٰتِ ثُمَّ انْظُرْ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿٧٥﴾

(७५) मरियम के पुत्र मसीह मात्र पैग़म्बर होने के अतिरिक्त कुछ भी नहीं। उससे पूर्व भी बहुत से पैग़म्बर हो चुके हैं। उसकी माता एक पवित्र एवं सत्यवती स्त्री थीं।[1] दोनो (माता-पुत्र) भोजन किया करते थे।[2] आप देखिये हम किस प्रकार तर्क उनके समक्ष प्रस्तुत करते हैं, फिर विचार कीजिए कि वे किस प्रकार पलटाये जाते हैं।

---

[1] صِدِّيْقَة का अर्थ है विश्वासी तथा पवित्र अर्थात उन्होंने भी आदरणीय ईसा के दूतत्व को माना तथा उस पर विश्वास किया। इसका अर्थ यह हुआ कि वह ईशदूत नहीं थीं जैसा कि कुछ लोगों को भ्रम हुआ है। तथा उन्होंने आदरणीया मरियम सहित आदरणीया सारह (इसहाक़ की माँ) तथा आदरणीया मूसा की माँ को ईशदूता बना दिया है। जिसका तर्क यह देते हैं कि प्रथम वर्णित दो स्त्रियों से स्वर्ग दूत ने बात की तथा आदरणीय मूसा की माता को स्वयं अल्लाह तआला ने वह्यी किया। यह बात करनी तथा उपदेश देना दूतत्व का तर्क है। परन्तु अधिकतर विद्वानों के विचार से यह प्रमाण ऐसा नहीं जो क़ुरआन के स्पष्ट कथन की तुलना कर सके जो क़ुरआन ने स्पष्ट रूप से वर्णन किया है कि हमने जितने रसूल भी भेजे वह पुरुष थे। (*सूर: यूसुफ़-१०९*)

[2]इसमें आदरणीय मसीह तथा आदरणीया मरियम दोनों के पूज्य न होने तथा मनुष्य होने को प्रमाणित किया है। क्योंकि भोजन करना, यह मनुष्य की आवश्यकता तथा इच्छाओं के अनुरूप है। जो ईश हो, वह तो इन गुणों से तो रहित है, बल्कि हर प्रकार से रहित होता है। अर्थात दोनों साधारण मनुष्य थे तथा उनमें सभी मानवीय विशेषतायें पाई जाती थीं।

(७६) आप कह दीजिए कि क्या तुम अल्लाह के अतिरिक्त उनको पूजते हो जो न तो तुम्हारी हानि के मालिक हैं तथा न किसी प्रकार के लाभ के, अल्लाह (तआला) ही भली-भाँति जानने वाला तथा पूर्णरूप से जानने वाला है ।[1]

قُلْ اَتَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا ؕ وَاللّٰهُ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝

(७७) कह दीजिए, हे अहले किताब ! अपने धर्म में अनर्थ अतिश्योक्ति न करो ।[2] तथा उन लोगों की इन्द्रीय इच्छाओं का अनुकरण न करो, जो पहले से भटक चुके है[3] तथा बहुतों को भटका चुके हैं । तथा सीधे मार्ग से हट गये हैं ।

قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لَا تَغْلُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ غَيْرَ الْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعُوْۤا اَهْوَآءَ قَوْمٍ قَدْ ضَلُّوْا مِنْ قَبْلُ وَاَضَلُّوْا كَثِيْرًا وَّضَلُّوْا عَنْ سَوَآءِ السَّبِيْلِ ۝

(७८) इस्राईल की सन्तान के काफ़िरों को (आदरणीय) दाऊद तथा (आदरणीय) ईसा पुत्र मरियम के मुख से धिक्कारा गया ।[4] इस

لُعِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْۢ بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ عَلٰى لِسَانِ دَاوٗدَ وَعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ ؕ

---

[1]यह मूर्तिपूजकों की कुबुद्धि का स्पष्टीकरण किया जा रहा है कि उन्होंने ऐसों को पूज्य वना रखा है जो किसी को न लाभ पहुँचा सकते हैं तथा न हानि, वरन् लाभ-हानि तो दूर की बात, वह तो किसी बात को सुनने तथा किसी की दशा को जानने की ही शक्ति नहीं रखते हैं । यह शक्ति केवल अल्लाह ही की है । इसलिए कामद तथा संकट हरि मात्र वही है ।

[2]अर्थात सत्य का अनुसरण करने में सीमा उल्लंघन न करो तथा जिनके आदर करने का आदेश दिया गया है, उसमें अतिश्योक्ति करके नबूवत के पद से उठा कर पूज्य के स्थान पर आसीन न कर दो, जैसे कि आदरणीय मसीह के पक्ष में तुमने किया । अतिश्योक्ति प्रत्येक समय में शिर्क तथा भटकाव का साधन रही है । मुसलमान भी इस अतिश्योकित से सुरक्षित नहीं रह सके । उन्होंने कुछ धर्मविदों के विषय में अतिश्योक्ति किया तथा उनके विचार, कथन यहाँ तक कि उनसे सम्बन्धित धार्मिक निर्णय तथा विचारों को भी रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस की अपेक्षा प्राथमिकता दी ।

[3]अर्थात अपने से पूर्व के लोगों के पीछे न लगो, जो एक नबी को पूज्य बनाकर स्वयं कुपथ हुए हैं तथा दूसरों को भी कुपथ बनाया है ।

[4]अर्थात जबूर में जो आदरणीय दाऊद पर तथा इंजील में जो आदरणीय ईसा पर उतरी तथा अव यही धिक्कार क़ुरआन करीम के द्वारा उन पर की जा रही है, जो परम आदरणीय मोहम्मद रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर उतरा है । धिक्कार का अर्थ है अल्लाह की कृपा तथा अनुग्रह से दूरी ।

ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ﴿٧٨﴾

कारण कि वे अनुज्ञा करते थे तथा सीमा का उल्लंघन करते थे।[1]

كَانُوْا لَا يَتَنَاهَوْنَ عَنْ مُّنْكَرٍ فَعَلُوْهُ ۭ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿٧٩﴾

(७९) वे आपस में एक-दूसरे को बुरे कामों से जो वह करते थे रोकते न थे।[2] जो कुछ यह करते थे अवश्य वह बहुत बुरा था।

تَرٰى كَثِيْرًا مِّنْهُمْ يَتَوَلَّوْنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۭ لَبِئْسَ مَا قَدَّمَتْ لَهُمْ اَنْفُسُهُمْ اَنْ سَخِطَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَفِي الْعَذَابِ هُمْ خٰلِدُوْنَ ﴿٨٠﴾

(८०) उनमें के अधिकतर लोगों को आप देखेंगें कि वे काफिरों से मित्रता करते हैं। जो कुछ उन्होंने अपने आगे भेज रखा है वह बहुत बुरा है, (यह) कि अल्लाह (तआला) उनसे अप्रसन्न हुआ तथा वे सदैव यातना में रहेंगे।[3]

---

[1]यह धिक्कार के कारण हैं १. अवज्ञाकारिता, अर्थात कर्तव्य का त्याग तथा निषेध कर्मों का करना। उन्होंने अल्लाह की अवज्ञा की। २. अतिक्रम, अर्थात धर्म में अतिशय नवीन रीतियाँ बनाकर उन्होंने उल्लंघन किया।

[2]इस पर अधिक यह कि वह एक-दूसरे को बुराई से नहीं रोकते थे, जो स्वयं एक बहुत बड़ा अपराध है। कुछ व्याख्याकारों ने इसी निषेध त्याग को अवज्ञता तथा अतिक्रम माना है, जो धिक्कार का कारण बना। अन्ततः दोनों अवस्थाओं में बुराई को देखते हुए बुराई से न रोकना, बहुत बड़ा अपराध तथा धिक्कार एवं अल्लाह के क्रोध का कारण है। हदीस में भी इस अपराध पर अत्यधिक घोर चेतावनियाँ आई हैं। एक हदीस में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, "सर्वप्रथम कमी जो इस्राईल की सन्तान में आयी वह यह थी कि एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को बुराई करते हुए देखता तो कहता कि अल्लाह से डरो तथा यह बुराई छोड़ दो, यह तेरे लिए उचित नहीं। परन्तु दूसरे दिन फिर उसके साथ उसे खान-पान तथा उठने-बैठने में कोई संकोच अथवा लज्जा का आभास न होता (अर्थात उसके साथ एक प्राण दो शरीर तथा मित्र बन जाता) जबकि ईमान की अभियाचना यह थी कि उससे घृणा तथा सम्बन्ध विच्छेद करता जिसके कारण अल्लाह ने उनके मध्य आपस में कटुता डाल दी तथा वह अल्लाह के धिक्कार के पात्र हुए।" पुनः फ़रमाया कि, "अल्लाह की सौगन्ध तुम अवश्य लोगों को पुण्य करने का आदेश दिया करो तथा बुराई से रोका करो, अत्याचारी का हाथ पकड़ लिया करो (वरन् तुम्हारी भी यही दशा होगी)" "अल-हदीस" (अबू दाऊद किताबुल मलाहिम संख्या ४३३६) एक दूसरे कथन में इस कर्तव्य के त्याग पर यह चेतावनी दी गयी है कि तुम अल्लाह की यातनाओं के योग्य बन जाओगे, तुम अल्लाह से प्रार्थना भी करोगे तो स्वीकार न होगी। (मुसनद अहमद भाग ५ पृ॰३८८)

[3]यह काफिरों से मित्रता का परिणाम है कि अल्लाह तआला उन पर क्रोधित हुआ तथा इसी क्रोध के कारण स्थाई रूप से नरक की यातना है।

وَلَوْ كَانُوْا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالنَّبِيِّ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مَا اتَّخَذُوْهُمْ اَوْلِيَآءَ وَلٰكِنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٨١﴾

(८१) यदि उन्हें अल्लाह (तआला) पर, नबी पर, तथा जो उतारा गया है उस पर ईमान होता तो यह काफ़िरों से मित्रता न करते, परन्तु उनमें से अधिकतर लोग दुराचारी (ग़लतकार) हैं ।[1]

لَتَجِدَنَّ اَشَدَّ النَّاسِ عَدَاوَةً لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا الْيَهُوْدَ وَالَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا ۚ وَلَتَجِدَنَّ اَقْرَبَهُمْ مَّوَدَّةً لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّا نَصٰرٰى ۭ ذٰلِكَ بِاَنَّ مِنْهُمْ قِسِّيْسِيْنَ وَرُهْبَانًا وَّاَنَّهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٨٢﴾

(८२) नि:सन्देह आप ईमानवालों का कटु शत्रु यहूदियों तथा मूर्तिपूजकों को पायेंगे ।[2] तथा ईमानवालों के सबसे अधिक निकटता की मित्रता आप अवश्य उनमें पायेंगें जो अपने आप का को ईसाई कहते हैं, यह इसलिए कि उनमें विद्वान तथा बैरागी हैं तथा इस कारण कि वे घमण्ड नहीं करते ।[3]

---

[1]इसका अर्थ यह है कि जिस व्यक्ति के अन्दर सत्य रूप में विश्वास होगा वह धर्मभ्रष्टों से कभी मित्रता नहीं करेगा ।

[2]इसलिए कि यहूदियों में शत्रुता तथा इंकार, सत्य से विमुखता तथा अहंकार, तथा ज्ञानियों एवं ईमानवालों की आलोचना की भावना बहुत पायी जाती है । यही कारण है कि नबियों की हत्या तथा उनको झुठलाना उनका आचरण रहा है । यहाँ तक कि उन्होंने रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हत्या के कई बार षड्यन्त्र रचे । आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर जादू भी किया हर प्रकार से हानि पहुँचाने की घृणित योजना बनाई तथा इस सम्बन्ध में मूर्तिपूजकों की भी यही दशा रही है ।

[3] رُهبان से तात्पर्य पुनीत उपासक एवं बैरागी तथा قسّيسين से तात्पर्य ज्ञानी तथा वक्ता है अर्थात इन ईसाईयों में ज्ञान एवं नम्रता है इसलिये उनमें यहूदियों की भांति इंकार तथा अहंकार नहीं । इसके अतिरिक्त ईसाई धर्म में क्षमा की शिक्षा की प्रधानता है । यहाँ तक की उनके ग्रन्थों में लिखा है कि कोई तुम्हारे दायें गाल पर मारे तो बायाँ गाल उसके सामने कर दो इन कारणों से यह यहूदियों की अपेक्षा मुसलमानों से निकट हैं । ईसाईयों के यह आचरण यहूदियों के सापेक्ष हैं फिर भी जहाँ तक इस्लाम से शत्रुता का सम्बन्ध है कुछ अन्तर के साथ ईसाईयों में भी विद्यमान है । जैसाकि ईसाईयों तथा मुसलमानों के बीच सदियों से जारी युद्ध से स्पष्ट है तथा जो वर्तमान में भी जारी है और अब तो इस्लाम के विरोध में दोनों मिलकर कार्यरत हैं इसलिये इस्लाम ने दोनों की मित्रता से मना किया है ।